आँधै नैं आँख्या

आँधै आँख्यां

अन्नाराम 'सुदामा'

धरती प्रकाशन

प्रकाशक धरती प्रकाशन उदयरामसर (बीकानेर)

मूल्य 8.00

पृष्ठ संख्या १२२+१४=१३६

संस्करण १९७१

मुद्रक एजूकेशनल प्रेस, बीकानेर

AANDHE NE AANKHYAN—(Short Stories collection in Rajasthani) by Anna Ram Sudama Price Rs 8.00

घणे कोडस्यूं

श्रद्धेय गुरुवर

गोवर्द्धन सिंह जी यादव नैं

सादर

थोडी म्हारी ही

पाँच कहाण्यां है पोथी मे। गिणती री दिस्टी सूँ कम कोई खासी कम है, गुणदोस री दिस्टी सूँ पाठक मर पारखी सोचसी।

पली, ढळै डूँगर फळै चट्टान—ई म आडम्बर मर आस्था री लडाई है, वा कीं लम्बी हुवै तो इत्ती अखरणी नहीं चाहीज। आदमी अपरा आप नैं है जिक सूँ आदा दिखावण म लाग्योडो है—मूळ सूँ सिरक र, खाली स्टण्डर्ड कायम राखण खातर। घर में बूढी माँ है लुगाई टाबर सै, पण बै किया जीवै, वाँ री आँता री काई माँग है—कुण सुण कुण देख बाँ खानी आँधो हुयोडो भाजै बारै मोटो बणन खातर। बस, ई रै इद गिद गाय रो सायरो ले र कथा रो घणखरो प्रवाह है पण समस्या खाली गाय री को है नी—समस्या है आदमी रै विचारां री दासता री—और मानसिक झुकाव री भर है और प्राणा री

मज मौंग रो। जोग है, डूँगर मैं ऊँच घाटम्बर रो नहीं—चट्टान सी ग्रास्था री। कोई आपर मिथ्या मह म घार जे नही हाँ करे तो बीं पर कोट कारवाई तो हुण सूँ रही। आ तो मोवजो मांग है ार पर ग्रापे ही शक्ति हू ज्यागी, चाव कोई कितो ही लुकाव।

दूजी फेट मे आयोडो—एक होणहार टाबर है—शुरू शुरू म बडो ईमानदार। भोवरसीयर री नौकरी लागग्यो। फेर किया ही चोरा री फंद म ग्रायग्यो। बां बीर मूँड कीं लोही लगा र चोटोक्ट चेलो करलियो बीन। गुन्तो ही जाव, कुण जाणै कठ जांवतो ठेरसी ? पण बीं न बिश्वास है क पइसो दिया लिया स चल—ठीक बे ठीक नै कोई को देखनी बवार—किसा कुरणी चाहीज का समाज ग्रर सता री हाँचो ? फेर मे ग्रायोडो ग्रा बाता सानी कीं सकेत कर कीं पोन सोन, पाठकां र दाय ग्रासी तो।

तीजी, रोग रो निदान—ग्रादमी दिरुग सूँ ले र तिइया ताई दफतर ग्राव जाव। कोई चपरासी ग्रर कोई ग्रफसर, तिइया की न कीं घर मे ले र बडै। तिणखा तीन सौ खरच ग्रर पांच सौ पण घर म न वाप पूछ न बीनणी क ग्रै दोयसौ ग्रौर कठ सूँ ग्राव ? ब ग्राही चावै क दोयसौ री जाग्या ग्रो दो हजार ग्रौर कर तो ठीक हुवै पण जिक री मां ग्रर लुगाई जागता

अर जींवता हुवै वै पूछनै कै औं रोगला दाणा ला र म्हारो पेट किया पाळीजै है, को चाहीजै म्होनै थारो ओ आडम्बर। तो जरूर कमाऊ रै ओं समझ आव ही—अर ओ रोगी को बर्णनी—इसी सी चर्चाई कहाणी म है।

चोथो बोध—सूं पीड अर पान म बच्याडै एक परिवार री स्थिति मूं समूचे राष्ट्र री वतमान स्थिति रा बोध हुवै, पण ध्यान कीनै ? कथा रो प्रमुख पात्र जागूं भाषण नारा चुणाव, भूखहडताल सिवा की जाणता ही नहीं हुवै अर आंसू गस, गोळी, लाठा चाज पार्टी बाजी भ्रष्टाचार अ जागूं थवार रै शासनतन्त्र रा स्थायी अग बणग्या हुवै। देश री कारूं कोइ दावै तो दावा—काश्मीर मे हुवै चावै कच्छ मे—पचायती करावो मुल्क म अर देखो बैठा बैठा। एक चिन्ता है खाली कुरसी री का आपरी प्रस्टीज री। वै रैणा चाहीजै दश नै चूलै म नांख र ही। अ सै बाता जे बोध मे आछी तरै सूं ऊभरी हुवै तो बाध ठीक ही है नहीं जद दुष्प्रयास ही समझो।

अन्तिम आंधै न आस्या—जिकै पर ई पोथी रो नाम करण है एक प्रतीकात्मक कहाणी है। म्हारो दावा तो नही पण म्हारै ख्याल सू राजस्थानी म आ आपरै जातरी एक नूंई रचना हुणी चाहीज साधारण

सूँ असाधारण खानी । आछी अर ओछनी री बात हूँ को करूँनी ।

ओंल्या ? ओंघे पूँजीवाद न अर बाँन जिका अपण आपन हीण अर हेठा समझ र ओंल्या मीचे पड़या दिन तो" । वमव विलास अर बढणरो टको खानी एक ही वग र पॉती आया हुव, आ वठ ही वा है नी । दूसरा ही जीणा चाव पण की ढग सर। चावण री चेतना तो है बाँ म पण है जिण्डचोडी वा उचित मारग वरसण मीग काई बीन सगठित कर तो म वी हुव । लीप सो जागरूक नेतृत्व, गरीब गठिय अर ना"है निमळ विन्नीखतिय जिमा न ता नूँई मनि मति देव है ही घोर स मॉघ मह न भी नूई दिसा खानी उन्मुख कर साचरो चीत अनुभव कराव । निम्न वग म जद बाँरी हीण भावना खतम हुव तो व आप बडोडा साग साथ मूं काँधो मिला र चाल अर गौरव अनुभव कर । इ र उपरान्त हा जे कोन ही बीमे कठ ही प्रान्त री बास आव तो नाम्या रो विकार ही समझणो चाहीज ।

ई र अनात्ता आ न्हाण्या र वार्तालाप म ज वेई जाग्या नाटकीयता अर वा यपण आयग्या हुव तो अस्वाभाविक नहीं । उपमा अर उत्प्रेक्षावा सू कठ कठ ही स्थळ भारी हुग्या हुव तो आ म्हारी अनावश्यक

प्रासक्ति समझो भर बा ठीक नही है तो नहीं ही हुणी चाहीजै । भ्रा सगळी मे म्हार पाणी भाडो पाळ बाधो है ई सातर क म्हारो चिन्तन पोखरी रो छिछळापण कठै ही चौदे नही आवै, पण जितो ही मैं बीनै लुकोवण री चेष्टा करो है बित्तो ही बो जादा ऊभरसी—भ्रो ही नेम है। म्हारै कथाकार इया लिख्यो है भर बिया लिख्यो है भै स कूड़ा डफाण है साच बा ही है जिकी पारखी भर अधिकारी विद्वान सोचसी समझसी ।

राजस्थानी में म्हाणी साहित्य री कमी है । है जिका पगम्बरा पुराणा खुरचण सा र जीवै इसो । बीनै भलग भलग भादम्या न्यारा न्यारा गाभा पैरा'र भाप भापर ढग सूं सजावण री सस्ती चेष्टा करी है मूळ म कोइ भन्तर को आयोनी । कथा सकलन भर सम्पादन भूमिका म दो शब्द भर बी म ही दो दो पानी घाल, कथा साहित्य रो खासो भलो उपकार कियो है पण भ भाधार की सीमा ताई ही ठीक हुय । वतमान भी ता कठ न कठ मोटो महीन चिनित हूणो चाहीज । बीरी पूर्ति भ्रतीत सूं थोडी हो हुसी भर न बीरी पूर्ति भा पाथी ही कर इसा न म्हारा मतो भर न म्हारी महत्वाकाक्षा ही । भ्रा ता हुवण री चेष्टा म की हुई है ता ठीक है नही तो सच्चेष्टा म होम करता हाथ ही बळया सही—भ्रशुभ नहीं भाछा हो है ।

छेकड म लिखण री ममता मे जे कठै ही मैं सीमा रो अतिक्रमण कर दियो हुव श्रर वीं सू कीनै ही जे जाण अजाण म ठेस पूगै तो क्षमा याचना रै सिवा ग्रोर कांई कर सकू हू । मान रै वास्ते कै वा मन मिलसी । विया स चीज प्रभु री है वो आपरी अभिव्यक्ति कीडी सू करवावे चावे कुंजर सू पण अहिल कीरो ही को जावनी ।

उदयरामसर
(बीकानेर)

—अन्नाराम सुदामा

क्रम

ढळै डूगर फळै चट्टान 1
फेट मे आयोडो — ३६
रोग रो निदान — ५६
बोध — ७७
आंधै नै आंख्यां १००

ढळै डूंगर · फळै चट्टान



चाय र कपन प्लेट में ऊंधो राख जगदीश पैला कमरै आगै खडी साइकल न एक सील बटक स्यूं साबळ पूंछी, ठीक इयां ही जियां कोई चतर नायण पीठो लागी कीं बनडी रै डील न आपरी मुलायम हथाळी सूं मसळ मसळ बीं रो रंग निखारती हुवै, फेर एक उडती सी निजर बीं पर नाखी, 'चिक है, भवार तो महीनो खण्ड' सोच र पाछी ही स्टण्ड पर खडो कर दी। अबै आंख्यां मेज पर पडी फवरल्यूबारै चिलकती घड़ी पर खानी गई सात में दस बाकी हा। 'ओ! दस मिण्ट में भटदेसा पालिश तो करलूं पला, ओजूं तीन घण्टा पड़या है दफ्तर पूगण में।' झट एक बोदो सो ब्रुश जिकै रा घणखरा रूं पाणीभर सूं उठयै रोगी रा सा भड्या हा, पालिश री डब्बी ऊपर सूं गोरी मांय सूं काळी भलै घर री दुश्चरित्र लुगाई र काळजै सो, कौम री भांडियो तस्कर बौपारी री बेइमानी सो, बो जूतां री जोडी लेर बठग्यो चौराव रै चमार सो। रगड रगड बांनै इसा चमकाया क चाव मूंढो देखलो बां में। दोनां न बराबर राख बड गौर सूं देख्या बांन, जियां कोई सोनारो दूकान म पडी मन

पस द री जोडो निरखतो हुव । चमक म एक चोडा उगणीम लाग्यो बी पर क्रीम रा च्यार टोपा ग्रोर नाँख्या बटवो भान र कच्छ हाथा सू दो लसरका भळे दिया रामन्नियो पैल सन ही पाछो, फेर देख्या सावळ हाँ श्रधक रोंग पर प्राया चमचमाट कर, मु या ही भममार्ट एकर सी प्रौ आग । आरममन्तोष री एक लर उठी इमी जाणू अपोलो ग्राठ बणावणियाँ बनानिक र मन म ही नहीं उठी हव । एक गौरव नाक्या महीन व्यक्तित्व रै माट चर पर टीक इयां ही जियां सपन म किगकोग सू कुश्ती जीत्य की सौकिम पलवान रै घर पर नाच ।

नेव करणी बाकी है हण करनू । छोटी सी एक पटी खोली बिचली रासर ट्राजिस्टर साइज री । पोन्डस क्रीम रो एक धोळा भांडियो सेफ्टी रेजर, मकती साबण री डब्बी चमकतो छोटो कतिया, ना ो सी मन्न चूंटणी एक प्रिस पातया रो पकेट, काच कागसियो अर डिटोल री एक छोटी सी शीशी बी स । की मन चली सुरैया री सिंगार पटी सो वा पेटी वही खूप सू सजायोडी ही । याद प्रायो बीन श्रर श्रवार तो गाणा ग्राया कर है नी — सीलोन रै बौपार विभाग सू भट रात सू श्रमूल्योड ट्राजिस्टर रो मूंढा खोल दियो—मधरो मधरो सुर कमर र आकाश म गू जण लाग्यो । जिया ही काना म सुर पड्या पायल साग मन थिरक्यो ग्रर बण सामन टग्य काच म एकर दया देख्यो जिया कोई गढ फत कियो

हुवै । सावण लाग्योड़ा बूं'न, दमेगी धाम री गुठली री पतली टोटी पर फरण लाग्यो [illegible] । परसै परसै धूवण खातर मूंडा कानी सूं धारै काड्यो बींनै चोरी रै पगलियै पर बठो बीरी दस इग्यारै बरस री छोरी दीसी । 'अठै क्या बैठी है गरमा रहूप आवण नै मोटो को हुसीनो ?' बण पूछ्यो । बा की बोलाती । दर्ठ [illegible] बरस पांच दस रो बीरो छोरो हरियो दीस्या बा'यो बापू मोव (रोवै) था तो ।

'क्यों रे ?'

'मा (टा) नी ।"

जगदीन हाथ म धूं'न समत हो बारै निकळ्यो । गर गयो, बसबमीज हो । माल मांगुबा मूं भाभा पर मोल्यां मा हा सीपटी रै पाटा सा भरी पाणा मूं । जिणां ही बण सिर पर हाथ राख्यो सीपट्यां बह चालो । पूछ्यो क्या बटी रावै क्या खातर ? मोटो पीच्या पीलो पाड़्यो[1] फीम ज्यूं फीग पड़ी । रोणो मोर तेज हुग्या । जियां जियां बा हू हू रो बोक्री बियां बियां जगदीन पुचकार बोरच्या । 'मैली, तूं तो पढ़ण म बडी हुस्यार है, स्याणी बेटी कर्ई इयां रोया कर है ? कोई फीम फास खातर मा सो दी को फैयानी ? मायो हिला'र बण बताया 'नही । बस बसबमीज एकाही पण बोल नही । 'पढ़ी कठै सूं ही ? नत हिला'र समझाया नही ।

---

१ छोटी गळना कागड़ियो

तो बसा तो सरी यूँगी बतायां बिना कोई टा लागे ?"

बसका लेवती लवती बोली या ॥ म रि यो।

जगदीग विचाळे ही बोल्यो "कोई पारियो फूटग्यो ?"

"हां'

'जिक खातर इनी रोव बळनद फूटग्यो, तो फूटग्यो क्सो घी रो घडो हो ? ठीकरो हा तो हो भळ लास्या कोई दस बीस पइसा म। थारी मां न हूं क देस्यूं की को बवनी तन बस फेर तो ठीक है ?"

इती समझाई पण छोरी बसबसीजती को मिटी नी की मोळी जरूर पडगी। बी र मनरी एडी म अरमान री कोई फांस खुम्योडी ही ऊडी। बो की रुक'र भळ बोल्यो, 'छा, ही पारिय म ?'

नही।'

तो ?'

लावण गई ही।'

'फेर ? सेठाणी को घालीनी ?'

हां"

नही घाली तो नही सरी कोई जोर थोडो ही है यार नही जच तो अब भळ कदेई जाए मत।'

छोरी रो बसबसीजणो अब बन्द हुग्यो खाली मिण्ट आध मिण्ट सूं एकर सुबकी ले र बी न पाछो चितार लेवती। लाग ही

फाम श्रोजू पूरी नीकळी को ही नी। जगदीश पाछो ही मळे पूछण लागग्यो जिया ट्रेनिंग रो मास्टर टाबर सूँ उत्तर कढावतो हुवै ।

'सरला !"

"हा

'सेठाणी की कयो तनै ?'

'हाँ'

काँई ?"

'छाती बाळन न रोज ठीकरो ले'र श्रा ऊभै, हुवै मठै मण दो मण, घरमाळा न पूरसी तो ही घणी है, उत्तर दवती देवती हूँ थकगी, पण फीटी इसो को देखीनी मैं, ऊतड मठै सूँ ।'

'फेर ?'

'हूँ खडी रही काई ताळ।'

क्यों ?'

'दादी कँयो बेटा नारळी दो नारळी तो नाए ही काळजो भमका मारै ।'

"तनै रोजीनै सेठाणी इया ही कव ?

'कद कदे ही म्हारै खनै सूँ काम करवा लेवै जद तो कम ही कवै— जा, पैलो म्हारे दो तीन घरां म छाछ द र आ–हूँ दे आऊँ फेर मन ही घातद अध सेर तीन पाव। आज बा कूरी को ही नी, घीरै बटै री बहू ही।

घर ?'

'सेठाणी र पोत घणको न्यो मन, नीकळ म्हार घर सूं, ग्रजक भाई ता बूढ़लो राँड न—पारियो फूम्यो—टिल्न र साग ही।

'रिताक बडो है वो छोरो ?'

'पाँचवीं म पढ भूण्गो है घरे जाऊँ जद घणी वार कोभी कोभी गाळ काढ र दोड ज्याव का ग्रगूठो दिखा'र क म्हो लै।

माँ बाप बीरा की वो बोलनी ?

'नही'

जगदीश र माणस पर विचार री अणचाहो लीका खोची अगी बी पर जिया जिया सोचतो ब मोर गरी काळज में बठती काच री किर किर सी।

अब तन भेज तो मळ जासी ?' को बोलीनी बा बींरा होठ एकर दुविधा म डूब्या।

'तूँ जाणो चाव का नही ?'

'न ी' क र दो सकिण बा हकगी पण जासूं पर बी र जागत तर बीनैं आग्रह कियो हुवै बोलण खातर बा बोली, पण दादी र काळज भभको ऊगठ है नी रोटी ही का भावैनी नी न छाळ र गुरथ बिना, जद ?'

'ग्रो तन थारो दानी री इसी चिन्ता है! थारी ग्रापरी माँ रो नही जितो म्हारी माँ री है। बस बीन एकर बाया म

भरली। 'म्हारी माँ री चिन्ता तूँ राख अपमान रा दात सैवती, मैं फालतू ही भार मारी धरती नैं बो री आस्या सगळ हुगी एकर बण बी न जी भर देखी, इसी पूठरी वा बीन पैला क्देई को लागीनी। पतळा होठ गवर रो सो तीखो नाक, हिरणकी री सी भोळी आस्या चैरैं पर नाचतो निच्छल राग, सरीर म की मुर्दी पण आएूँ सरलता सदेह बीर नारीर म बासो ले राख्यो हुवै। आँखगळा मूँ ऊँचो बी म राग रो एक इसा मद्दट तांतण बीनें लाग्यो जिकैं सूँ बीरा जाएूँ प्राण बंधग्या हुव। बीं री सरळता न समझ बी री (जगदीश री) चेतना म एक आवाज उठी —'अरे, जिया तेज तीखा अर निर्दे काँटा नाही भोळी भीग री रेशम सी कँवली पाँख नैं चीर दै बिया ही इ सरला री कँवळो किशोर माएस अणसहीजत अपमान सू चीरीजग्यो हुसी, आज काई कित्ता दिन हुया हुसी इ नै विष री घूंट पीवता, इ र स्वाभिमान रा ऊगता ठूंटा अभाव अर अगसोच्यै अपमान र पाथा सूँ रोज घरीजै अर है मोठें भाँग गियोड़ो वा सेन री मी पर पण इरो धीरज मर ई री धरती रो उपजाऊ पण तो देख। एकर निजर भर भळ देखी बीनें गद्गद् हुग्यो बो। फर बोल्यो अच्छ्या जा बटी अबै हूँ छाछ र पाणी सातर थारी अएमाल आमा माळी का पडन दूँनी। भळें कदई मत जाए मैंढाएी रैं द्वारैं छाछ लावए। दादी सातर पाव डोढ़ पाव हाँठो ल्मा देस्या रात्रौन भर तो ठीक हैं नी ? जा।

बा उठ र चालण लागी, जगदीश पूछ्यो 'स्कूल रो काम कर लियो म्राज रो ?"

'काल ही कर लियो, स्कूल सूँ आंवता ही ।'

"शाबास, बनी हुस्यार है तूँ जा त्यार हु स्कूल खातर ।'

'म्राज तो अदीतवार है बापू ।

'मो हूँ ता भूल ही ग्यो ।'

उठ र बो कमर म आयग्यो । ठोडी र लगायोडी साबण सूकगी ही जिया पोतावणी रो बटको फरयोडो धूँ हो सूकतो हुव । वारी खन बठा बठो विचारा म उळभग्यो । अबोध छोरी र काळज मे अपमान रा दांत मिता दीरा बठा हुसी बारो जर बीरी माली चेतना म एक अणभावतो दद पैदा कर बीन भकभोर नांखी हुसी जियां भयकर आंधी बोरियां सूँ मड लूम की बोरटी री लाहीं डाळी न । बीर बगत भोळें ग्रहम्' रो बँधतो लाडू माय रो माय खिण्ड र बिखरग्यो हुसी जिया बिरखा यम पछ धोर पर रमतें टाबरां र हाथा सूँ बण्या घूड रा घींडिया आंगळी र धोड़ै सै टिल्लै सूँ फीसता हुव, पण की साव तिरसी, भूखी अर बूढी आळ री जडा सूँ जुड्यो ममता रो एक नाहो सो निझर बीर अ तराळ री डूँगरी सूँ टपक बो करै बो बीनै रसहीण कर सूकण को दनी । खिण्डत लाडू न बींर धीरज रा ईना हाथ प्राए दिन नुँव विश्वास मूँ साघ बो करै । बीं रो ध्यान बाजत ट्राजीस्टर खानी गयो बीन ब द

कर वण ग्रालमारी रै खण में राख दियो। जळदी जळदी वण साबण रो व्रुश फेरयो जिया कोई सयावळो कारीगर बिण्डी पर सिघलै रो पद्धो फेरतो हुवै। दाढी कर ली, एक दो जाग्या रगडक सूं महीन महीन लाल टीकया उमरगी ही जिया बिरखा सूं ईल ताल म कोई कोई मामोलिया (बीर बधूटी) दीखता हुवै। वण थोडी डिटोल लगाई, फेर सफेन्मक क्रीम री पाली पाली ग्रागळी इया फेरी जिया फाटयोडी 'ब्याऊ' पर कोई 'मल्लम' लगावतो हुवै।

किती ही क्रीम थेपडो भला ही गाला रा खाडा तो को भरीजैनी" बोल रो पैलो शब्द जिया ही बी रै काना मे पड्यो वण मोस्या ऊंचो करी तो सामनै कुर्सी खनै बीं री बहू जानकी ऊभी दीसी। बो थाडो मुळक्यो पण कूडो, खाली मैंक मिटावण खातर। 'तो काई करा ?' वण कयो।

'करो कोई पट मे नाखा की। मोण्डया नै पैण्ट पेराया तो बोम चुस्ती ओंवण सूं रही।'

"तो ?'

'वा तो मासी मांय की साच हुसी जद, हा बारलो फुठरापो जरूर दीखसी भर थानै वो ही चाहीजे। ठोडी छोनो भला हीं रोज, थारी है हूं क्यों पालूं ?

जगदीश बीर चरै खानी एकर इया जोयो जिया कोई वित्त मन्त्री ससद म जावण सूं पैला बजट रै नक्शे में लगाय टैक्सा

रानी गोर स्यूं जोवतो हुब पण वी रै घर र नक्श रा महीन घर मिल्योड़ा अर बीर जळ्ो सी समझ म को आयानी । बण कयो 'छेकड़ तू चाय कांई है, बा सुणाव नी ?

'जिका ट्रांजिस्टर री सुणन स्यूं राजी व म्हारी क' सुणसी ?'

'कहसी तो सरी कीं ?

'कसी थांन किसी ठा को है नी फालतू बातां म कोवा लेवो । छोरी लड़ी लड़ी एर यण्न कांई रोई—एकजिसी मांस्या सज सूज र टोटळीजगी बीरी, थांन बांवरा सुणीज्या थोड़ा ही हुमी ? लूवो लाड खम्मा घणी ऊपर सूं बुवधारीं-न्यारो ही बाप री काळजो है नी छेकड़ रिषळ सो सरो ।'

जगदीश बीर घर भानो एवर भळे देख्यो गोर स्यूं ठीक हुया ही जियां कोई जिनामु यहासुन री टीका लानी देखनो हुव । बीन बीरी आंग्या मर लिलाड पर इच्छा आरोग मर मोळखै री आपस म रळीमळी नीका हुया लागी जियां मोयम र मानचित्र म बिरखा, वायु अर तप्ती री लीका रो जाळ खींचीज्यो हुवै । बीर मब की की समझ मे आवण लागी क बीजळी चमकी कठ मर पडी कठै ?

सुण्या हा बीरा बसका में पण करणो कांई तूं ही बता ? सज भावस्यूं वो बोल्यो ।

करणो वो ही जिको एक खर बाप न आपर टाबरां

खातर अर एक खरै बेटै नै आपरी जनम देवाल मा र खातर करणो चाहीज ।"

'अर एक भल मोट्यार नै आपरी लुगाई खातर' मा भीर कह, कमर क्यो राख ?

"आ तो थार समझण री चीज है थे जे आ समझ्या हुवो तो हूं सोचूं, थारी समझ री निजर भीय री दिस्टी सूं जादा तेज है पण जिको गुर अर पीर की री ही को सुणनी वीन काई तो कैणो अर कांई सुणनो ?'

"नक्कि स्यूं वेसी तो करण स्यूं क्यो ?'

'वेसी करवावै ही गुण अर करण री किसी रीत, पण हुवै जिनी म तो गाळ मत घालो ।'

'किया ?'

"दुनियाँ भर री खबरा जानी तो मूंडो अर घर खानो पूठ, आ किसै घर री रीत ?'

'बा तो आंख्या आगै हरदम घूम ही बो कर ।"

'अर घर ? देखी थारी आंख्या कठ है बै ?'

तो आंधा हूं ?'

'आंख्यां हुवी तो, यका रेडियो, ट्रांजिस्टर का लावतानी, आंख्या ही जे हुनी तो टेबल फन हो सीलिंग फन बाळण नै लगावना कुर्सी पडी ही काम चलाऊ आराम कुर्सी रा पड़ना कांई जुळना हा—किसी किसी बताऊं ?'

"जरुरत मुजब कीं तो करणो ही पड ?'

जरूरत तो रोव है बापडी कीरी ही आंख्या म घर कीरो आंता म। पागल ठाठ दो अंगूठा थारी आंख्या म घर दो आंगळी थारै काना म दे र ऊभो हँस—थान बो आछो लाग।'

'कीं तो इण रा लोग वाग मार्दै जादै स्टैण्डड हुणो ही चाहीज, सफा पोत उघाट थोडा ही हुवां—सरूप सारू शोभा हुवैक नी की ?'

ना ना पोत उघाड मत हुयानी मां बापडी नारळी छाव नै आंख्या फाड बोकरै तो फाडो छोरी घर घर जा पारियो फोडा र भूकती आव तो आओ थारो पोत नही उघडनो चाहीजै। सेड स सूगल कील अघ कीलै वनस्पति खातर घण्टा घण्टा क्यू में खडा रह आज तो भीड बजा ही, हाथ को आयोनी, कवता मूँडो उतारै, माईत मरया सा खाली हाथ आओ तो आओ थारो पोत नहीं उघ डनो चाहीजै। जूत पड पूछ कोटवाळी कठ ? स्टण्डड रो पडकोटो आग सूं इतो ऊचो करो क बार सूं थारो पोत नही दीख लार सूं थारै लजव त स्टण्डड रा जाळी झरोखा चाव साव उघाडा दीखो–घसक तो चाहीजे बा आग चाहीजे, लारै भला ही पून लागो। पोत तो पाणी मे तिर—अर थारो पोत रेत पर खडो है तो ही पोत पोत करता गळो सूक। शोभा लार मत्ता हुसो तो हुवो' वहूपरी दो मिण्ट एकर बा चुप हुगी पण भोजू बींर आक्रोश रो आफरो पूरो को फटयोनी पण अवक बीरी सममावण मे धीरज जादा लखावळ

थम, खडको थोडो मार जादा दीस्या। वा जीवणै हाथ री मगली आगळी दिखा'र बोली 'की तो सोचो थे ही पारै तो, जूता री न्वळया पर क्रीम चढसी थर अठ घर म हँसतै मुळकतै फूला नै धावण हीं हाथ को आवैनी। छोरा स्कूल म सी एम ऐस दान रै दळिय खातर हाथ मांड अमरीकी पाउडर री चिमटी खातर साबी लैणा म खडा हुवै अर थे स्टैण्डड ऊँचो करण खातर सोफा सेट मोलावो टेरालीण अर सारज रै सूट रो सौख साजो। हूँ तो कैऊँ क थारै स्टण्डड री भीता इती मोडी करो क म्हा घर मांयला रो जी घुट र पिण्ड छूट थर म्हे अगलो रस्तो टेमसूँ दो दिन पला ही नापला। स्टण्डड जी सी—मिनख मरसी मरण द्यो। थारी ममता पर म्हारी वळि—म्हे राजी।' होठा म द बास्या फुली पण आर पार जावण आळी आवाज भळे गूँजी होटा म स्टण्डड थानै इतो हक-लेसी क थानै थ ही का दीखोनी, आ मैं को जाणीनी।

जगदीश एकर बीनै देखी इया ही नहा समझ री आंख्यो मूँ, बीरी मारयो म ऊमडतो प्यार तो बण पैला कई दफै देख्यो पण बो वळा कीं तो आपरी आंख्या में खोट हो अर की प्यार म गंदळा पण—की लोह खोटो की लोहार बा ऊपरी मूरत जद ही—प्रधार सी, आक्रोश री चिणगां उछळती को दखीनी बण कदेई। बाँ चिणखा नीचै एक सोनै सो स्वाभिमान तप अर ऊपर धीर वीर हो आडम्बर रा कसटीडिया वळे आ वण कदेई को जाणीनी। बण होळै स कैयो पारो कैणो ठीक है, पण की बस्त री मांग खानी भी

तो ' जगदीश रो बोल पूरो हुण सूँ पला ही बा बोली, 'वस्त रो वेग सदा अविरळ एकसो बग विना टूटया बिना सळपडयाँ पण बहु सस्यारा कुसंस्कारी जीव वस्त र प्रवाह म आपरा विकारबद्ध चेरा देख आपरा विकार वस्त पर ढोळै।

'मतलब ?'

'मतलब ब बहुयघी धीगडघोडा जीव ही वस्त री बहु सत्यन् निर्दोष मानवी चेतना न बिगाड। मारर विकारा नै ब सब साधारण री धरती पर क्षणिक तृप्ति री स्वाद दे उगाव अर बानै मागा भूखा अर कगाल कर बाँरी मुचप्ठावा न मौर जगाव। ई जुग र जीवा री आ विशेषता है।

'किया ?' जगदीश धकी सो जवान सू कयो।

'थे को देखोनी विकार र वशीभूत अबार र लोगा न सिनेमा री लुगाई तो लुगाई लागी सिनमा री मा माँ। घर री रोशनी रीकती माँ दिनूग सूँ लगा र सांव जित पाट कर नकली नहीं असली पण सवानी वेटो को पसीजनो रत्ती भर ही। लुगाई घर म पग घर जद सूँ ल र मर जित सिक बोकरै तिल तिल पण भटकीर मोटयार र उडार मन न अघघडी हुम र बात करण न टम को लाधनी। सटका पर मेक अप वियोडी होठ रग्योडी ठगारी पूनळया खानी राफा ढीली कर बाको फाडतो रमो निरसो ढाँगरो सेळी खानी देखनो हुव ज्यूँ। बाता करसी जद सभ्यता अर समाज वाद री पण ऐडवास्डा रा डोळिया श्रीमा र पोत सूँ ऊजळा को

नीकळनी। चरै पर रग लाव मायली करामात। वरूत बापड न क्यों कूडो वदनाम करो।' क र एकर बा चुप हुगी।

'वाता त कई काना री खिड़की खुनै जिसी पण अबै था तो बता कै सूँ चाव काई है ?'

'हूँ चाऊँ कै आपा एक गाय लेवा आछी सो।"

जगदीश थोडो मुळक्यो ओ अब समझग्यो आ इती लाबी चौडी बाड किया छापीजी कात्यो कूत्यो कपास कर दियो त बस थारै म्हारै अठ मावता मळ को सावैनी। ओ शहर है अठ तू कार राखण री बात तो कर सक, पण गाय री नही।'

हमी कोई बात है, च्यार सो रिपिया मिल थाव पर्णै सूँ घणा सो सवा सो गाय पर लागैला।'

गूँगी जिका घरे, दो दो जीपा खडी कर राखी है, कोठी बगला, बिजळी, पखा, पाईप स है, क ही गाय लेवण री बात जीभ पर को नावैनी। पांच सै सान मै पावणियाँ अफसरा री तो थो हाल है क घण सूँ घणो कोई रळी दायल कदेई बाररडी भलाही बांन लो, बाही जी सूँ ऊपर कर इ खातर गाय री तू नाम ही ना लिय।

'थारो दिस्टीकोण ही आघो लाग्यो मन क्द ही तो बापडी गाया री ओ हाल है थाँ टाँला तो मनै लाग कै आंगतै जमानै मे गाया रा दरसण फोटुवा म भला ही हुवो अर घी दवाइ दायल कोई भागी रै अठ सीस्या म भला हो लाधो। बळधा री जोडी चुनाव चिह्न में ही रैसी मनै दीख। जद ही तो हणै रै टींगरा री टांगा

लड मर मोट्यारा रा मू ँ वाया रा सा दीस।'

तू ँ जच जिया ही समझ पण हू ँ गाय लवण रै पख म न भाज मर न माल। हाँ दूध तू ँ सेर लेवतो डोढ़ सेर लल मला हीं।"

'तो छाछ खातर करण दो मा न रो रीं फूकण दो छोरी नै धापर हू हू चालण दो पखो मर बाजण दो रेडियो म्हार बाबजी रो लियो कोई मैं कई म्हार खन रइ' क परी वा बारै नीकळगी आंधी सू उडायोडी अधबरसी उदास बादळी सी।

× × ×

मादमी री विवशता आ ही है क बो सोच ज्यू ँ को हुवनी मर बो नही सोच ज्यू ँ हुव। एक दिन सिझ्या छव सात बजी म दाजै, जगदीश न साईकल लियां घर म बढतै नै सुणीज्यो जगदीश जी रो मकान भो ही है काँई ?'

जगदीश लारीनै देख र कयो, हाँ भो ही है, बोलो ?' जगदीश देख्यो, गाव रो एक आदमी है, एक हाथ म मोटी सी लाठी दूसरे हाथ म जेवडी जिक सू बंध्योडी एक गाय खडी है।

हू लिखमीसर सू ँ आयो हू थाँरो काकी सुसरो काल रामशरण हुयो मरती बेळा वा कयो 'क मा गाय म्हारी छोरी रै पुगाय देया ग्रामीण बोल्यो। जगदीश एकर तो इया राजी हुयो जिया मएणची ती लिछमी पा र कोई रक राजो हुतो हुव। बण खनै जा र गाय न सावळ देखी। लाबा सीग जिकै म एक खोडो मर एक हाल। पांसळयां मकाळग्रस्त री सी यारी यारी चिलक, हाडे गोडे

मोटाळ परिया सूँ पाको बळध लागै खनै सूँ गाय जै या रै स्यादवादमी । न गाय न बळध गाय बळध दोनूँ ही–ग्रवाडो चिप्योडो लटर कोई ब्रूटी सठाणी री तागडी सूँ बँध्यै किरचा रै कोथळियै सो–ग्रारया म बीड ग्रर पाणी पड, डावी ग्राख माग री गयोडी, टिल्लो दिया पड जिसी गाय । जगदीश एक्र घोळो हुग्यो, गाडी मे गाडी गम्योडे मुनाफिर सा । बण बीनै तो की को कयोनी, मन म सोच्या घीसाई रा पइसा बठ ही भेज दवतो, अठ ताई क्यो सो फोडा गाय नै घाल्या ग्रर क्यो ग्रण भलै ग्रादमी दस्या ।

"सुणै है नी ? घर म जा र ग्रापरी लुगाई न हेलो मारयो ।

क्या ?"

'क्यो क्यारी ठाकुरजी सुणली यारी मरता मरता काक साड कियो है–भतीजा रा, गाय भेजी है, ग्रबै धपटवो दूध काढ़ ग्रर पी । कह, होठ पर होठ चढायाँ ग्रापर कमरे मे बडग्यो ।

बा, ब्रारै गई, ग्रादमी सूँ बातचीत करी, गाय नै लारै लजा र बाँध दी । पाछी ग्राई जद जगदीश कैयो 'क्यो ग्रबै तो राजी है, गाय ग्रायगी ?

"ग्रायगी हूँ किसो सेडो देवण गई ही, मरजी ठाकुरजी री, कठ काढ़ूँ ग्रब ? दस पाँच दिन मूँ मारण री कीं सस्वार है तो मारलेसी । रैसी तो घर है, जासी तो धरमराज रो बारणो खुल्लो है–

जागो परो।'

इर मन, पगो मया मन परावनो पा सागीरो जागा सूँ जागा एक दा टा पण सवा रो मोघ छोड़ धिगवाई रो पर।' बीं मुळक'र बो मळें बारयो बीनें मुणावण रागर 'दयक राव जा दो'ही रोम स्यूं जिक री धीमाई पग मूं ।

म मठ बोनो हो हूँ सा समझूँ, पार ही हूँ गाऊँ। इसलिए विषाद री एक हूटरी सी लीक बीर घर र पाणी म तिष र पाछी ही बिनाईजगी। बा थोड़ा सी हसी दूर बोली कायो गयलो जीय हो, बेटा, यटा हू हो बीर आया जित आपानें रशो ही को सतायानी, जूडपा जिसा की दिया हो आज बो जावतो जावता मापरी सालमा री सीमा पो एक चिनाम दीयग्या म्हार विश्वास पर, यण बीं म जिता मगळ मापरो माच्यो हुसी बीं सू घणो म्हारो। हूँ बी म रग भरणो तो दूर उल्टा रही री छायन्वी म पकूँ तो मैं सा कृतघण थोर कुण ? ज हूँ ईं न बाढूँ तो निश्च ही, ईयर मैं उन्ती व कुपित सालसावा मठ न मठ म्हार हिन री हाणि ही करसो, ई खातर मन ता सूली लगडो जिसी भेजो है, म्हार तो बा मामपनु है। सोळवीं सोनो है, बी रो निरस्कार हूँ यो कर सकूँनी भूख मिस मर, बी न बीं बीर पट म नासस्यूँ हीं, बस, इनो ही जाणूँ हूँ।'

दरसण री बाता तो छमक मत, हूँ तो बात एक जाणूँ क तूँ न ता भूख कर अर न तिस यारो पाँख म्हारै ट्रांजिस्टर मर

पछै पर पैला स्यूँ ही हे, प्रावैनी बै मनै इ बाँझ ढाँढ खातर कठै ही काचर बोरा सट्टै नही काटणा पडै, भा जे च्यार छव महीना जीवणो तो तन ठा है, च्यार रिपियाँ रो तो खाली मूको कूटलो चाहीज सो ई थारै चालतै चिन्नाम नै रोज। थारै जे घोबा फाडा पीती ग्रासी तो लप खण्ड म्हारै ही प्रावैला। की न की तो, हाथ तण म्हारो किसो कों हुसीनी ? थोखो घर तो घोस्या रा ही बळसी पण सुरा ऊन्दरा नै ही मिलण्यासी। होठा पर फेफी जे न प्रावै तो मनै कहिए। तू तो ओंवतै जी मळै जे गाय रो कदेई—नाँव ही लेवै सो मैं स्यूँ राम राम कर लिए।"

'म्हारै होठा पर फेफी ग्रासी ता प्राछो'क, थारो तो जी सोरो हुसी, हूँ ईं म ही राजी हूँ।'

तो कर काव नै राजी ग्रर थारै खातर सग नै भाम्या ठाई।'

छूट है थान जच जिया कहो थे पण मनै ग्रोरा नै राजी बिराजी करण री इती चिन्ता को है नी जिती म्हारै साम ग्रायै काम री ग्रर श्री म जे म्हारै स्यूँ कठै ही थोडो घणी उण्ठासी बणतीज तो मनै हर माम क ग्रावनी ग्न्हारो बिराट मैं स्यूँ एक ही मूँ न माडन चालती चालती वा सुणा वर पर ग्रास्था री स्वाभाविक मुद्रा लिया भट बारै निवळगी। पला गुड री दो डळी गाय न दी डील पर थोडो हाथ फेर्यो जाणूँ कोई जूनी जाण हुवै। चूनडी पर दळिया चढाया, टाबरां ग्रर जगदीश नै जीमा चूटा करवाया ऊपर

सापर म रात री दस बजगा । दळिया टार कूण्ो गाय भाग परपो- बा दस बरास मूं आयाडो ही थूणी अर बोली मारी, एकर मूंडो मारती फेर जानकी रानी दसती सन्ताप घर सगे मूं । सन्तोप जानकी री सेवा रो समभो सध ह बात रो वं मैं स्यूं बीरी आस्या री रक्षा किया हुसी, ई टावर सायत बा मू मारगी जानकी रानी दसती । आंस री बात समझ ता आंस मांड फाळजो पण चिन्ता हुव मनन । जानकी र मनम मवार मास्या मू ऊंची चिन्ता राडी हेमा बर हा प मा जो सी किया ? सूती जित इग्यार मू ऊपर हुगी ।

तीनेक बजी एकर भोर उठी सँभाळन न गई नस जमीन र विपाया समाधिस्थ साधुसी सुरामग्न ही । दस र पाछी आपगी । पाँचपूणी पाँच बजी उठणा ही हो मच नभींती नीन्द पयारी आवती ? गाय घर घर री उपेड बुन म घण्टा डोढ़ घण्टा पसवाड फोरता फोरता काढ दिया । टम हुग्यो उठ खडी हुई । रोग आही गोरख धन्धो महीन सूं ऊपर हुग्यो हया करत । गाय पर नूंई पसम आवण लागगी जिया लांबी बीमारी भोग बीमार री रूं उडयोडी भाडी पर अनूवून मोखद अर आछो रोटी सूं नुंवा बस नीकळता हुव । डूकणा दीखणा बी कम हुग्या अर नुव आंस सू पट रा साडा ऊचा आवण लागग्या जिया टोपा भरती डूटी नीच मांडय बरतण म पाणी रा तळ आस्तै आस्त ऊचो आवतो हुव ।

एक दिन जगदीश बोल्यो, 'अजकाले गाय तो खासी ठीक दीसै पण थोरी मालकण रा मूंढो नीकळन लागग्यो। लक्खण देखता डर लाग कै गाय तो काँई ठा मर नहीं मर पण मालकण आवैनी फठै ही थाँसूं पैला ही घोडियो नहीं कूंच बठै।'

म्हारा वाडिया कूंचा किसी प्रलै हुवै चोरयां तो भौर घणी है मुलक म।' बा बोली।

'इ बोदै ढाढ खातर, मा तो मत लैवडना, टीगर तो रूळसी जिका रूळसी साग म्हार भी न भौर आफत करसी।'

'ज आ ही लिखी है तो कुण टाळसी कायो भाण्डो है कुण गारण्टी दै ई री ? रोज ही फूटै इसा भाण्डा ?"

'हूं थारी भावना री कदर करूं पण ई खोपै खातर म्हां सगळा नै ता खतरै रै खाड में मत नाख।

'तो ये आ समझो हो कै हूं—थां मूं नाराज मर ई सूं राजी ?

खैर आ बात तो को हुवणीनी पण •

पण थयारी था सगळा न सावळ राखण खातर ही ता हूं ई न सावळ राखणी चाऊं।'

"पण, म्हारो कणो ओ है कै म्हा सगळा खातर तूं थारी आंधी ममता न छोड। कदेई तूं कुतर रळकावै थीरा जूंठा जुग कदेई थीं नीच रेत बिछावै, हाथ फेरै इती खेवट तो सायत कोई बीमार पर ही का करतो हुसानी छेकड है तो डागरो हा ?"

'तो डागर री सेवा डागरा तो करण सूं रया करसी तो कोई लुगाई रो जायोडो ही—ग्रोर बीरी सायकता ही कांई है ?'

'पला ग्रापरी सेवा, पछ ग्रोरा री।

"जिका ग्रापरी पला सोचसी व ग्रोरा री माडी ही करसी।'

ग्रोरा री करण खातर, खुद रो शरीर तो नीरोग चाहीज पला ग्रा तो तू ही मानतो हुसी ?

काम करचा नीरोग तो बो रसी ही गरीर न तो जिक घड घालस्यो बो बी घड ही बठ ज्यासी ग्रर थ जे ग्रा साचता हुवो क ग्रादमी जितो कम काम करसी बा बितो ही वसी जी सी तो ग्रा स्यालप म्हार माथ म कम बठ।'

जगदीश न फकर तो हसी ग्राइ क दो च्यार इसी सुणाऊँ कै ग्रा याद राख केइ दिन मन न की मार र बण खालो इतो ही प्रकास्यो क 'तन समभाव बो जिकै रै दा माया हुव—ग्रर तनै ग्राछी लाग ज्यू' लिलाड में खीज रा सळ घारया-हाथ म ग्रखबार लिया बो ग्रापरै कमर म बडग्यो।

एक डोढ महीनो ग्रोर नीकळग्यो—क्देई जिको ग्रयाडो विरचा र कोयळिय मो लागतो—ग्रर बोरा बादी खारका सा दीसता बो ग्रवाडो ग्रवार साइक्ल र हैण्डल सूं टिरत ग्राँबा र थल सो भारी ग्रर भरचो लाग हो ग्रर बोवा छोटी वाचो वेळ री पळचा सा करडा। गरीर म वा ताजी ब्यावतर गाय सी लागती—स्यादवाद

री सकीरण अर सशयात्मक भासा सूँ [illegible] [illegible] [illegible] रै
एकोऽहं सी खनै अर परियाँ सूँ —[illegible] [illegible] हीं। [illegible] [illegible]
हा जिसो हो ही—वीं र मान ?

एक दिन जगदीश [illegible] [illegible] कुर्सी पर बैठा धमवार फिरोळै हो। वींरी निजर [illegible] [illegible] [illegible] धागा पर कालसा रा छोटा मोटा टेसण [illegible] [illegible] [illegible] ? [illegible] [illegible] जक्शन पर रुकगी। [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पर मूंनी पर्यो हा हळको सो गा[illegible] मोड राख्या हा। [illegible] [illegible] आगी अर फिर मुर्झै हो। छोरी तुळछी री बाय [illegible] [illegible], [illegible], 'मीं मा बाय नै दादी दी है।" वा बठी हुई—[illegible] [illegible], [illegible] [illegible], 'थनै गवार टार दियो ?

'नही मा।"

"जा ठार देखा, हूँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।' [illegible], रा ही जिया ही पाछी पडगी। जाणू [illegible] [illegible] मोन मो मारी लागतो हुवै।

मा बेटी री बातां रा [illegible] [illegible] [illegible] रै माना में पडी वण एकर छापो राख दियो अर [illegible] भानी दा मिण्ट एकटक देख्यो। पाँच च्यार महीना पैला [illegible] [illegible] [illegible] चेरे पर जिकी चमक अर नारी सुलभ सैज आकरपण हो, बठार वो फीकै अर निस्तेज पीळापण सूँ कांति [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] मोर रै [illegible] सो उदास अर [illegible] लाग्या वीन। [illegible] र [illegible] पर तिरती चमक न

[illegible] डूगर फळ [illegible]

कोई चिन्ता री रेत चूसगी लागो बीन। बीरै एक्र जची क बतळा'र ई नै सुणाऊँ 'क्यो आव है स्वाद अब तो, गो माता री सवा रो ? पण बी र मू पर छाई पीड अर थकावट सूँ—बो चुट एकर करणा म डूबग्यो। भोळी अर जिद्ण जात है—पकडलियो गये रो पूँछ—अबै छोड किया लाता री लाग तो लागो' ई ऊहापोह म डूबणो अर तिरणो सुरू कियो ही हो क बण आपरी मा रो हलो सुण्यो क बीनणी गाय तो ब्यायगी दीस—देख देखा।'

श्रो हेलो जगदीन न कुण जाण किसोक लाग्यो पण जानकी म तो श्रो अडीकत बामण न चूँत सो दाय आयो। बा भट खडी हुई लार जगदीन ही टुरग्यो—की अचम्भ म की अप्रत्याना म। टोघडियो लाई पण मरयोडो हो। जगदीन क्यो चूक हो कँयो 'श्रो ल सेवा रो फळ इता दिन खुवायो जिको धूड म गयो, अबै मळ खुवा साल भर—सळो काढण आळी बळा किसीक दी है पीच्या म पण ठीक हुयो। श्रा ब्यावा रा नेक इसा ही हुणा चाहीज। कह र बो गयो परो ऊगास अर आक्रोश सूँ अमूज्योडा।

जानकी गाय न गुड री दो डळी दी। गाय बीन देखण लागगी जाणूँ की समभावती हुव।

क्यों काई कसर रही माता, किया देख म्हार खानी ?" जानकी हाळ अर उगास मुद्रा मे क्यो।

गाय भळे एकर मरय टोघडियै खानी इया देख्यो जिया उदयसिह री धाय पन्ना आपर मरय बट खानी अर फेर जानकी

सानी । जाणूं बा समझावती हुवे के "भोळी, मनै म्हारै टोघड़िय री इती चिंता को है नी जिती थार अंतराळ में सोय थारै विश्वास र बेट री कुदरत आपे ही करदी म्हारी मनसा पूरी', पण आ बात जानकी को समझीनी— नमनु बिन बानी लाचारी ही । बा जर पड़ी जिते एक टक एक जिसी ऊभी रही बठै ही।

सुपारी न बुलाई । बा आवनी चौका बरतण करण खातर । गाय आई जिकै दिन सूं कवती बा, 'गाय थारी दोनूं टम हूं दू देस्यूं अर नीरो चारो कसी जिया, पण दिनूग सिंझ्या पाव पाव दूध देणो पड़सी मनै । दोहीतो है एक आठ दस महीना रो बाप वायरो । छोरी रोगली पूचो हो—पाव डोढ पाव जे धार दीख बोकर तो कदास लट पळज्यावै ।" जानकी थोड़ी हँसी, फेर बोली, माजी, थे तो बा करी क रोड थार जूती रो दूंला, पण जूती ही हुव कठै ही, थे रोको दूध नै, अर गाय आज मरूं अबार मरू दसो है।'

तो इसी क्या ली ?"

'ली कण है, आई है कठ स्यूं ही ।

'तो म्हार भाग री बात—नही सही ।"

'पण चोखो थारी जबान फळै आ दूध देवै मनै अर हूं देऊँ थांन अच्छेर री जाग्या तीन पाव—अबार स्यूं ही सौदो पक्को है आपणो ।

सुपारी आयगी दौड़ी दौड़ी । जानकी बोली लो माजी

धारी जवान तो फळगी, साँभो ई न पण ?"

'पण काँई ?'

'टोघडियो को है नी—मोछ है।'

'भ्रापणो काँई सारो ?"

टोघडिय बिना दूध ?'

'देखी जावै, जिता दिन देसी बिता दिन ही भाछो—धीएँ ही दीसै पला सू ँ स्यावणज्यू ँ बिचार तो को लाग होनो।'

"ही जच ही स्याई है।

सुथारी लार गई। गाय रो खीस निकाळयो। गाय पग ही को हिलायोनी भीत सी थिर खडी रही। टोघडियै खातर न धणी ढीकी भर न धसो हेज ही कियो जाणू ँ बरसां सू ँ बण भ्रभ्यास कर राख्यो हुव—भ्राज री स्थिति रो सामनो करण खातर। सुथारी बोली बीनणी कुण जाणे गाय किलीक दूभसी पण दूध ड र टक रो पाच कीला सू कम नही हुणो चाहीज बूढी भला ही हुवो बाकी गाय ह खरण री।

'पला ही काई ठा माजी 'वहू बछेरा बिकरां मीवडियाँ परमाण कुण जाणे किसी घड बठ ? दूध कम पाव दिन तो काम म को लेवानी, पछ दोहीतै खातर एक बडो गिलास भर र बिना पूछ्या ही ले लिया करो करा जिक दिन घर बरताऊ छाछ मोकळी ले जाया करो।

"दाम करमो म्हांन तो, म्हारू देसी नै बरस बीतग्या रळी पा ही बाहरै पन किणी थारी बणी बठै ही ? इसीं घरां में जाऊं होती पाळी म माहू पूरमैं री बारम्न सा कर्ई भला ही हुग्यावो, पण मजान है कठै ही मोळी साह हगाळी म टीवो देवण नैं ही सावै ?'

'मोठ री हाट तो मावो मोटो ही करणा हुणी ?'

श्री नै मीठा महीं भेर कंवला चाहीजैं बीनणी ! धाम-धाचै गरीब भर भागवान सगळा रैं वो एक ही मुगनियो पी बरतीजै वो री दो टळी जाणा सब कोई तो भर तो सायत बो नहीं ऊमर हुव ता, पण आ म बाणी मठ पी भा रवनी ? बारण थारै मोटरा ऊभी, भर भपणा दही म्हातर मूंडा बजार सानी किया भन्दोया री गळा सानी हुन रा। बिलोवणा सा तमाम्न बाई, प्रभु रो प्यारो ही करसी।"

'इयां ता सगळी प्रभू री हा माया है माजी पण पधार रै मानखै म नकना मूं मोह आदा भर भमसी सूं धम है अब पूजा रो जुग है नी प्रभाव तो थापगे दिसासी ही, प्रभु री हुवै भर घर मनि हुवै माडी तो भला ही बचो, नहीं तो मुश्किल है यघला।

सरलना री एकसी धरती पर हुण सूं जानका भर माजी ॥ बडा हेत हुग्यो। रोज इ ढग री बातां हुनी। गाय दूध देवण लागगी। सींग एक पडते सिगल सो हालतो त्रिको हालतो

ही हो, काणी ही जिकी ही ही पण दूध साढी छव सात कीला टक रो देवनी। रोज बिलोवणो, छाछ मट्ठो माखण मळाई सँ मगळवार न थेऊ हडमानजी रो—अमावस पू'यू कदेई खीर कदेई कीटी रा लाडू तो कन्देई गाजर पाक अर पेडा। खीर थका, बासी धगण, गळी टीडसी काणा अर कुचमाथला काकडिया अळसायोना आलू अर मरी बुलावै जिसै मूळा सूँ कुण माथो लगावतो ? बास म कई घरा म दही कन्देई कटोरी कटोरी खीर बाटती जानकी। बास सूँ कोइ न कोई टाबर कोई लुगाई पनाई छोरी छीपरी सदा ही दीखता रसोई धनै। बडिया आज म्हारी माँ रो माथो दूख चाय करसी थोडो दूध घालनी आज म्हारा बनोईजी आया है, म्हारी माँ आधी गिलास दूध मगाव' इया माँग सगळा री एक ही कवण रो ढग अर स्थिति न्यारी न्यारी ही। जानकी हाथ रो उत्तर दवती, मूँढ रो नही। वा दिन भर गाय अर चूल्हे बिचाळ फिरती ब्याह र घर म बीनरी माँ सी पण बिना उथपी बिना उदास।

जगदीश देसतो आवतो पीवतो चाय छोडदी धान कम हुग्या शरीर म ठीक हुग्यो पण मन बीरा ओजू ठीक को हुयोनी। बो थोड दिन पैला रोज जानकी रो विरोध करतो उग्र अर विरोधी नेता कुर्मी रो करतो हुव जिया। गाय न गाळ काढना मूखो समाज वाली चोपका न काढतो हुव ज्यूँ। गुमान री गध अर वहम री मली रज बीर माणस म बठगी पण जानकी र अतराल म इसो कोई विकार ढूँढ्याँ ही को लाघतोनी। जगदीश सकता आपरी कमजोरी

सूं जानकी मुळकती सगळा रैं मगळ सूं।

एक दिन बी रैं दफ्तर रैं रिटायरमण्ट री नदी किनारे ब्लड सुपरिटेंडट कैया, जगदीश जी मैं सुणी है आपरै रोज बिलो-वणो हुवै ?'

'हाँ सा'ब।'

'एक मज है पार घालो ला ?"

"फरमावो।"

मनै महीना बीस दिन दवाई चाटणी है चूँटियैं म। मोल रैं पर मनै विश्वास नहीं, लोग दूध म वनस्पति घाल र बिलोलैवैं। दो पइसा भर चूँटियो मनै पर अध सेर तीन पाव छाछ म्हारी माँ नैं पीळियो हुयो इ खातर चाहिजसी। हूँ रोज आदमी भेज देस्यूं आप रैं घरे।'

'ठीक है सा'ब' जगदीश रैं मूंढ सूं सैज भाव सूं नीकळ्या।

बो मिझ्या घरे आ र कमरै म बैठग्यो। चरखे पर तार काफ भर टूट ज्यावै—फेर सांध फेर बिया हीं। आपा हाँ तो भरली पण जानकी नैं कैवा किया ? आ मटगी तो ? छाछ री तो खैर कोई बात नी पण चूँटियो छटाँक आधी छटाँक रोज महीने भर— एक दो दिन हुवै ही तो भी कोई बात नी ज अण कै दियो क लोगां रैं घरां पर चूँटिया चाटता मैं ता कोनी ही देख्या नी इमो चूँटिया चाटणो है ता घर में गाय पालो—पारैं इसैं मुफ्तियैं साथबा सूं दफ्तर

भरग्यो है हूँ कींन कीनै चूँटिया चटास्यूँ—थानै ही कुण ही ग्राज तांई चटायो हुसी ? ग्रठ कोई चूँग्यै रो सदाव्रत थोडो ही चल ? तो फेर ? ग्रापा तो बीरै ग्रर बीरो गाय रै इत्ता विरोध में हा जित्ता कोई मादोवाम्नी पूँजीपत्या र पण ग्रापा बीं ग्रादमी नै नटता किया ? नौकरी मैं जिक ग्रापणो पूरी मदद करी।" दूसर ही क्षण बण माथ्यो इन महीन रा साडी छयम सातम रिपिया मिलै, टैरालीण पर रैड एण्ड व्हाय्ट ग्रर कैवेण्डर पीय, कोकाकोळा सूँ हाजमो ठीक कर ग्रर एक गाय को राख सकनी—छोरा न्नि म दो दो सो देख—ग्रर कपडा कत्पक रा सा परथाँ बजार म बिकाऊ बीन सा फिर—जानकी ठीक ही तो कवती ही मन करदे करे ही। ग्रापा गळनी करी, कणो चाहीजतो हो ग्रापान, 'सा, हैं थीन पूछ'र करयूँ'। व्यवहार म कफोळ ग्राम्मी रो हाल माडो ही हुव ग्रर जिक म बिलोवण खातर लुगाई रो जा इत्तो नाहीं हुव क बा बिलावण र भज सूँ डरती दूध परली मळाइ पूता न तो काई परमेसर न ही दणी को चावनी।

ग्रचानक जानकी कमर मे बडी। जगदीश रो कुंकडियो सगळो खिण्डग्यो। दूध री गिलास बण मेज पर धरदी। ऊपर थरकण ग्रायोडी ही रोटी सी जाडी। जगदीश र जी म ग्राई 'दखा कहूँ तो सरी एकर पण विचार कागोलिय ताँई ला'र पाछो ही गिटग्यो बीमार बाळक मोठी कपमूल गिट ज्यूँ। गिलास पडी रही बा पाणी रो गिलास ले ग्राई कुरळ खातर। बोली, पिवो कनी घणो ठडो काँई कामरो।

जगदीश तावली जीभ सूं होठां नै कैयो, 'पीलस्यूं इती काई उंतावळ है ?"

"थैं दूध पाच है काई ? इता होळैं किया बोल्या—गवन नियोडो बाबू बाल ज्यूं—वा दूध हजम को हुवैनी ?"

'नहीं, इया हीं।'

"तो हो ?"

"हूं कैणो तो वा चाव हो नी, पण,"

पण काई ?'

'कणो पडसी।'

'तो फेर भलीको कौन हो ?'

जगदीश साच्या "चन्द्रमा मवार हुणो तो समुख ही चाहीज। बोल्यो "मैं तो थार विश्वास पर एक हुंकारो भर लियो।'

'छोरी री सगाई रो ?

'नहीं ए,सगाई मवार ही किसी ?"

'तो ?'

'म्हारै दफ्तर रो सुपरिटेंडेंट है, भलो आदमी है—आपरी जाळ। म्हारी बण खासी मन्द करी एक दो बार। बो महीनो बीम दिन दवाई चान्ती चूंटिय [illegible] बाल्या आप छठ्ठीक रोज चाहीजमी भर आध सर तीन पाव मोठो दाळ वा म्हारी मां नै, पीढ़िया है थीं न—हिसाब भर पईसा देस्यूं उपकार मानस्यूं वो अलग, इ स्यूं बसी तो हूं काई क सकूं ?'

"टीक है सा'ब पण पहमां वदसा री विचार पावानी ही मत लाया।' मै क ग्यो।

सुणतां ही जानकी रो चरो एकर तो जिकै सूं घणों सान्त हुग्यो अर श्रांख्यां रा पाट हा जिक सूं ज्यादा विकासमान जाणूं धा ई श्रवसर री श्रडीक म ही घणा दिनां सूं। बा सेज समुद थाणा म बोली कै दियो तो क दियो—इण मोर कणो इया ही चाईज मुलायजो मान तो वींरी मोज नहीं तो वीरो क्ज है थां पर पुराणो इ मौके उतारयो ही सही भापार दोना हाथ साइू बसम बीतसी बात रसी बात न थाडी ही नमास्यो। दूध साइू धोरा म ही तो घाला हा टम क टम। राजी खुसी पिया भला ही, दूध पीयो थ ' कहपरी बा बिना माक म सळ घाल्या सज मुद्रा में थारे नीवळगी।

जानकी री 'हूं' रो इजबसन लागता ही अगसीन रो काळजो पाछो सागण जाग्यां बैठग्यो अर बीर मानस पर तिरतो महीनां रो मैल एक किनारे लागग्यो बो नितर र गंगाजळ सो निर्मळ हुग्यो। वीरो चिंतन री मछली एकर बीर छुद्र श्रह रै छीलर सूं श्रीबळ, जानकी र सज शान्त सरवर म डूबगी। 'श्रा इत्ती भर पच जस तो डुमै मे पकायो ढळो हु चोमका सूं बाळूं, गाम ई न किसी एकली नै ही चाहीज—दिसो, हूं अपस्वार्थी क टीडी सो खाली खाणो अर खिण्डाणा ही जाणूं, अर सकीण इत्तो, क बोली री सहानुभूति देवतो ही दारो अर श्रा म्हार सांकड स्वाभिमान न विकासमान करण म दिन रात एकसी लाग्योडी। ई री जाग्या जे कोई विदुद श्राधुनिक

लुगाई म्हारै हुती, तो आज सूँ किता ही बरस पैला मा तो [illegible] मन तिलाक दे ज्यावती अर मा हूँ अब उमर में घुळ घुळ मरतो।" ई ढग र चिंतन सूँ जगदीश अबै सागी को रैयोनी। वो गाय र नीरै चारै रो खासो ध्यान राखतो। छुट्टी छपाटी आळ दिन बो पर की हथफेरी करतो—खोलतो बांधतो—खासी सार सभाळ राखतो।

गाय नैं सत्तर अठार महीना हुग्या दूध देवती नै—श्रोजूँ टक रो दो ढाई कीला दूध देवै ही। एक दिन जगदीश बोल्यो, 'अर भाग्वो है लीलो तो खर आपा घरे नाखा हो हा, पण रोही री होड थोडी ही हुवै। बा मस्ती अर मोज ठाण पर कठै ? एक ग्वाळियो दस बारै गाया ले र शहर सूँ कोस पूण कोस ले जावै सूँ क तो आपा ही गाय नैं घालदा, चर आसी महीन [illegible] पाव च्यार रिपिया लागसी।"

'घालदो थारै जचगी तो हूँ क्यों पालूँ' जानकी बोली।

पन्द्रै बीस दिन हुग्या आवतो न। दूध अब सेर तीन पाव बधग्यो हुवैलो। जगदीश लिख्या दफ्तर सूँ आयो ही हो फाइला रो मायो फिरोळतो फिरोळतो, नाडा कीं घावै ही पण समझदार जानकी दूध री गिलास मेज पर पैंमा हीं राख राखी ही—दूध री काया लीला री चम्कण सूँ ढकयोड़ी हुया लाग ही जिया धवेत निर्वासिनी रो सिर कण हो जाडी केसर भर चेंण री पीठो सूँ ढक दियो हुवै। जगदीश पैला चमच सूँ मळाई रो भोग लगा'र, ऊपर मूँ दूध री गिलास छेंड करदो। बोल्यो, जानकी धरती रा असली जीवण तो

भ्रो है, पण मिनै की मागी न ही है — दारू री बोतला घर जिनावरा र मुर्दे हाडा म जिका बीवन सोध बै मळाई री ममा काई समभ ?

'पण मळाई अड भ्राडम्बर री छाया नीच को पळै'नी,' बा बोली । जगदीश की बोलू ही हो, का, बाँ न सुणीज्यो बाबूजी घर मे ही हा काँई ? जानकी उठ'र गई परी ।

''कुण हुसी ? जगदीश पूछ्यो ।

भ्रो तो हूँ पीरियो ।

'क्यों पीरू खाँ गाय धायमी काँई ?"

काई बताऊ आपन ? कह'र बो ढीलो मूँ किया कसूर-वार सा सामो खडो हुग्यो ।

'क्यों इसी काई बात है पीरू ! कह तो सरी ?

''गाय न का तो कण ही दूसरी गाय मारी दीस का बा पण डिग'र भ्रापे ही पडगी हुव । मैं भ्रावती वळा ई न बीन दावी तो, रस्त सार एक भ्र भ्र म पडी ही उठावण री चेष्टा घणी ही करी पण न बण पग ही साम्या भर न नम ही ।"

'जिय है क मरगी ?'

"भ्रोजूँ तो सास है सा ।"

'तो चाला ?

भ्रापरी मरजी है चालो ता भला ही, पण पाछो खडी हुनी मनै की लागीनी दो च्यार घडी मागो भला ही ।

'खैर दखो आसी लावण ज्यूँ हुमो तो कोई उपाव करस्या नहीं तो हुया, चूकी दूकी , कह'र जगदीश बी साग जिया री टुरू हो जानकी ही आयगी । बण ही मत्तो कऱलियो । दिन ओजूँ दे सवा दो घटा पड्यो हो । पुगस्या जाम्या सर । नस नाख्या गाय खुल्लँ ख ऽघेड़ै मे इया दुख पावँ ही, जिया की महाकाय दत रै फाडयोड मूँ म सदे सिद्धि तडफतो हुव । सूरज अस्ताचळ र लारै लुकण री त्यारी म हा अर लोहिया राग धरती पर बिण्डँ हो।

पगा री चाल जिया ही बीरँ काया मे पडी बण नस उठाणी चाही । उठण खातर लारला खुरिया घणा ही खोतरया पण फालदू । काई कर ? पण शरीर अद साथ नही देवँ, तो आस ही आडी आव, अर आस आग री एक । बण जानकी खानी एकर इया देख्यो जाणूँ बा इत्ती ताळ बार वरसणा न ही घडीकँ ही, फर जगदीश खानी एक पळ जोमो जाणूँ बी न खाली इत्तो ही पूछनी हुव क 'क्यो राजी तो है नी तूँ ? अर बीसीजतै सूरज सागै बण ही आपरी जीवण किरण समेट ली ।

य केवता हा नी कदेइ, के धीसाई घर सूँ लागसी ? जानकी ओळ स कैयो ।

जगदीश हारयँ जुआरी सो टकर जानकी खानी क्यो — अर पर बँ, घर खानी चाल पडया ।

फेट मे आयोडो



टोपार री घटी बाजी खासा छोरा दोडपरा स्कूल र बार एक गाड र चारू मेर ह्या भेळा हुग्या जिया चौराव पर पडी गुड री भेली बारकर आ दरा। पाळै रा दिन हा घणखरा मूंगफळ्यां पर ह्या ऊतरयोडा हा जिया टीडी मोठा री साव सूकी नघरी पर। केई चरक मरकै रा चटोकडा बासी कचोळी वूस्योडा समोसा थोडा डूंगर साई मर डकोळी भुजिया बडो स्वाद से ले ह्या खावता हा जाण घरे इसी चीजा कदेई बारतिवार ही बापरती नहीं हुवै।

एक मली सी चाडकी म थाडी सी चाट पडी ही जिया घणा दिना र हळक लाल मन मजिय र गछ पूंछण पाणी म मोकळा मसोता निचोयोडा हुव। बी पाणी री मैमा छोडा गाडै माळो कचोळी म अंगूठ खनली मागळी सू माळा रा मूंगिया माव जिता जिता दो कोचरा कर थीरा च्यार टोपा इसा दोरा नाखतो जिया कोई लोभी कम्पोडर की गरीब री दूखती आंख्या म दवाई घालतो हाथ काठा करतो हुव। पण छोरा स्वाद रा इसा रसिया क कचोळी खाया पछ ही कागद न एकर ह्या चाटता जिया कोई वूकरिया आमरस री

ऐ ठी कटोरी नै। केई कीडा रा कूचा पेमजी गाघडा ऊँधा हू हू बाकै म ऊर हा जिया कोई आँधी पिसारी घट्टी मे गाळा करती हुव । लटटा टाळ टाळ खाव इत्ती टैम कठै बीनै ? चटोकडा मे स्वास्थ्य अर सयम कठ, खावण खातर ही जलम बापडा ।

गाडै म एकै पास एक मलै सै ठाठियै में, अन्दाजै पन्द्रै बीस डळी पिण्ड खिजूर री पडी ही, बाँ पर माख्या भिणाण ही कब्जो कर राख्यो हो जिया जनतन्त्र म एकर सत्ता में आया पछ गुण्डा कुरसी ऽर, पण गाडै आळो इस्यो समभदार कै बीज बोरिया र बोपार म तो खूब रत अर खजूर खानी इत्तो बेपरवा जिसी भारत सरकार अक्साई चीन अर पाक अधकृत काश्मीर खानी सू हा कदे कदेई बीर हाथ री स्वाभाविक हरकत सू, माख्या एकर थोडी उडती पण पाछी बठै ही बैठ ज्यावतो जिया सयुक्तराष्ट्र रै रोळै सू इजरायली अरब री सी पर । ई भीड में कोई काई भाग र भरोस जीवणियो इसो ही दीसतो जिको दोव्यार डळी माख्या रै मू सू कढवा आपर मुखारबिन्द पर मेल एकर स्मरण रो अनुभव करतो । धन है बी री समझ अर धन है बी रो खिजूर सू हेत । छारा रो बठै ही खाणो अर बठ ही मूगफळ्या रा छोडा केळा रा छूतका, खिजूर अर गाघडा री गुठल्या चाट रा ऐठा पत्ता पगा मांखर इया काढता हा जिया गुवाड मे मांखी कुत्तर न टोपडिया गाय अर गधा खुरा मारर ।

केई मरतोड भावत छोरा र मूंडमानो इया देख हा जिया कागला पीजरै म पडी परसाद री थाळी खानी, पण केई बेताज

बादस्या 'मारदडी' म इत्ता बेपरवा हा क हेलो मारया हो चगोवडा रा चरा को चितारतानो जिया कोई बीतराग फक्कड लिछमी अर लुगाई न का चितारैनी।

सूदाप री घळी पर पग राखता एक गुरुजी चोवीदार री कोटडी री बारी म बटा छारां री चाल ढाल इनी तणमयता सूं निरखे हा जिया कोई गाव रा नु बादू जपुर र गणगौर मगरिय न। एक छोर खानी बीरो ध्यान गयो। छोरो गाड सन मायो बोल्यो

मास्टीजी दस पइसा रा चिणा देस्यो ?

'देस्यूं नही तो वेसण न मल्या है ?" पड उत्तर मिल्यो।

'पण, पइसा मबार को है नी काल पचरायत दे देस्यूं।

'ता पर काल ही पचकायत लिय मबार एड लगा।'

भरोसो राखो पन्सा मापरा का राखूंनी। खासी नरमाई सूं छोर कया।

गाहक नही मिलसी जद तन हेलो मारूं हू म ढो धो र त्यार राख गाड माळो की चिडपरो बोल्यो।

माथ रै लाटै म डुबो र काढ्यै करचा सी कोभी बीरी बत्तीसी टाटिय खायै अंगूठ सा जाडा बीरा होठ हवेजी र दाण जिता जिता मू ७ पर माता रा दाग नाकरो पुळ काई दूर में दुआब री धरती सो बराबर अर आग स ऊंठ र मीगण सो ऊंचो उठयोडा—मदान म मणभोपती बीरान डूंगरी सो नख वद्योडा अर मल सूं भरया जिया फूड रो मायो छोर मू—मायो बोदो बील

सो साव मफाचट—चाँद री घरती सो कोरो मल सूँ करडी कालर रो चीकट कोट, दाडी मूख हडताळी री सी बध्योडी अर तिल चावळिया मूँछा छोदी पण उळझ्योडी इसो न बात करता क्दे कदेई मूँ म आव इसो सो आदमीडो गाड माळो पण अबार आपरै गाड पर बैठो मोल जोल करतो अपण आप न केद्र रै खाद्यमत्री सूँ बसी अर गिल्ल मे पइसा खालतो वित्तमत्री सूँ कम को समझै होनी ।

घणो घस्या चँदण मे ही गरमी आव छोरो आप कीं आव व'ळ र बोल्यो थारी चीज है, पोसाव तो द नही पोसावै टाळ सही ई मे चिडन री कांई बात है ?'

अच्छा बाबा हाथ जोडूँ तन, म्हारी गल छोड को पोसावनी मनै बम, दो पइसा बदूँ जिक सूँ तो मत राख ' कह परो बो आपरी साल जोख म लागग्यो अर छोरा आपरै रस्त, पण बी र घर र पाणी म एकर परचो खाग्जि हुयोड विधान सभाई उम्मेद वार री सी एक उदास मछली ऊपर आई पण पाणी मे फूटत बुलबुल सी बी बळा ही पाछी बळगा ।

मोटी दोवटी रो एक चोळा लोगड रो पजामो तेळ री सूळा सा खडा सूखा केस माथ उघाडो पगा मे टायर री सस्ती चप्पल, कोई उठतो मजूर नेता सो लागनो बो, वेस अर बणावट दोनां सूँ चर पर न गरीबी न गुण्डाई । गोहूँ बरणो रग बी म एक उजाम अर उजास मे एक इसी सादगी जिकी बी री पोसाक मे कम चैरे

खन ही एक वाणिया रो छोरो बडो हो, माख म बोल्यो, लडाई क्यों कर लै दो च्यार मूँगफळी लेव ता हूँ देऊँ ?'

'रणद इतो दातारी न कायला र ही जे काछडा हुता तो उडता र क्यो दीसता नी ? पाँच पइसा रा तो गाठिया लिया है, थारी जाडा रै लाग ज्यासी तो ही घणा है, म्हारी चिन्ता करण री मैरबानी राख ।'

जवाब इसो जुगत सूँ दियो कँ अगलो दूसर भळै चुसक्यो ही नही । परियाँ केई छोरा बीरी क्लास रा खडा हा बो बठीनँ ज्या मुडग्यो जिया कोई ससद् सदस्य चुणाव र दिना मे मापरै चुनाव क्षेत्र जानी । दो छोरा र कन सूँ पइसा माग्या बस उधारा, एक तो हा तो ही साव ओछती माग्यी गिटग्यो, जिया कोई तस्करियो इनकम टक्स री रकम पण 'मनाणा सू ओळखीजे ऊँठ री माँ साँड" बो बी नैं माँपग्यो बोल्यो, झूठ बोल, दिसा गूँभो ।'

छोर रो मूँ उतरग्यो जिया की नागै सकुसलवादी माग वजा ब्याज उपजावणिय की बाणिय रो। छोरो बोल्यो 'रिपियो तो है एक, पण हूँ भँगा को सकूँ नी ।'

क्या ?"

दादो सा लड़ै

"अर तूँ अबार अणाभाँवनो ही गिटँ हो ले ले र जिको ? पण खर थारो दादोसा लड इसो काम मत करे, पण हूँ धरम रा थोडा ही माँगतो—उधार ही तो लेव हो । बिच म ही एक छोरो

बोल्यो 'जाणा थारै दादै सा न पइसै लारै कुम्रै मे कूदै जिसो, गव गाळा रो कुत्तर पालो जीभ, गाया सूँ ही को टळयोनी तो भ्रौरां नै बो समझ ही कोई।" वाक्य पूरो हुयो ही हो, एक दूजो छोरो बोल्यो, कुत्तर पाल न मारो गोळी गोधा रो गवार कठ गयो ?" फुँड मासू एक आवाज ऊँची आई, 'बींरा सियाळै मे लाडू करा लिया।' पडुत्तर गूँज्यो पाछो 'अस्सी साल री ऊमर म, जद ही बापडै रा गोडा ओजूँ हालै स छोरा एक हळकी सी खळखळी दी। हँसी रुकता ही एक समझदार आवाज बात नै थोडी भ्रौर टोरी बी दातार दादै सा र तो ई जिसा भाभाशा ही जल्मसी फालतू कोई रीस कर क्यो दोरो हुवै भर क्यों बात बधावै ?' बो छोरो जिकै रै हँसत मँवळ पर भी छांटा पडग्या एकर साव सूकग्यो भ्रर अपमान री माथी म गयो कठ ही भीड मे।

दूसरै एक छोर खनै सूँ वण मौग्या बो विश्वजित् यन म सवस्व लुटायै राजा रघु सा बोल्यो, 'उस्ताद पाँच मिण्ट पला भावतो तो जरूर देवतो की खायग्यो की खवा दिया, भब तो साव खाली हाथ हूँ, सँभाळ ल भला ही गूँभा अै पडघा।'

सँभाळघोडो ही है, तूँ किसो भूठ बोलै ? कहपरो बो आगीन नीकळग्यो। भळे को माँग्यानी की खन सूँ ही वण, राजनीति सू स-यास लिय नेता सो उदास बो स्कूल री बाउडरी सूँ बारै— परियाँ सिजियाँ खानी गयो परो।

वठा बठा गुरुजी सोच्यो म्हो छोरो कदेइ मूँगफली अर कचोळी खावतो आपणी निजर म को आयोनी। चिणा मोलावै जठ पेट री माँग है, जीभ री नही। आज ही बापड केस कतराया अर आज ही माग रा गडा पडग्या वेजा है। जादा नही तो इसी मदद तो आपा ही कर सका हा। पइसा तो पाछा दे ही सी आज नही तो काल गर इया करता ही जे नही दिया तो आपणो किसो भाग लूब ? दस पइसा म तळ थोडा ही बठा ?'

बीर काळज री कोर पर मज ममता री एक ना ही सी बादळी उठी बरसण खातर पण अणहूँत री आँधी म ही विळाईजगी —आपर छुद्र घटाकाग म, टोरो पड किसी पोल पडी है। बाँ जळदी सी आपरी जेब म हाथ घाल्यो बीन रो काको कोथळी म घालतो हुव जिया।

जेब म च्यार पाच पुराणा पोस्टकार्ड, केई अरजीपानडा, दो एक परचूण रा पाना, एक परवार नियोजन रो विग्यापन दो तीन बस रा बोदा टिकट केई बीरुप ब्यावा री कूकूपत्री एक रफ टाईम टेबल, अर तीन च्यार जाग्या री तारीख नीकळयोडी लाटरी री केई टिगटा ही। जेब बड डाकघर र लटर बाक्स सी हलाहला र भरी ही। कागदा न फक्का भडका जेब एकर भळे सँभाळी बूगो बिसायती वुगचियो सँभाळतो हुव जिया पण भोमोती न जे चाद री कोर दीस तो बादटा सूँ बरसै जेब र गाभै म रेजगी री कोई कोर चमक लोट रै चाद रा ता सपना ही बठै ?

दूसरी जेब सँभाळी तीन च्यार चाव रा टुकडा दा मनामीन री गोळी अर एक चरम रा घर, मिल्या। तीसरी जब दिवाळियँ री तिव्रुरी सी खाली पटी ही। घणी ही जुँभळ आई, पण मणहूँत माठै सूँ काटी हुवै।

हिडदै क्षितिज पर उठी ई मोळी बादली नैं प्रत्यम साथ री एक धीमो बायरो इया ले उडसी वा कदई को आणीनी। पीरै माळ तो सासर जमाना वाळन नैं ? बाँ चिलम पीवत चोकीदार नैं पूछयो—'देवा ! दस पइसा है तो दवनी एकर।'

'आज तारीख सत्ताईस हुगी गुरुजी हूँ तो आप झाळी भात न मडीकै ज्यूँ मडीकू हूँ पैसी नैं। बा पडी दवडी माळै मैं फूना पडयाडी आख सी उपाडी', बो नास्या म सूँ धुँओ निकाळतो बोल्यो पण बाँ भट एक दूसरो उपाय सोच लियो। अभाव री हळकी पून म उडनी बी बाल्ळी न उधार री सजीवणी पर बा पाछी खडी करणी चाही पण बौफ धरती रैं बीज सी बा मन री मन म ही रही। घण्टी पाछी बाजगी।

छोरा उपरथळी आप आपरी क्लासा खानी भाग्या जिया हवाई हमलै री वेळा साइरन सुण लोग घरा आग सुन्न खाया खानी दौडता हुव।

बाँरो छठो घटा खाली हो। दम पाँच मिण्ट ठर वैं हैड मास्टर रैं कमर म बड्या तो बो ही छोरो हैडमास्टर री मेज आगै खडो दीस्यो। बाँ एक कुर्सी लो अर ण्वै खानी बठग्या। अबै बाँ

बीन मोर गराई सूँ देख्यो जियां निमधी निजर री काई बूढी लुगाई पाडोसण रै जवान जवाई न चाव सू चितरती हुवै । छोर रा दांत तौत म पाय दूधिय मोत्या सा पूठरा बीं न लाग्या । बीर चर रै वकतै विवेक साग ऊमी प्रभुता नै देख, बी साना बीं ग्रांख्या मोर चौडी करदी । हैडमास्टर री मज पर एक दम रिविया री मैला सा एक लोट पडघो हो । बीं पूछ्या बीं न बठ लाय्यो मा तन ?

बीन सिणियां म ।

काईं कर हो सू बठ ?

'पसाव करण गयो हो ।

पढ़ै किसी म ?

'दसवी सी म ।

नाम ?

जीवण ।

जात ?

'माळी ।

बाप काई कर ?

गुजरग्या ।

मां हुवली ?'

'नही, बा बीं सू ही पला गई परी ।"

"तो ?

"दादी है सालो एक छोटो भाई मर बी सू छोटी एक

वहन ।'

'घर रो काम पछै ?'

'थाडी कर लेवा, की खेतीपाती ।'

"घर कठै ?"

'कठ सूं अधकोसेक पर ढाणी है, बठ ही ।'

हैडमास्टर एक मिण्ट तांई बीं रै चहरै साम्हो ओ ताकरयो जियां कोई चित्तरो कळाकार अजन्तारी कारणी साम्ही । बीं रै मांयलै व्यक्तित्व रै त्रिकाळ रा तीनूं खूणा रस मूं सरोबार हुग्या एकर । बीं रो विनोद हँसी म, समझ विचार म अर मन अचम्भै म । तीनूं हुया सागै ही सक्रिय पण दोन्यां साम्ही पैलो ही होठा पर—दूसरा दोनूं ही, जीवण कैमरै मूं बारै ही को झांकयानी ।

'शाबाश' हैडमास्टर उठ र थापी दी बीं रै, काल प्रार्थना रो टम पूछ र देखा पछो करस्यूं लाट की रो है फेर सगळा छोरा आगै तन इनाम देस्यूं अबार तो तूं जा ।

छोरो सैज मुद्रा म चुपचाप नीकळग्यो जियां कोई डयूटी रो पक्को डाकियो बीं री जरूरी डाक द र जावतो हुवै ।

गुरूजी रै उदास अर अमूजयै चहरै रै पाणी पर अबार खुसी री एक लहर इसी आयी फैली जियां शीतळ मन्द पून म सैंट री सुगन्ध । आंख्यां रा हाठ बन्द कर एकर दो मिण्ट व ब्रह्मानन्द म डूबग्या अगाध पाणी री माछली सा । बारी आंख्यां आगै दो घण्टा पैलां रो एक दृश्य नाच्यो जीवन्त मोपटचा मूं दो मोनी नीकळ्या परनाव

र बराबर था, बच्योडो दाडी र भाडभखाडा म गमग्या ।

अबार दूसर घट मे सुगनो कुंभार बीर सनकर नीकळयो । कमठाणो चाल हो स्कूल में दो रिपिया रोज म मजूरी करै हो अठ । मजूर तो आधी दजण नडा और ही हुआला अठ, अणपढ पण स चालती गाडी रो चक्को काढ देता, इ सो सूधो अर डरपोक तो मो ही हो ।

गोडा तांई री धोती, घरे सियोडो कुडतो अर सिर पर दोवटी रो अगोछो पोसाक बस इत्तीसी । जूती काई ठा हुई हा सी पण घणखरो डीम उबाणो ही पगथळी टण र टुकड सी पक्की अर हाथ भळ सू नीकळय हूँठिय सा । आव पूरो, पांच छोरी तीन छोरा अर मोजूं किसो बण्यू लागग्यो । बूढा बाप यागे । पाव पाव खाव तो ही दोनूं टैमा म छव सात कीलो दाणा सूका चाहीज लगावणा हुव तो दो कीलो जादा । रिपिया मिल साठ बही थित बध्या कठ ? लुगाई बिचारी जरूरत सू जादा तप तो ही जीवण निर्वाह' रो पाळो को रवती । बडो पापड पाणी पीसणो चोका बरतण मिल ज्यू ही करल कदास किया ही गाडो गुडक पण मू थाई रा धोरा इत्ता ऊचा अर घणा क पाँवड पाँवड पसीनो आव ।

भो गुरुजी र पाडोस म बस ई खातर सनकर जावत न देख, सैंज भाव म बाँ हेलो कर लियो बीन सुगना, ववतो ही, थोडो करवो पकडाए तो ?

'लाऊँ सा करवो मेज पर राख बो सामो खडो हुग्यो

मून पण उदास ।

गुरुजी पूछ्यो "आज तो की उदास दीसै सुगना ?"

इया ही' मन वायरो सो बो बोल्यो ।

उदास ही कोई इया ही हुया करै ? बात तो की न की हुणी चाहीजै, बता थारी मोज पड़ै तो ?'

'काइ बताऊ सा, रोया किसो मिट उदास पणो ?"

'कुण जाणै जे ई ढाळ ही मिटणो हुवै तो ?"

"टावरां री मा दस रिपिया रो एक नोट दियो मन, एक मठाणी मन सूं लाई पांच सात दिना रै बण पर बडो दोरो केई वगार काढ र बीरी । बोली 'मांवसा बाजरी लाया दसेक कीलो, पण लाऊं किया जद करमा मे काकरा ही लिख्या हुव ।'

'क्यो ?'

लोट तो कठ ही टेर दियो ।"

मर्वे ?"

"मब किमो कुणो खाड करूं,बात चूलै री है देखा सिख्या किया जग वो ? टाबर दा ताव म पड्या है, अकाळी की थारी सजाणी ही याव नै प्राव लाग, थोडो ईसबगुळ लेजावसो, छोरी एक दाए घ्यारे सोवण वाळो है, विध मिल जद म साग ही , वह र वो चुप हुयो ।

ई नै बीन सूं वठै ही उठ्यो बैठ्यो तो टूवैला, दसतो वठ ?

देख लियो सगळ।"

कौन ही पूछताछ करतो ?"

ना भो गुरुजी कौन हीं पूछ र तो उल्टो भरम गमाणो है। ई टम म जेब म पइसा पइसै नै ही पार करल लोग ता लाख्या पछ तो देख ही कुण ? लाख्योड लाट नै ता लखपति ही सुगन समझ तो थोडूमोडू री तो बात ही छोटो। भठ पांच पांच स छोरा की रो नाम लेऊँ, भर कौन बूझूँ भाला देखाया हो कोई भो हाँकरनी, फालतू कोई गळ भौर पडै जोग री बात। कह परो भो मूँ लटकायां नीकळ्या भर जांवतो गुरुजी री नाडी म एक तूफान छोडग्यो।

म्हार भो लोट हैडमास्टर री मेज पर देख घणं दूँ मयी जणो बांरी नाडी न कणी थिरता भनुभव हुई। बांन भापरै पुण्डरीक री हर पासडी पर, लिखयोडो दीस्यो, वाह भगवान गूरभ्हया म—कठ कठ ही तो किसीक लाला नीपज जिका रो माम धरती री स बका मिल र ही को कर सकनी। हण जिको दस पइसा उधारा मांगतो हो जणा जणा खन मूँ जिणा खातर। बो चांवनो तो भो पइसा मूँ सौ गिन जिणा खा सवनो हो ई जमान म भा निष्ठा न साधुता म न मसद भवना म भर न कायकारिणी री कुरसी म।

हैडमास्टर भागै वां भापरी जीभ खोली म्हार मनेख्याने भो लोट एक गरीब मजूर रो हूणो चाहीज।

किया ठा लाग्यो आपन ? हैडमास्टर बोल्यो।

दो पट्टा लिया है नहीं हुव तो थे आप ही पूछ लेया थारै चेलै नै"
पनवाड़ी जार द र कैयो ।

तो पेर हुवै ही सा ' वहर वै टुग्या बोभल मर दावाकुळ मन सूं पण थारी चेतना री धरती में ऊँडी वैठी विश्वास रै साटै (पुनमवा) री जड़ सूकी को ही नी बळवि ऊपर भावण री ऊँतावळ म ही ।

× × ×

पन्द्रै बीस दिन री बात है, जीवण एक दिन उदास मर हुवा उदयोहो सो न्हायो खायो जावै हा जिया कोई खाता पकडीज्योडो वाँणियो कचेडी री तारीख भुगतावण जांवतो हुवै भागरा सामन गुरुजी टकरग्या ।

"भ्रो हो, जीवण ? गुरुजी बोल्या ।

'हाँ गुरुजी ।'

'मैं सुणी ही तूं ससपेन्ड हुग्यो हो सारलै दिना ।'

'हाँ हू तो गयो हो गुरुजी, पण भाज ही हुग्यो समभा पाछो हुकम भाज हुवण माळा है । रिपिया तो लर, हजार भाठ हमर बळहीग्या गुरजी पण भा री मन इणी चिन्ता ही का है नी मस रो मत है, भळे हुग्यासी वै ता पण नासा दाट म परेसानी मोकळी उटाणी पड़ी—भा जरर मूँघो पड़ी ।

गुरुजी वीं सानी एकर दयां न्हयो जियां बांन भा वैम हुवै र दो बा साणी जीवण सायन ही हुव जिवैं न मैं जाणता हुव ।

काँई देखो गुरुजी ?'

'देखूं कदेई थारै जिस्यो हो एक जीवण म्हारै काळजै रै आंगण खेल्या करतो बीं न न भूख लागतो न तिस, न सिफारिश चाहीजती बी नैं अर न कायदा रै खूटलै रो मोह ही हो बीं म । बो तो बाल्स्या हा, बेताज अर बदाम । दूसरो जीवण थर मर है तो बिस्यो ही पण बीर भूख तिस अर कोढ रो अन्त न पार । इया मालूम पड बो म्हारला जीवण तो कठै ही मर ही ग्या साचूं बी री तिसाई लास (भूत) सडका पर अपटूडेट बणी दौडती हुवली, ई र उपरान्त ओ जे बो सामी हो है तो जरूर बींरा पग चोरा रै चक्कर म मायाडा है ।

सुणी मणगुणी कर, बो खायो खायो चाल पडयो अर देखता देखता भीड म कठ ही ओझल हुग्यो गरुजी बाको फाडता ही रह्या ।



रोग रो निदान



"हैं ए सुण है नी ?' मांच पर सूते सूते सुरज मापरी बहू रुक्मण न हेलो कियो न तो इत्तो जोर स्यूं हीं के बी सूं आखै घर री शांति ही टूटै अर न इत्तो धीमो ही क बो कमरै रै किवाडा सूं बारै ही न नीकळै । बा चूल्हे खनै बैठी झुक झुक'र एकाही फूंकां देव ही—लुहार री धूंकणी सी बण्योडी । फोगा री मध सीली लकड्या की बियागण री अधभोगी लालसावां सी पडी पडी धुख ही । रसोईघर मर आंख्यां दोनूं भरया हा, एक धम्र सूं अर दूजी आंसुवां सूं । एक इया जिया कुटिळ रो काळजो कुरापात स्यूं दूजो ओसरती छांटा म पडी कोड्या रै काळज सी ।

रुक्मण बरस पच्चीसेक री हुवली, गोरी गुट । आंख्यां मिरगी री सी, पण भाळो नहीं समझदार । घर पर पाणी पण न परिस्थित्यां री धून सूं हालणआळो अर न छिलरै सो इत्तो छिछळो हा कै लू रो पग पडता ही सूकणो शुरू हुज्यावै । पाणी री निरमळता इत्ती आछी क बींरो नीरोग चरो बी म आछी तरै सूं दीखै ।

आख्या म स तोप, पण बी म न आठम न अकमण्यता अर न बा भाग भरोस री भीता सू घिरघोडो इया अमूज ही जिया कोयला खाण री आधी कोटडी मेंवतो कोई बूढो उमार मजूर। पक्की रल री पटडो सी। हूंडलम री हळकी नीली साडी जिकी मल र कारण अबार खस घडघाड आभ सी गुगळो दीस ही, बी म निपटपाडो वा इया लाग ही जिया दिन म नील आभ न छोड चादणी सैंदे धरती पर उतर अठ वासो लियो हुव। तरळ ही सो सरी बा पण हा फियाड री खाडो सी परवार र पोन र जुगरी आधी सू प्रभ करण री लालसा म।

सूरज रै पैल हेल री कू पळ जाणू रसोइघर म छायो धुँअ रो बकरो चरग्या हुव ऊगतो न ही —बो रुक्मण रै काना ताई को पूग्योनी। की रुक र बो मळ बोयो – की जोर स्यूँ अरे बोळी है काई ? सुणता ही बा धुम मू अरी रसोई स खायी सो बार नीकळी जिया पाखण्ड र आळ न चीरती सजीव सवा। पगाव खानी था र ऊभगी बोलो 'क्यो कांई चाहीज ? हुकम करो।

काई करती ही ?

पूर मना पडया हा किता ही दिना स्यूँ मसोता सा। माडो उकाळू ही।

तो सावण सफाही नीवडगो ?

'दस पन्सा रो सोढो ही जद निठ पार पडयो है तो सावण रा खित्तर पइसा कठै सूँ आवना ?'

इनै म वरस दसक री वी री छोरी मनै ग्रा र ऊभगी । मैलो सो जाँघिया ग्रर गूगळो सो घघरो पैरण नै । वोली "वापू सन-लाईट रा तो पूरा पिचहत्तर पइसा लागै ।"

ल्छमण वोलो 'जा जा थारो काम कर रैण दे पचायत न ।' छोरी मूँडो उतार र गई तो परी पण जावती सुरजै रै माणस म उठी पीड न हिलायगी ग्रापरी उन्सासो रै योचै सूँ ।

सुरजै एक नाडी साम ले र ग्रापरी ग्राख्या एकर छात साम्ही करली कोई उपाय दीसै तो । उपाय ता को दीस्योनी, बी रै मिस जाणूँ ग्रभाव री पीडा ग्राख्या रै रस्तै बी री ग्राखी चेतना में ऊतरगी हुवै ग्रर जावती निरागा रा ग्राना निरागा बीरी ग्राँख्या री मिडक्या पर छोडगी हुवै । वण पीड नै भूलण एकर ग्राख्या मीचली ।

हाँ ना का" कवता हा ? ल्छमण धीरै सै बोली ।

"चावडी रो चामो हुतो तो गुटको ले र घाटा खुलावण जावतो ग्रस्पताळ बुलायो हो डाक्घर दस सवा दस बजी । दो महीना हुग्या घापग्यो पग्यो पडयो ग्रवै ही कदास लारो छूटै तो ।'

ग्रबार वणाऊँ पण-- ?'

' पण काई ?

'चाय है पर चीणी चिमटी ही को है नी ।'

ग्रबार जागो तो हुव ही लो !'

' हुती ता मनै किसी व्लक मे बेचणी है मठ ही का थारै

सू आछी ही बा ?"

कीलो श्राघ कीलो पाडोस्या सूँ ले आवती ।'

'कीलो ग्राघ कीलो कर कर दो कीला पैला सूँ ही भाय घर राखी है । इया कीरै किसी खाण है, घर घर माटी रा चूल्हा एक सा है सूं॰ मिंया ही रणो पड जिक सूँ तो पैसा रणा भाछो ।

पाडोसण तो एक श्रोर ही है ?

'है जिको रा किसा कण्ठ मोमीज असल है है जिसी सुख सू बसा वापडी ।

'जाणती तो सरी बीन ही एकर ?

जाँच र बठी हूँ तो थाँन कीई ठा ?'

उत्तर दे दियो ? '

'श्रौर बी लग है ही कीई ?

'बोली चाली सूँ ता ठीक ही हुणी चाईजती ही ।

श्रापर घर खातर तो थाम सी श्राछी ही हुवैली भर हुणी ही चा-जा पण मेळ मुलाकात श्रर सामाजिकता भी की तो हुना ही है ला ? देणलेण म गाघड री गुठली सूँ गई बीती—मेठ जोळ री पाटी पर द लिखणो तो दूर बरतो ही हाथ म का भालैनी । बस पडता हाथ री मल ही कोई बयान लेलेव । गरज हुबै जर तो गध नै बाप इसी मीठी क मिसरी ही भक्ष मार कोई की उघार पुधार मागल जद इसो चूठियो वोद्र अगल र क खायो पियो वाळद वरसा रो ।'

'तूं कद गई ही ?'

दिन दसक पैला गई हूँ ई खाड रै तुळी लगावण खातर ही। बोली "रिपियै ग्राठाना रा खांड रा दाणा था सूं को बपराई जनी ग्रर पर धार राखो है—मोटर साइकल फीटाई थारो ही मामरो रसो मोटर साइकल बिना किसो नाक फरै हो ? लोगा न पराय घरा पर मनीदा करता न विचार ही को आवनी ? बी पछै मैं तो मळे बीनै मूंढो ही को कियोनी ग्रर न जीवत जी मळे करूं ही। मूंढो हारण सूं मरणो आछो।'

आपा किसा चोरी कर र लावता हा उधार ही तो मागता न, इ मे मरण जीणै रो कां. सवाल ? फूंफो नाराज तो भुग्रा नै काठी राखो तनै हो सुणा देणी ही साफ साफ।"

"एकर तो बी म थाई को सुणाऊँ पण जाचक री जीभ ग्रर उधार मागणिय रै पगा म घणो सत को हुवनी। बा कह देवती, 'थयो भाई ही ग्रठै कण पीळा चावळ दिया तन तो ? उधार मागणो बिमा ही मेळ री कतरणी है ग्रर पर घर खानी पग धरता ही थे समझो शरीर रै थर्मामीटर म माण रो पारो कन्न्णान कठ पड्यो, ऊंचर ही है की न कीं।'

'थारी समझ पर मनै श्रद्धा है ग्रर थारी मरदानगी सूं म्हारो ठिगणो मन हरि रै पगा सा ऊँचो पण तो ही हूँ तग हूँ म्हारै हाथा खीच र लायोडी गरीबी सूं। थार माण स्वाभिमाण रै मम पर चोट लागै बीं पीड रो मूळ भी हू ही हूँ, आ सोचूं जद

रोष

म्हारै माणस म एक इसी टीस उठ कदे कदे ही, क रात भर नींद को ले सकूं नी ।

'ठीक है पण रामजी देवै बा सिर पर रों री किया कद राज मिल्यो? हां, आ जरूर सोचूं कै थ मूळ में कठ ही गोटाळो किया है नहीं तो आपण इसी भणची तो दुमदार्न री लणन्रेण ही कोई ? नूखो सूखो म आपा माणसै सोरा सुखी । महीन री पली तारीख न सांवळमा री मर सूं आपणी हुंडी सिकरती आय गयै रो भाग साहू की न की सत्कार हुतो हो, भोज ही सो पर सावळ चालती गाडो चीला उतरी ही किया थ ही सांचा ।

सुरज एकर बीर घर लाभी इया देख्या जिया कोई गभीर पडेमरी पोथी र पान मे आय कूट पद म विचारतो व्यस्त हुवै । बीं न बी र गोर कपाळा पर घुम स्यूं नीकळयै आंसुवा रा रीगा इया लाग्या जिया चन्दण र ना है गोळ बटटै पर कोई बाळक ईनी आंगळया सूं लीका खीचदे अर सूक्या पछ बारा हळका सैनाण पडग्या हुव, बा रीगार रस्त मिठास बीर कपोला म बड मोर घणो हुग्यो हुव तया आसुवा रै मिस नगा रो मैल बार निकळ जावतो मांख्या न भ्रौर उजास देयग्या हुव । अभिभूत हुयोडा सो सुरजो एक टक देख बोकरधो वी लागी ।

धीर धीर बीरा होठ एकर और हाल्या । देखा देख घणी चोकणी लाक्ण र कोड गांठ रो भोर गया वटा ।' सुरज आपरी दिस्टी बी र सरल सु दर चरे पर इया थिर करदी ही जिया कोई

"आपणी स्कूल में ही है वो भवार, हुकम करो तो बुलाऊं ?
पूछ'र बैम काढलो ।'

'जरूर ।'

चपरासी गयो । ई बीच म हैडमास्टर बो लोट आपरी जेब म घाल, एक नुंवो लोट बीं जाग्यां मेल दियो । मजूर आ र ऊभग्यो चुपचाप । हाथ पग माथो सैं माटी सूं भरया । भूत सो लागै हो । हैडमास्टर पूछयो—

' जवान, कीं गम्यो है थारो ?

"हां सा, दस रिपियां रो एक लाट हो, ' उत्तर मिल्यो ।

घरे पडयो'क अठ ?

"पडयो तो अठै ही हा सा ।

आ ल लोट थारो, कीं छोर नै लाध्यो है अठै खरो कमाई रो हो थारो जद ही आयग्यो थर बैठा । पताशा चाढ ठाकुरजी रै, आज ।

लोट वण ले लियो ई नै बीन फोरया जिया कोई हिन्दी पढारो मोडियै आखरा रै पोस्ट काड नै ओळखण खातर फोरतो हुवै । एकर हैडमास्टर रै मूंढ खानी देख्यो फेर भट रिपत प्रन सैं भध मिण्ट में ही लोट मेज पर राख दियो वण बोल्यो "ओ लोट म्हारो तो नहीं है सा और ही कीरो हुव लो', कह'र टुरण लाग्यो ।

सुण हैडमास्टर कह्यो ।

ठरग्यो वो ।

'लोट तो थारो गम्यो ही है दस रिपियाँ रो ?

'हाँ सा।'

'तो फेर लेव क्यां नी ?

'म्हारो हुया बिना पराय न हूँ हाथ किया घालूँ सा ? कह'र पाँच सात पळ एक'र चुप होग्यो। फेर बोल्यो होळ होळ लाचारी सी दिखातो पराया रा माल कदेई लिया सा, जिका मोजूँ को चूकयानी मुँव सिर मूँ मळे किसा ??

हैडमास्टर वी रे काळ माटी भरयेँ मुँ लानो देख बो— करया जिया कोई सच्चरित्र शासक सजीव सदनीति नेँ देखतो हुव। ठीक, पाँच सात मिन्ट पला बण उतनी ऊमर रा एक पाना देख्यो जिक पर परिस्थितियाँ री चित्रशाळ म काळरे हाथा खीचीजती लकीरा मर वो सूँ ऊगत सूरज री कोर सो ऊचो भाँवतो एक सा मोहक खिलकतो चित्राम, रघुकालीन कौत्स री पुनरावृत्ति करतो सो। अबार मळे एक बिरयो ही पानों जिक पर भास्या र साग उळझयोडी चिन्ता गरीबी अभाव अर उदासी री अणगिण लीका पण बा सूँ साव अछूतो, ऊमरतो पकतो विवेक ठीक ज्यां ही जिया पाणी म रतो पाणी सूँ विलग पुण्डरीक।

हैडमास्टर अबान खोल्यी पाछी "लोट ओळख थारो तूँ ?

'ओळखूँ तो हूँ की, आपनै सायत सावळ को समझा सकूँनी पण देख्यां हू पिछाण सकूँ —एक कोर थोडी फाटयोडी है, तीन मिट्टा री छाप पर कीं छांटा है स्याही रा, अठ लहो साँवटयोडो

खासो मलो एक पासो की चिक्णो है।"

इसो मप्यो तुल्यो उत्तर तो सायत कोई उम्मेन्वार पी० एम० सी० म ही को देवतो हुसीनी। हैडमास्टर एकर बी खानी दरयो वह राजी मन सूं पेर सामी सोट काढ र ग्यो बीनैं। बण बीरा घड खोल्या, सजग आंख्या सूं देख्यो बी न बोल्यो हा सा भो ही है। जाणूं गयोडो सास पाछो बावडग्यो हुव बी रो।

'तो लेजा' हैडमास्टर क्ह्यो। बीर वरै री चिन्ता रा मावळा सळ इयां निकळग्या जियां उस्तरी करता की क्चलीडियै क्पडै रा। आंख्या म सरसता की ऊंची आवती लागी। बोल्यो, 'जाऊं सा ?'

हाँ। बो टुरग्यो आपरी सैज चाल म राजी राजी, छुण-खुणियो लाग्योड टाबर सो।

× × ×

आ बात बीत्या एक अध कुम्भी हुगी हुसी। गरमी रा दिन हा गरीबां न लागै हा दळबन्ळू शासन म गुंडागर्दी सा अचरा भणभावणा वै ही पइसआळानै लागता गधै न सावण सा सुरगा सुहावणा। बळती—बासक रै सांस सी चालै ही लायी—टोरो दियोडी दडी सी। रह रह रेत रा कुरळिया उठना जाणूं निदाध मजूर आंधी म, ससार रै खचेडै म ऊभो मोटी चाळपर कूंदे कूंदे मुरड छाणतो हुवै। टैम हुसी दो रै आसै पासै।

गुरुजी अबै रिटायर [?] एक शहर म आ बस्या। अबार वै

सिर पर गमछो नाँख्यां आनन्द होटल' आग सोहन जी पनवाडी री बच पर बठा, नवभारत' म डूब्योड़ा हा। पान सिगरेट अर बीड़ा कोळा र गाहकां री भीड़ इसी जिसी सैत र छत्तै बारकर मणमाखयां री। प्रचाराणकी एक जीप बठ आ र रुकी बी म स्यूं चौधरी जवान ऊमर रा खाली रा चोळा हाथां म घड़ची गोळवा साफा बगल सा सफेद भक। दो आदमी और हा अपटूडेट। तीन तो बी म स्यूं होटल रैं पगोथियाँ री नाळ चढग्या दवादव चौथो पनवाडी सन आ र ऊभग्यो।

'पधारो ओवरसीयर सा व वाँई सेवा है म्हार लायक? पनवाडी जिया ही बोल्यो गुरुजी ही आपरी नस ऊँची करदी। बाँ देख्यो जवान सो छोरो माथ में बीचो बीच टाळ काढ्योडी, स दूरैं में खच्योडी तांत सी पतली अर सीधी आँख्यां पर काळा गोगल्स माया री मट्ठर्यां सा मोहक कॉटण टैरानीण री काठी पन्ट बिसो ही बढ़िया बुशर्ट अर बटार आत पन्तैखी जूता आधुनिक अर अपटूडेट बण् जिस्यो। बोल्यो, 'च्यार पान च्यार काकाकोळा अर दो पैकेट सिगरेट, ऊपर भिजवा देया हूँ चालू।

हुक्म अबार ला ये पनवाडी बोल्यो।

गुरुजी बीं खानी देख हा दख ही ओकरया जिया बसकै पड्योडी अर तिस्सी गाय तळाव खानी। जिया ही बो टुरयो, बैं बोल्या, जीवण है काँई ?

बस, गुरुजी खानी नस फोरण री ही देरी ही, श्री र मूँ सूँ नीकळयो श्रो गुरुजी !" पगा र हाथ लगा र 'आज तो बडी कृपा करी, श्राप श्रबार ?'

"कई महीना हुग्या हूँ तो अठ ही, एक प्राइवट स्कूल म हूँ ?

'पे सन हुगी हुसी ?"

'हा ।

मकान ?"

अठै लनै ही गोळ कटळै म एक कमरिया ले राख्यो है।

तो श्रापरी काई सवा करू ? बोलो काई चलसी कोका कोळा, लस्सी का मैंगोसेक ?

की नहीं ।

श्रा तो सपन मे ही की हू सकैनी गुरुदेव ।

'श्राजकालै काम काज कठ काइ ?

फैमिन मे हूँ गुरुजी श्रोवर सीयर लाग्याडो ।'

दादी है ?

'दादी गुरुजी, ठण्ड दिना ही गई छव माढी छव साल हुग्या हुसी । श्रौर कोई सेवा फरमावो म्हारै लायक ?

'बस मौज है ।'

'तो हूँ जाऊँ ऊपर श्रडीकता हुसी मन ?" ,

फेद मैं श्रायोड़ो ——

हाँ, हाँ मळ मिलस्यां कणा हीं।"

'एक पुल मैंगोनेक दिए भई गुरुजी न ' बोवतो जावणी कह'र बो पनोथियां रो माळ ऊँचो चढग्यो। गुरुजी रो चिन्तन चकोर दो मिष्ट एकर भावाकाग म गमग्यो। एक छोरो बां भ्रागे मैंगोनेक री गिलास धर आपर काम म लागग्यो। दो मिण्ट ताँई बांन दरसणा मूड म बठा दख पनवाडी बोल्यो 'काँई साधो हो गुरुदेव! गिलास ता लबो पछ तो मजो ही किरकिरो हू ज्यासी ई रो।'

'सोचण न काँई रे ई छोर में भ्राज देख्यो है छव बरसा सू बडो जी सोरो हुयो। गरीब पण गौरव नाळो, भ्रापरी लाळ भर ईमानदार इत्तो कै मोन्या ही को लाधैनी।'

'काँई लाग भ्रापर ?

म्हारो पढायोळो है माळयाँ रो छोरो है रे।

एक जणो पून म पनामा रो धु ओं छोडतो बोल्यो 'थारी की न कीं पोती है गैस गुरुजी, ई साथ ?

'जद ही जन हो कह र पनवाडी हँस्यो भ्रर बी साथ ही पाँच सात जणा भ्रौर हुस्या जिका बेच पर जम र दया जम्योडा हा आपू बै कोई हुक्यावभाळ र घरे भ्रायोडा हुव।

पननाडी को रुक र भळ बोल्यो, 'गुरुजी, कवण न थे ठीक ही कवता हुस्यो पण ■ बा दिना री बाता हुवली जद भ्रो लूखी रोटी खा र लोटो पाणो पी, तनमन सूँ तृप्त हुतो हुसी भ्राज तो

आध न धाँख्या

आपन ठा रणी चाहीज कै भ्रो पाणी री जाग्या कोकाकोळा, फटा भ्रर बावे रै हरदम 'बायर लगायोडी रावै । शरीर री खुराक पैला सूँ मोळी पडगी हुवैली पण मन री भूख दिन दिन बधी ही जाव । मृग तृष्णा रो भिरगलो हुयोडो भाग । सात आठ महीना तां मनै देखत न हुया हुसी हजारूँ रिपिया भो हर महीनै जीमैं भर डिकार ही को लवैनी । भ्रै घोळ फूलिया जाट भबार देख्या भाप, सरपच है दो तीन गांवा रा हजार हजार भाठ भाठ स रिपिया तो भ्रै जीमल, भल ही भर राती वास हिलगी, मोठो भर मैगो सेक भ्रौ र इस्या मूँ व लाग्या है क, छाछ राबडी तो सूँ ध्या ही भावे छीक भाव ।'

'किया ?'

'भ्रौरा गाडा साईड पर मजूरा खातर पाणी नाखण लागयोडा है दो घडा पाणी लाग, दस दस गाडा टूँकीज राज । भ्रौरा टावर टीकर पेट म हुव चावे बार भौरी मजूरी रोज मण्ड ।' एक जणो बिचाळ ही बोल्यो जीवता री छोडा मांय मांय भरयोडा रा पइसा उठै । घर मे एक टोपडो भर पाडो है बाछो भ्राई भ्रर पाडी बाई नाम लिखार पइसा लेलिया लोगा । बाणियो है गांव म एक घर म एक नीम भ्रर कीकर है छोटो सो नेमचन्द भ्रर कीकर मल रै नाम सूँ हुयना चूकलिया नमचन्द रा खुद खानी भ्रर कीकर मल रा भ्रोवर सीयर सा ब री जेब खानी, भ्रल्ला भ्रल्ला खेर सल्ला दोनूँ ही राजी । दो दा तीन तीन फरजी मस्टरोळा बणे भ्रर भ्रै भ्रँगूठा छाप मरपच सही करै कै पइसा म्हे बेंटाया म्हारै सामने ।

पोठो पड़सी को इया ही पोडो ही पड़सी, नीं न कोई घुड़ लर ही उठसी।'

धोकाकोळं रो गुटको लेवतो लेवतो त्त नें एक दूसरो बोल्यो, हां ठीक है पण बापड़ां आं एकला नें ही क्यो दोस देवो एडी सूं लगा र चोटी तांई सगळ एक ही हाल है। इवा ही इसी है भ्रवार। ओवरसीयर, इंजीनीयर एक्सियन अर चीफ तांई अर सांची सुणो तो मिनिस्टरां ताई सगळा री पांत्या हैं माजन सारू। घूस अर भिस्टा चार पनपावणियां जिय जिन्दावादसूं,अर बूडरो विरोध करणियां बठा है भणरी माल्या हुयोड़ा निःचेष्ट। पण ईमानदारा में तो न द आळी हुव। सासन री बाळटी में पड़यं मिनिस्टी र दूध अस्यूं ईमानदारी री माखी न सदा इमो बगी फके बारै क भळ बा बाळटी खानी मूंढो ही का मरजी। मकडूं मिनिस्टर राजा म्हाराजावां न घेड बैठाव इसा हुग्या आ म जाए मवं धिणाए ही कोई आंख मीच र अंधारो करे बींरो तो काई उपाव? बख्त उलांगो दियो, आंधां रा हाथ बुझाग्या टिकणा हा व टिकग्या अर इया, स नमडी कहै ज्यूं कांई कोई नहीं हुव इसी काई बात है?

खर थे लोग कहो बा ठीक ही हुसी घणखरी पण जठ सांई रै छोर रा सवान ओ इसो नहीं हुणो चाहीज, पछ स मई जळ मे मूत बा जाणं, म द पूत मे धूजती नो सा गुरुजी बोल्या।

'अच्छा बाबा म्हे कहो म्हार खन रहा पण भ्रवार ही अगण छव हजार म एक मोटर साइकल अर पाच पाच हजार मे

साधक नाटक री टीकी पर । सुरज री सुख सोधती कळपना कपोतो री पाँख्या बीर कठोर प्रत्यक्ष, तोडनी । बीनै आपरा विचारघोडा सुख तावडै रै गह्रै सा गळता लाग्या । बो सन्देह पश्चाताप सो पडयो हो माँच पर विचार मग्न खाली टुकर टुकर देख हो बीं खानी ।

'काई देखो हो म्हारै खानी कँई जिको को जचोनी थारै ?'

जची ही नही, ह रू म बठगी बा, बळत बूँदिया म चासणी बठती हुवै ज्यू ।

'मतळब ?'

'मतळब, हूँ देखूँ थार मूँढै खानी खाली ई म्हातर ही कै कदास थारा होठ एकर और हाल सो ।

'फेर ?

कदास म्हारी आँधी चेतना नै की उजास मिल । सुरज एकर पमवाडो फोरयो फेर तकियै रो सहारो ले'र बठग्यो बोल्यो—"मैं सोनै री खोळी सूँ ढक्य जिकै जर नै कँजूस रै धन सो मन री तिजूरी म लुका र राख्यो बो न त बिना चेष्टा ही थोई कर दियो । मन आज ठा लाग्यो कै थारो माणस योगी री दिस्टो सो कितो पारगामी है अर थारी चेतना कितो निश्छल—बाँ पर हूँ म्हारो कादो फेंक फेंक बाँ न काळा अर कोमा चरण पर हाथ धा र लारै लाग्योडा हूँ म्हारो मला किया हुमी बता ?'

"कमी काँई थान है ?

बात, मूळ में गोटाळो कियो है मैं ।"

"किया ?'

लिशखा महीन री महीन माँ न देवतो ही हो ?

हाँ।'

"बीं रो दाळ दळियो, गाभो चीरडो जिको चाहीजतो आवतो ही हो।'

'हाँ

तो फेर श्रो फटफटियो (मोटर साइकल) आयो कठ सू श्रो मूळ म गोटाळो नहीं तो काई ?'

'तो पछ थारी इसी जागती समझ री सिहणी, लाभ री लौकी र पजा मे आई किया ?' रूक्मण री आँख्या म उत्सुकता ही जिक सू और तेज हुगी।

भगवान जाण।'

भगवान र जाणन म ता गाल ही काँई ? गोगाळो तो है आपण खानी। आण र जीवती माखा गिट बीं रो काई ? थार मांयलो भगवान तो बतावण न त्यार है थ बी र मू ँड पर हाथ जड़ धर राख्यो है, बो जाण है पण बोल किया ? विवेक री जीभ न तो थ मुजस र डर सू ँ दम्भ र दाता नीचे दाब राखी है—ग्रोळमो भगवान पर। छेकड किया ही तो थार मन री धरती पर फटफटियो लावण री बीज ऊग्यो ही हुवला ?'

सुरजो काई ताळ धमपटी खन बेसिग र तार सी उठी नसा भर लिलाड पर आँगळ्या फर बोकरयो जियां कोई टाँटियो

वी नें सू ।'

'गोळी बा ही ता हराम री ही नी ?'

'किया ही समझ स ।'

अर बीं दाणें र गारें मूं थारी सूक्ष्म चेतना री भोळा चिणीजी ?

समझण्यो घिरियाणी अन मू मन रा सम्बन्ध। बण मन कयो पांच साढी पांच हजार म एक माटर साइकल तू ही क्यो खरीदल नी, साइकलडी रो तसियो मिट खाल री सवारी ही कोई सवारी हुती है ला। मैं कयो, भाईडा, तिणखा म ता दाजा पार पड नहीं अर ऊपरलो पइसो न म्हारी मां ही चाव अर न म्हारी लुगाई ही। साची स आ है के मन लेणा ही को आवैनी।'

लछमण सही लही एव मन मू इयां सुणै ही ज्यां परीक्षित री समझ शुकदवजी सू भागवत री कथा।

"बो बोल्या थारी मां अर थारी लुगाई युधिष्ठिर रै बखत रा कोई जीव आयग्या हुसी अबार बांरी समझ री नगरत नहीं, सोरी रोटी खाओ अर भजन करो बस इतो घणा बां न अर इया समझ जण स मौका आया, नरो वा कुञ्जरो युधिष्ठिर ही को चूकयोनी तो आपा जिसी पब्लोडी तो है ही किसी चवारी म ? तू सोच दुनिया म जिता क्रिोडपति अर अरबपति है, ब मै खरी कमाई स्यूं ही बिसा बण्या है। स सरकार री चोरी करै बईमानी

घूस, धोखाधड़ी जिसी तावँ आवै करै। बडा बडा मन्त्री जिका काल तांई टायर री गाधी चपला घीसे, खख उडावता पाया खाया फिरता, आज वाँरी काठया आगै कारा ऊभी है। आयकर (Income Tax) जिसी चोडै री चीजा जीमग्या बिना दात हिलाया अर वारो कस ही खाँगो को हुयोनी, तो आपणा पछ काँई हुसी ? हा सूवण पर बीन मूतण नै जाग्या तो राखणी ही पड। सबार तो जुग ही पराई जीमण रो है, जठ मिलै अर जिया ताव आवै। तूं सरकार री बात कर, वो म है सो नुगाया रा जायाडा ही का और ? सरकार री तो पाँती है चोरा सागै अर वै चोर है चोडै रा साहूकार रामतमी पाडपोडा, दुनिया हाथ जोडै वाँन अर वा सूं मिल र आपनै धन मान। साची पूछ तो धणखरी जाग्या चोरा रो समूह ही सरकार है सबार तो—काँइ देण अर काँइ पर देण। थारो माँ अर लुगाई जिसी आज जे धणखरी धरती हुती तो आज न चन्द्रमा ताँई लोग पूगता अर न धरती पर अबार रो आ वभव ही दीखतो। म्हारै वाँरी वाता रा गाभा मगोमग फिट बैठग्या, स्याणै दरजी री नाप र सीडपोडी पोसाक सा।

'बठणा हो हा वै तो मनरी स्थिति तो वाँरो मचा लणो शुरू कियो जिकै दिन ही वरणन लागगी ही। घिराव शुरू हुया पछ गाँठ री अकल एकर गूँगी हुयोडी तक बोकर वाँच्योनी बिल्ली सी—हाँ फेर ?'

आप मिष्ट अन्नाज सुणै एकर आपरी आँखा बन्द करली

पण आगळयाँ बोरी, बीर सून्न मर अळूइयाड वेसा पर चार वोकरी दैसाळी र ताँ सी—आणूँ व मनरी बावळ म गिरड़्योड वचर नै एक परवाडे कर काढ़ण रो प्रयास कर ही। बावळ रा विचार नीसरचा खाली बावळ हो आठी को लागना—धर रो रूप भी बध। पण आँख्या पाछी खोलदी, वो नै भार की हळको हुयो लाग्यो।

बा बोल्यो आत्म समर्पित अपराधी सा "फर बयौरी रुक्मण ! मैं ही धूल घास म आल छान फटकटिय रा जुगा" किया न किया कर ही नियो। थाँन कह बियो लोन लियो है सरकार स्यूँ। मोच्यो मस्ती स्यूँ आस्यूँ जास्यूँ कवतो कवतो सुरजो एक मिण्ट रुकग्यो आँख्या थोरी अपणी मांच म पढवैं आत्मसरूप रो प्राणचीन्ही स्थिति स्यूँ। रुक्मण की पूछ बी मूँ पैसा ही बो बोल्यो मस्ती मिली तो एमी मिली क माँचो पकड़ीज सो गयो पण धूरसी किया ई चिता मे पीजरो सूक र वलरा हुयो।

सरकारी लोन लियोडा तो लाग किया ही चुकावै ही पण थे जिक ढ़ग स्यूँ लान भेळो कियो है, बी स्यूँ सायत जलम जलमा तर म ही पिण्ड छून्णो आछो है कुण जाण बिता कमरा मर माँचा बन्ळना पडमी नीराग हुवण खातर।

सुरजा टुकर टुकर सामो देख बाकरधो क्सूरवार सो। बा भळ बोलो ता अब थाग खातर की तो सोच्यो ही है लो ?

तूँ ही बता ?

'है जिसं न जिता बट बेच बाळ दो ।"

'फेर ?'

'फेर, पइसा री ही तो बात है ? थांनै बी घण गरीब गुरब सन सू' सता र लिया चेत श्राव श्रर बींरी दुरवस्था री छाया थार माणस पर श्रोजू' छायोडी हुव वीं नै की मिस बै पइसा पूगता करो, नही जद सगळा रो माया न घास कचरो नांख मनरै श्रांगण म भेळो हुयोडो श्रो श्रळमीडो मेटो । साइकल श्राळो श्रापण तो, श्रर जे बा ही नहीं हुव तो उगाळा ही श्राछा पग निरोग चाहीजै काया म पाप नही पनपणो चाहीज ।

ठीम है, श्रा ही करस्यू' श्रब थोडो चावडी रो पाणी दिलावै तो ठीक है ।"

श्रवार लाऊँ, लिश्राऊँ फीकी ही ?"

पियोडी ती कदेही को है नी, पण श्रोर कांई गुटको लणो ही पडसी जद श्राधीन हुय्या बी रै ।

'तो जीभ री गुलामी छोडण री जी म श्रोजू' कम है ? जिका चूळू चाम पर दारू र एक गुटकै पर श्रर सिगरेट री श्रांधी घूंट माथ मर ब न धरती रो भलो कर सक न श्रापरो ही । परायो श्रास ही क्यों राखै बां स्यू' ?

ठीक है भई भूख म किवाड ही पापड श्रवार तो लाव एकर है जिसी ही पछै कोई श्रोर इलाज करस्यां ई रो ताव श्रासी तो । इतै ■ मां रै श्रावण रा पग सुणीज्या बांन । रुखमण रसोई

खानी नीसरळगी। मांच सन एक पोढो पड्यो हो। डांगडी टेबली मां वी पर आ र इयां बटी जिया रगमच रो पड्दो पडता ही पैल पात्र रै गया दूसरै री बारी आई हुव। एक हाथ वीं रो थोडो थोडो धूजतो हो चालती मोटर म स्पीडोमीटर रो सुइयो धुजतो हुव जिया।

'पण किया है रे?' बा हाळ स बोली।

"साबळ हो हुवतो मां पुरी ठा तो पाटो खोल्या ही लागसी।

डाक्टरी लिलाड ऊचो कियो चैर पर सगळ मोछा लांबा सळ ही सळ हा मतुकात कविता री लणा सा पण हर सळ म ही आस्था री एक एक कथा। बाली बेटा 'समभ जद तो ठा चोखी तरै सूं लागसी ओजू समझ्यो नही हुव बा बात थारी है।'

सुरजो मां खानी इया देखण लागग्यो जियाँ अणचींत्यै मोळभ सूं डरतो हुम त्योरी चाढय ताजीमत्तर खानी दखतो हुव। बोली, सूर गधा कुत्ता मर बागला जिका मळ खाखा आपरो पेट भर तूं बात आछा समभ का मिनख न?

मिनख न।

'मर जे मिनख ही मळ खाखा आपरो पेट भरै तो?

तो वीं जिसो हीणो धरती पर सायत ही कोई हुव मां।'

मर जे म्हारो ही बेटो ई चेष्टा म लाग्योडो जूण पूरी करतो हुव तो?

सुरजै री आस्या फाटयोडी तेदी सी खुली री खुली ही

/ आंध न आंख्या

रहगी, घर होठ गूंद स्यूं चेप्योड लिफाफै सा जाग्या स्यूं ही को हाल्यानो नरीर री गत इसी कै काटै तो खून कठ ?

डोकरी री जीभ पर भळै सरस्वती बोलण लागी— म्हारै उम्र में लिट, मळ खावण सूं तूं इसो राजी ?

सुरज रो मूं, पोचीजतै काकडियै सो पीळो अर दोपारै रै चांद सो साव उदास। आख्या, तिसाई सीपट्या सी करदी मा रै सागर स्यू उठी बाणी री बरसती बादळी खानी।

'थारो छोट थकै रो बाप पूरो हुग्यो ?' मां बोली।

"हां।'

'मैं तनै चरखो कात कात बाळदळियो चोका बरतण कर कर पाळयो पण की आगै ही न हीणी माखी न हीणो दाणो ही घर म घडन दियो म्हारै बस एक ही लोभ हो, काई ?

सुरजा, मूं बडसूं लटकत बडय रै आळ सो किया, सामो दख बोकरयो। कांई कहै की को समझ्योनी। इसी तो नौकरी खातर गयो जद इण्टरव्यू म ही को हुईनी की न की तो जवाब दियो ही। मां सामो दख बोकरयो गलो काच खानी देखतो हुवै जियां।

डोकरी बोली, "म्हारै एक ही लोभ हो बटा, क लोग कठै ही आ चर्चा न करै कै रांड इसो ही, बी रो पूत आछो हुवण रो रस्तो हो किसो ? अर त ?' एकर आधी मिण्ट बा चुप हुगी पण एक धाक्नेन रो भूकम्प यो रै होठा री धरती नीचै दन्योडो हा बीं रा की

ग्रासार होटा पर इयां ग्रनुभव हुवै हा जिया सीसमोग्राफ मे ग्रावरा ग्राळ भूचाळ रा लघु कम्पन । सूरज रो मू ँ सरदी लाग्योड़ै बीमार रो मो ढीलो पडग्यो जी म ग्राई गाग्रो ग्रोन्लूं ।

वा बोली पूर विश्वास सूं 'देख म्हारी जवानी ढळगी ग्रर थारी सुरू हुई है, हूं तो साव पीळो पान हूं कुण जाणै कद गिर पड़ूं ऊमर री डाळी स्यूं—न जीवण रो हरख ग्रर न मरण रो चिन्ता तूं ई इग सूं पन्सो लेव वो मन है ग्रर मळ लावै वो सूक्र वूकर सै री। मळ मूं तू थारा सपना मजोगा चाव थारी ग्रा समझ—मैं जिमै खिर त पान र ग्रास्तिक प्राणा पर मळ रीशद राख वाँ न दूषित करणो ठीक ममझ ग्रा थार जवता हुसी पण जिक बोझ न म्हारो बूढो प्राण पगु होणो को चावैनी बी पर त ग्रणचायो भाठा लाद ग्रसतोष मूं मार, इस बदळ री ग्राशा मनै को ही नी । म्हारी चायो ही हुव ग्रो कोई नम का है नी पण कम मूं कम काळ व्यानी मूंढो फियोडो ग्रो परेरू उड दसी साळ ता धीरज राखतो । पडता ही ढाण पडग्यो खर कोई ग्रातनो सफर लाबी ग्रर रस्तो साव सौकडो है, पग इया मल सकलो नहीं ।

सरज री जीभ सूकगी रू रू म इसो ग्राघात लाग्यो जिक री पीड मन प्राण म इया पुगगी,जिया पाणी पर तेल रो तिरवाळो । खाली बीं र मू सूं इत्तो ही निकळयो क 'ग्रबक माफ कर माँ ग्राइ द नचो राख थारो गियोडी चनना न बस पडता साव सस्ती को मरण द्यूंनी ।

"नहीं मरण दसी तो जी सी, फव्वमी फूरसी पर मरती नै मन ही उचार सती।"

डाफरी उठ खड़ी हुई, बोली "न भई जावदा, बैठा कांई हुआ माता भपणा कन रा चूँटा बठ ता कानूँ अर हाठ होळै चाल पड़ी धामी पून री पाँख्या पर बैठी पण बरसो कादळी सी।

'वाह! [illegible] री बांवली बैवळी डोरी म [illegible] मजबूती पर सबदा [illegible] मकान म [illegible] नीराग निप्ता" सूरज मांच्यो [illegible] [illegible]। बीरो अगाध नीर री प्रेमण माधनी [illegible] र इस सागर म [illegible] [illegible] सागर डूबगी। मोच [illegible] जीवन री [illegible] [illegible] [illegible] न [illegible] गई वो [illegible] पर न [illegible] [illegible] कनी [illegible] अर अबोध मानवी पोष नै मट री [illegible] गूँ [illegible] अर मरती हीं [illegible]।

'[illegible] [illegible],' बी न [illegible]। [illegible] [illegible] सी सामनै [illegible] खड़ा दीसी। [illegible] ज्यूँ [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] पसन्द है जिरनै [illegible] [illegible] अर [illegible] म मुँवो [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] अर [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]। हाठे ई [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]।

"[illegible] [illegible]" [illegible] [illegible] हुआ [illegible] [illegible]", [illegible] पूछ्यो।

"[illegible] [illegible]" सूरज [illegible] दियो। [illegible] [illegible] [illegible]

वी र चैर पर खेलण लागग्यो। खाली कप नै नीचे राखतो राखतो बो भळै बोल्यो, जे म्रा ही न मिलै तो कोई बात नी म्रब मीठ र मल पर मरण म्राळो मारया उडगी तू समभ। बा खडो हुयो कमा पर कागसियो फेरयो अर फेर लकडी र म्रासर लगडावतो म्रस्पताळ खानी टुरग्यो—मळसाय कमल सी ऊभी दो आख्या भपलक बीन देख बोकरी।



बोध



शहर र उतराध आचळ मे जठै अबार पुराणो शहर आपरै बुनापै री सांस लेवतो इलाज करावतै टीबी र मरीज सो जिय, बठ एक गळी है इसी सांकडी जिकै म आधुनिक जुगरो जोडो बरावर बरावर को चाल सकैमी आग लार हू र भला ही नीकळो। आ ही आगरी भळे हरदम ईनी भर कादै सूं भरी। ऐंठा कागद, फेळा रा छूंतका आम्ब री गुठल्या भर टाबरां रा पूंछ्या पूर ई नै बीनै पगा म आ बोकर। दिन मे ही सत लाग्यै काचमो घूंधळो, घूंधळो दीख ई म जद रात रो तो अठै साव आधळ घोटो ही समझो, ई रो सही अन्दाजो तो अठै आवण जावण आळो कोई भुक्त भागी ही सावळ लगा सकै। आ हाला अठै सोरैसास रैण सूं कुण राजी पण उपाय नहीं हुवै जद मणासरती मे रणा ही पडै। खर, इ री ई अवस्था सूं कीनै ही असन्तोष हू सकै पण नाम सूं सायत ही। शहर म आही गळी, अबार आजाद स्ट्रीट रै नाम सूं आळखीज।

भारती बाबू रा मकान ई गळी म ही शोभा दव। घर आग भस मात जितो एक कमरियो है। मांय एक रसोई समानघर

सोवण उटण न एक कोटडी गवण घर, बी सू चिपतो हो निबरण घर अर मुर्दो मावै जितो सो आगणो। आठ रिपिया म रणो गुरू कियो हो कदई ई म, अबार महीन रा प द्र रिपिया देणा पड़। श्रोही मकान जे कोइ अबार नुंव सिर सूं लेवै तो चाळोस म ही हाथ आणो ओखो, ठोडो र हाथ लया र सो दो सौ पागडी रा और देणा पड। मारती बाबू पच्चीस साल सूं ई सागी मकान म ही बिराज।

पांच छव टाबर बूढी मां अर लुगाई। सियाळ म तो भलै ही इसी दोराई को हुवनी। ऊमस म जची कळ री फळयां सा बराबर बराघर दावै जिया ही पड्या रव पण ऊनाळै अर चौमास, केई दफ जद अमूचो हुव सांस तो का नीकळै नी, थाल्योडा जादा है ई खातर, पण थाकी की वचनी। बी बेळा कदे कदे ही तो इसी मनम आव क ई रोज र राम्नी रोगा सूं तो रोटी म रणो लाख गुणो आछो पण शहरी छत्त रा मीठा टोवा जद कद ही बीरी जाभ पर पड तो बै दो च्यार घडा रो सगळी वेचनी बीसर आहो सोच क जीवण री सज सम्पूणता शहर म ही ऊपजै। आवण न तो खर, मिनखा शरीर है कदई रोस ही आवती हुसी पर बराग ही उठतो हुसी पण जाव कठ ? अब रो धुरो आगरा इत्ता पोचो अर पतळो क बो गिरत र गाड न सोरो सोरो गुडका र घणो दूर का लजासक्तो। रिपिया बीन तीन सौ मान्ने तान सौ मिल बी म इत्तो ही ताब आव जितो अबार है।

/ ग्रोध न आंख्या

पढ्योड़ा बी० ए० अर शास्त्री है। ऊमर पचास रै अठै गठै। माथै मे रू कोई सो, टाट चीकणी घड़ै री ठीकरी सी, धोती धोळो अर चश्मो। सूक्योड़ै सेलरै सा हाड यारा यारा चिलक। महात्मा गांधी मरयां पछ राष्ट्रपिता हुणै जोग कोई हो तो अ ही, पण उम्मीदवारा री लाबी लैंण म लोगा थान वाड मेम्बर ही का हूण दियाजी। व या मांरो छव महीना कोइ अर बार महीना काइ बिचाळे कदेही दो महीना नागा हो।

मोर म आठ बजी आज एक समाजवादी नेता आयो हो। मैं घंघ घटा पैला ही ठेसण गया परा। सो सवा सौ आदमी भ्रोर हा बठ। अगुवा बो म भारती वावू ही हा। खुली जीप म जुलूस निकाळया। मैं नारा लगावता 'पटवद्धन ?' भीड सूं एकै साग भेळी आवाज उठती 'जिन्दावाद' अ फेर फणा तणा हू र कैवता "को चाहीज नी आकास गूंजतो आ घूसखोर सरकार अर अै मळै मोप रो मो छिन चढना कोई न कोई नारै री सृष्टि कर बौं न हवा में फकता। नारा लगावती वेळा भोर लिलाड कठ अर कनपटी री नाड़ा एकर तण र ऊपर उठ आवती जिया मांच री खचीजती नेमवण तण र ऊपर आवती हुव। ठेकड भोरै गळै री आवाज इसी गाणी पडती जिया नगोतम कई रिंग रातीजोगै म गायोडी वीं अगुवा गीतारण री। आधैक नहर में चक्कर काटया हुसी अां, फेर श्रमिक पुस्तकालय रो उद्घाटण फेर कई रकम री थायी अर उपचा रिक घूमरा पछै आंगे बरमां सूं रटयारटायो सारगभित भाषण

घसीज्याड टप रिसाड सो। प्रोग्राम पूरो हुया पछै बाद खाणों पीणों करा नरू बारै बजरा लागी है ऊपर सू जद ग्राप कमरिय में पधारचा है ।

ग्रौंवता ही एक नमार कुर्सी पर वठ 'माया' म उळझग्या । एक पसवाड़ 'नवभारत पड़यो है अर बी सन हौं सरिता । माया रै पथ मे पैर रो पावड़ो ही पूरो को चाल्या हुसी ी ींन्द इसो आड़ी फिरी क माया हाथ सू छूट'र नीच पड़गी अर मैं माग र खाली जेवा सपन लोक म जा पूग्या । पूगरा ही हा अौ अबार ही ग्राध सू घरा नहर रो चक्कर कारचो है, ई खातर पीण्डचाँ पिरिाहारी गाव ही नारा पैला तो पजा तरणा हू ह र लगाया ही गया, ई खातर माथै री नाडा प्रब पचियो कुळ क्यू कुळ ही । थारीर अर माथो दोनू धक्याडा हुव जद मनन तो कठ न कठ नी द र लोक म लुकरणो ही पड ।

ग्राख लागी न दस मिण्ट ही का हुया हुसीनी । खट खट री ग्रावाज हुई ग्रर फट बारी ग्राख खुली जिया टी टी री वतरणी रै खड़क सू की सत मुसाफिर री खुलती हुव । उठ र बारणो खोल्यो तो एक साग ही सत रब तम र मानवी ग्राकार सो जींवती जागती तीन मूर्त्या दीसी । बोल्या, ग्राग्रा पधारो ।

ब तीनू एक दरी पर बठग्या । दो ता घर री मुर्ती ग्राळै दाई बार सघा ही हा । तीसर खातर बै पूछू ही हा, बी सू पैलां ही वण ग्रापगे परिच पुराण खाल न्यिो ।

/ ग्रांघ न डाँक्या

हूँ साप्ताहिक 'जवान' रो सम्पादक हूँ सा ।'

'म्रो हो ! मनोज शर्मा आपरो ही नाम है ?' वां कह्यो ।

'हां सा व,' थोडो रुक'र बो मळै बोल्यो, 'हूँ तो मिलण र मिस म्रापन वधाई दवण म्रायो हूँ ।'

'बधाई क्यारी सा, हूँ ही सुणूं तो सरी ?

'सामन बडाई करणी तो बेजा है पण साच सूं मूँडा ही तो वो माडीजनी कणो ही पडै बोतो । म्रापरो भाषण आज बडा जोर रो रह्यो । म्रापा पर कमाण्ड म्रर कठा म लोच कह दिस्या । हूँ म्राज ज नहीं म्रावतो, तो बडो निरभागी हुतो । मैं बीरा खासा प्रम नोट करया है 'जवान' मे देस्यूं । आपरो एक फोटू म्रर थोडो सा जीवण परिच चाहीज मनै । हां क्यो सा म्राजादी पछ म्राप कनेई जेल जात्रा भी करी हुवैली ?

'एकर दो वार नहीं, म्राठ वार, जिक ■ तीन वार तो दो दो महीना री ।'

भूख हडताल पर ?

"दाळ रोटी सी, म्रा तो म्राए दिन री बात है, दो च्यार वार तो साल म समझो ही, बिया केई वार इक्कीस इक्कीस दिन रो लिहको चढ्योडो है वह र पछ वां म्रापरै डाव हाथ री मरड् बच्योडी म्रकूणी दिखाई बोल्या 'म्रा लारलै साल लाठी चाज म टूटी । पर म्राप्ट्र सिपाई गोडूं रै फलकै मो लूगो मायो देखा र कह्यो दसो म्रठ एकर म्राठ टांका म्राया म्रर ई पग र तीन महीना

पतरो पाटो बेंच्यो और किसा किमा बनाऊँ आपन, ऊँवळी में सिर ही दे न्यो जद धमोडा रा किसा वखाण है ?'

'कमाल कमाल कोई आप्मी हो आप 'राणा सागा माळै कोई शरीर रो कोई हिस्सो साबत को है नी। सगन भर ईण री तो सदे मूर्ति हो आप। इसै निस्वार्थ जननेता पर तो समाज नै गव हुणो चाहीज।'

पण सरवागी पन्न प्राळा तो, मन खाया हीं को धापनी।'

प्राप किया बाँ न तो टुकड़ो चाहीज भर मिल कुरस्या खानी सू ई मानर व ना भूप हो सा, प्राय प्रन्याय मूं बाँन कोई टुकड़ा रा हक तो बजावै क नी ?'

'इसा ओ म्हारो कन्न कोई धिर ? अबार तो ढोंका भी गोधागिर्दी मिन्या रै माग रा ही टुकड़ो समझो।' इसो क्ह र बाँ घर म स्यूं तीन चाय, भर छोर न भेज र बिस्ता ही पान मँगाया। द दिरा, बिडा कर बठ र सावळ सुंधा हीं को हुयाली का खट खट भळे सुणीजी। माथ म एकर तो ढोंग री सी लागी पण क्रै कोई ? प्राप कमाया कामडा कीन दीज दास थारणो खोलता ही एक जनानी भर एक मर्दानी तस्वीर पुरुष भर प्रकृति आळै जियाँ दृत म दरसण न्या। भाग्यो अबार तावड म किया पधारणो हुयो ?'

मारती बावू बाँ सूं साव अजाण ही को हानी, पण आँगळी वर अंगूठ मा इस्ता नटा ही को हानी। आदमी बोल्यो 'अगलै

/ आँध न आँख्या

महान चुनाव है नगर पालिका रो, आपर वाड सूँ आप (लुगाई खानी इसारो कर र) सुनीला शर्मा खडी हुसी।' इतै म बा खुद ही हाथ जोड'र बोली, 'आपरो संयोग हुसी तो क्यों नही ?

जरूर जरूर पडसँ संयोग रो किसो अचार हुसी ?

बा की मुळक'र बोली, "नही, नही पूरो भरोसो है आपरो ती आपरो आशीर्वाद हुसी तो मनैं काम करण नैं छेत्र अर आपरो अनुभव, दो लाभ एक सागै मिलसी।

'देखो कोसीस तो आ ही करस्या कै जीत री माळा आपरै गळ म ही पडै, पछ'स कुण जाणा ऊँठ कीनै बैठतो कीन वड ?'

'कृपा है आपरी' बा नारी सुलभ सैज भाव सूँ फेर थोडो मुळकती हाथ जोड'र बोली पण ई अणचीती क्षणिक टॉनिक सूँ अघमूवय हुठ म भारती बाबू, अपण आप मे एक नूँई स्फूर्ति अनुभव करी। बां बड गव सूँ छक पल बी खानी देख र माथो ऊँचो कियो जाणूँ बां आपरी आँख्यां में सूत मौन भाषा सूँ बीन आ स्वीकृति दी हुवै क घर रो थोटो घणा की उजाड'र ही थारो प्रचार तो करस्यूँ ही।

अबै आगमी बोल्यो 'भारती बाबू इया तो एसक माथै आ कोसीस करस्यां ही मै घणै सूँ घणा खरै अर राष्ट्रवादी विचारा रा आदमी ही सीटा रूध, पण इया करतां हो ज पार न[ही] पडी ता कम सूँ कम इत्तो तो जरूर करणो है क जिका पांच च्यार मोटा अर यूढ़ा चीचड बीस बीस साला सूँ कुर्स्यां रै चिप्योडा वां रा खून चूस

चूस, ई गरीब देश म भणाचाही टीबी अर क सर री सृष्टि करदी
अर करे ही जाव, बाँ न किया ही कर जाग्या छुनावो जद मजो आव,
भाई मरघ रो घोखो नहीं भाभी रो नखरो भागणो चाहीज ।
इतो दरसा म लाखूँ रिपिया सूँ तो मळा भर लियो भर बज गिलारो,
पण ऊपरवाडी म उस्ताद इमा क लगाया नु व सिरै सूँ जामण सूँ
रहगी । जाग्या जाग्या गाघी भर नह री मत्याँ खडी करवा करवा
भगली पाँत म जा बठा । जयन्ती पर चर्खो भर रामधुन,
उद्घाटण मला ही कसाईबाड रो ही करवा लखा, जीन हवा रो रुख
बीन भाँरो मुख एवर भीन सा मर न माँचा छोट खायग्या भ सब
सक र बिना बास्ने ।"

मारती बाबू बोल्या, बात तो ठीक है पण भा खन पर
पइसा भर साग सरकार गो सयोग । डाळ सार दस पाँच गुण्डा
पाळयोडा नही हुव क्सी काई बात ? पण भबार रो मतदाता भापा
समभा जिसो भोळो को रयोनी वा भा भाथी तर सू जाण क भ
उम्मीदवार न तो समाज सेवी भर त्यागी बिरागी ही । जीत्या पछ
गुग रा न पीर रा दाळियो ही को चलावनी ई खातर भापा ही भान
सूका क्यो छोडो टाँचीज जिता टावो भर उम्मीदवार भा समभ
क भापा न तो एकर पटा पट्ट र किया ही भाँगळी दिखाव जाव्या
करणी है, फेर ता दो च्यार साल भाँरा भुणक्योडा ही लागा, बिना
मुतळब बाढी भाँगळी पर ही नही मूता । रोग तो मोटो भा है काम
भबै पार किया पड ?

भाँधै न भाँख्या

'फेर ही आपा नै जनमाणस नै जागतो तो राखणो ही चाहीज। ज हाथ आपणो तावै नहीं आवै तो बुळवावा तो सरी दिया ही ?

खर कोसीस तो सा ही करस्या 'यत्ने कृते यदि न सिध्यति कोऽत्र दोष ?'

''तो आज मिस्या फेर आठेक बजी गांधी ग्राउण्ड म मीटिंग है। सभा रो सचालण आपनै ही करणो पडसी। शहर मे प्रचार अर पम्पलेट बाजी री व्यवस्था म्हे पैला सू ही करदी है। पांच मिण्ट पला पधारो इसो काम करया।'

जरूर इसो कांई बात है पण अबक वै ही जाणसी कै काफी रा जायोड़ा लागै लस्या इया हुवै।" आ, बीं इसै तिरिस्कारै ढग सू कही जाणू देन म राजनीति रै ऊंठ री,नकेल बां रै हाथ मे हुव। चांद पर हाथ फेर'र बै भळै बाल्या ''टेम कांई हुगी हुसी बार ?

'सवा पांच बजी है लुगाई आपरी घडी लानी मूंडो कर'र बानी।

ठरा दा मिण्ट चाय मंगाऊं ?

नहीं, नही, म्हान दो च्यार जाग्यां और जाणो है प्रोजू' मास्मी बोल्यो।

'आपरी मेरबानी हुसी तो चाय पाण पीवता ही रय्या" कह'र मुगाइ थोडी मुळकी आरती जी सामीं। दोनू' खडा हुया

सुगाई जांवती जांवती भारती बाबू पर मुस्कान री बदियो एकर भळे फेर दियो, जिक सूं बारै मन रो मिनख बक्रो हू बै ब वक्तो अवार सूं बवण लागग्यो कै व व वोट सुनीला जो न अर था गूंग काई ताळ माथै रो गळ्यो म धूम बक्रो।

फर बा दाए लम्बी दाए मोदी प्रणगिण योजनावा रै जाळ मे जा मटूभो मिरगी सी। भचाणचको ही कए हो हेलो मारयो, भारतीजी अर बै उठ र बार नीवळग्या।

× × ×

मीटिंग दो घटा नडी चाली हुसी। प्रादमी ढाई तीन हजार सूं ऊवा ही हुणा चाहीज। घटा पूण घटा तो भारती बाबू ही बोल लिया पण बांरो भाषण लोगा र गळ वासा भोजन मो दोरो ही उतरयो कारण प्राज दिनूमै ही बां मा माळनी बांची ही, सागीडी लूण मिरचा लगा लगा'र प्रर अब वा ही भळ त्यार भीड म हत्तो धीरज कठ ? बठो मन्नारी बाबा बिराजो नीच' भीड म सूं पांच सात प्रावाज प्राई पण भारती बाबू री 'जनता एकमप्रस विया ही चार बोक्री। प्रबक प्रावाज भळे प्राई पण एकली नही, बोडी गाड सा दो भांकरा साग ल र। एक री भारती जी री टीच मे टिकी, लोही तो को प्रायोनी पण बोरिय री गुठली जिनी एक गूमडी जरूर हुगो। दूर सूं हा दोस हो खरबूज पर राखी खिरणी री गुठली सो। हुल्लडबाजी मे घणखरा लोग खिडग्या, छत्त पर वाक्रो पडर्यो टाँटिया खिडता हुव जियां, पण भारती जी

ठठारा री मिनी हा इयै सडका सूँ कम ही डर हा । लोग वाग ही नहीं रह्या, ई रो तो वै कांई करै ?

दिन भर रा थक्या मादा घरै आया जितै इग्यारै सू ऊंची हुगी। कमरियो खोल'र खटोलडी री सरण लेऊ ही हा, इतै म बाँरी लुगाई आ'र बाली "दिन दो हुग्या है, माँ नै जा'र सभाळो ही को होनी ?'

काइ हुयो मा रै ?'

'बमार दीस ।'

स पैला ता को कह्योनी ?"

कद कहूँ, थान तो साँस लेवण नै ही फुरसत को लाधैनी, थाऊँ जिनी वार कोई न कोई हाजर लाधै, अर छुट्टी माळ दिन तो मगग्यो मडपो ही दीसै।'

'तो तूँ कहै तो को आवण दूँनी कोनै ही ?

हूँ क्या करूँ मोकळा आप्रो भला ही पण बा जलम रा दवाळ माँ है थोरा नाम सूँ बाँ रा दर्जो की ऊंचा है, बिना कह्याँ ही बी री सुध तो लणी ही चाहीज म्हारी तो खैर छाड़ो, गाँव छोड्यो जद मूँ लगा र आज ताँई काढे र सागर सूँ फिरो आ सुबनी भली मर हूँ भली ।'

ब उदास मर कुंमळाय सा उठ र माँ म्हानो टुरग्या ।
माँ कोठरी म सूनी ही, बत्तो निमधो निमधो जग हो ।

टाट री एक मिट्टी बिछायोडो बी पर पडी माडा खातो म दे राख्या हा ।

"माँ ? बाँ होळ स कयो ।

वा वो बानीनो । मळ कह्यो "माँ ?'

मा कर र बण पसवाडो फोरयो, बाँ खानी देख र बोली

'कुण भारती ?

हाँ माँ ।

'कीने बम र आजकाले ?

'हो तो मठ ही ।'

'हुथ ही लो ।' मनभायरो सो कह र बा म पाछी बोली भर न आँख हो खोली । वो गूगो सो गुमसुम बठो देख बोकरयो । बण देख्यो माँर एक पसवाड नाग पजापर दो छोरी सूनी ही –ढोला छोड्योडा शरीर स स साँस लयती । दोवटी रा आँधिया बाकी उघाडी मुर्दी इसी कै पसिळया न्यारी न्यारी गिणलो भला हीं । दूज खानी दो छोरा जिक म एक साव नागो दूसरै रै एक चडडी । पगाए खानी बडाडी छोरी ही पढती पढती न नींद फिरगी बठ ही, खन एक पोथी पडी दीस ही । लुगाई भर एक छोरो आँगण म खुल्लै आकाश नीच भेळा हुयोडा पडया है । बीं री आँख्या इन बो ; फिर र पाछी माँ खानी कर्द्रित हुगी । काळज एक पहाड न ढयोडो, आग्नेय चट्टान र दूटथ पिंड सी निश्चल सूती ही । बण सकता सकता ■ भळ बतळाई 'माँ ?'

जागूं हूं रे सूती थोडी ही हूं। कह र बण पाछी हो आंख बन्द करली जाणूं बीरी मेथा कोई मोंयली खिण्ड्योडी चीज नै भेळी करण म लाग्योडी हुवै । अब मिण्ट ठेर र बा बोली बात करती थार सूं पण तू मन किसो ओळख है रे ?'

'आ किया मां ?"

'किया कांई साच है रे।"

'मां तन ही नहीं ओळखूं तो और मळ कीन ओळखस्यूं ?

'आ हू जाणूं रे, तूं ओळख है मन, पण मुट्ठी भर हाडक्यां म बन्ध्यै ई आकार नै ही ई सूं बसी नहीं ।

बो सामो देख बोकरयो ।

हां हां रे हूं ठीक कहूं, ई सूं नेमी त समभण री चेष्टा हो को करीनो करदेई ।'

किया मां हूं को समझ्योनी ?

'तूं अठ नै ओळखै रे, पण हूं इत्ती थोनी हूं, अन्त मे अणन्त हूं रे । मणगिण चितराम, मैं म बणी अर बिलरैं, तू एक नै ही तो ओळखनो हुसी ? देख म्हारै तिगाणै पगाण डाबै ऑवण, मांय बारै सगम उघाडा अर असतुष्ट प्राण दुबक्योडा पड्या है—हूं बीमूं पिरयोडी हूं । म म सूना है—हू जागूं । वै सगळा मुक्त मांस भावै, अर थाव थापरी मे भुळवणो । वै गम्यां म गुलै पातान नीथ, बिरगा सरदी म भींनो सारै भेळा हू हू र रात काढ बना—तिसी कूमीं अर बिस बिरोड़पति रो काळजो पसीज थो सानर ? भो म्हारो

निरस्कार है का नहीं ?पण ई रो परिणाम ही नदेई सोच्यो हुसी ?'
इत्तो कह'र बण भळ आंख बन्द करली।

वो टुकर टुकर वीं मानी देख बोकरयो समझण री चेष्टा म।

बींनै बीरा धोळा केस—की लारै की लिलाड़ पर पहाड़ पर जम्योड़ै पाळ सा लाग्या। लिलाड़ अर कपोळा पर सळ ही सळ पुराणी धारणा पर हुवै इसा पण बीरो हर सळ पीढ़ री एक पोथी अर सगळा सळ पीढ़ रो एक पुस्तकाल जच्या बीन। आंख्या ईली रेत म रोप्योड़ी राखिया कोडयाँ सा—दद र काद मूं काळी। योया मूक्योड़ी किसमिस्या सा छाती र चिप्पयोड़ा। छाती अर पेट एक सीध म सळ, सेव र काढयोड़ी ठण्डी सकरकन्द पर हुवै जिसा। सिलाजीतिया एक लानर लपेट राखी, जाणूं बा बींरै भीतरी पहाड़ र पिघळय पसेव मे डूब डूब किसी हुगी हुव। राखिया रगो हळको मो लयो जाणूं बींर ज्वालामुखी री गीली राख बी में घणीभूत हू धीर धीर रग छोड र रग बिलीण हुगी हुव। इमां लाग ही जाणूं आंख्या म बीरै माफ भारत री गरीबी बासो लिया बठी हुवै। बीर कपड़ा म मौन हिमाचल री भाखी चिन्ता अर दक्षिण री लावा निर्मित माटी री गरम चेतना रा रग थिर हुय्या हुव। मोटी बात बीन लागी क बीरी जीभ पर अबार जाणूं साचेनी सारदा बठी है। करुणा री प्रति मूर्ति भी बा ई सुनसान आधी रात म कोठड़ी म सूनी विसाल भारत माता र महाप्राणा री ना ही गोमळी सी भेळी हुयोड़ी पड़ी ही।

अचाणचकी बा बोली, पच्चास साल मैंडा हुग्री आपांनै,
ई घर म आया। गांव मूं तो और ही पैला आयग्या हा आपा।"

हां।"

"बठ आपारो जमीन है घर री, थारो जलम बठै हुयो अर म्हारो विवाम अर निवाम दोनूं बठ मूं। कौन संभाळी वदेही ? तीन हजार गज है बा ?"

'हां ही तो मरी पण बठै गांव रै घोरा म कोई प्राणी प्राणी है नी ? कोई तो हुवैं बठै अर कोई मान है बींरो ? एकर दखी ता ही पण भूल भागग्या अब, कुवै म पडन दनी।

बीरी भमुटी रा सळ और गहरा हुग्या अर होठा पर की आक्रोस कांप्यो बोली थारै मन ध्यान की को हुवैंनो बठ ई आगर बीन दूसरा दावा अर म्हारै बचारी ज्यानी पोयण मीन्ता असंतुष्ट प्राण पन्या है क ऊभड़ो। थारो म्हारा काया म जिको जेणगा अर मागे है बीरी उद्गम बा जाग्यां ही है। नाहुगी ममता म बात न दबार माने अर ई विराय री पराई जमीन पर जीण म तू गौरव समझ। अब पर तू आण मरै, प्राण पर बस पग हग्यो मपु गर अङ्गुरदरमी ई निदर मूं मौवठ र बन्दै पनम्भो बा मैं गरने म ही बा गाबोनी।

मान्द र पच्चास सालां म मूं इसा हा नौबता है।
बा मां म्हारी देस हूं मदो उपरादोरो गो ज्यान अर

हारघोडो सो। धीर धीर बाल्या 'माँ आजाणी र आँ पच्चीस बरसा म हूँ की सीख्यो का नहीं, आ तो कुण जाण पण इत्तो जरूर है कै म्हारो दिस्टीकाण पना मू की न की जादा विसाल अर व्यापक ही हुयो है।

'कुण काँई जाण, हूँ जाणू तूँ सीख्या है जिको तूँ बतावतो काठो हुव तो ल, हू बताऊ—तूँ सीख्यो है भाषण देणा, नारा लगाणा हडताळ अर अनशन प्रचार अर प्रदशण अर आर बदळ तनै मिल्या है जेळ लाठी चाज, आसू गम अर गाळी। प्रस्ताव पास करया है त अर हीजडी ताळी बजाई है। एक ऊछळयो है दळिय रा गुठला सो अर दूसर दबायो है बीच एक घर म दो घाटा-बळ विखरयो है बच्यो नही। कुर्स्या री छीणा भपटी मे समद अर विधान सभावा म हुई है कुत्ताफजीती जूतमफाग जाड तोड साँठ गाँठ अर नही हुणा हा जिका काम। चिन्ता कान है रे जमीन री—उदास प्राणा री ? दिस्टीकोण थारो देख अर धरती सूँ हट र कुर्सी रै आ लाग्यो, ई सूँ वसी व्यापक भळ त्रिलोक हुसी ? चोखो कह र बण एकर आ क्यो अर पसवाडो फोर लियो।

वो अभिभूत सो सुण बोकरयो फेर की रुक र बोल्यो, 'माँ काँई दूख थारो ?

"कठ बताऊँ आखी चेतना ही दूखँ म्हारी पूरब पच्छिम उत्तर दक्खिण सगळा पामा।

'ला दाबदूँ की ?'

'हाँ दावसी तो सरी तूँ मोडो वैगो मनै वदेह पण धिकै जिते धिक्ण द तो म्हाधी ही वात है।'

'तो हूँ काल गांव खानी जाऊँ फेर ?" असमजस मे उळझ्योडो सो बोल्यो।

'जा थारै जचै है तो ? पण आवनो थारै सूत सूँ थोडी बार री बात तो नही हुगी हुवै वठ ?'

नहीं माँ इमी काई बात है ?'

'तूँ सोचै है बो रूप ही सदा साचो हुवै, ओ कोई नेम को है नी ? खर जावै तो है तूँ पण आस्था की लाल राखै', कह्यौ पछ धीरै धीरै बीरी आस्या लागगी जाणूँ बीरै माराम मे चालता चरा एकर की मोळा पडग्या हुवै पछै बो ही नीकळर आपरी खगोलडी खानी टुरग्यो।

× × ×

कोस चाळीसेक माथै गाव है 'अमरपुरो'। पच्चीस वरसा सू देख्यो। बीरी तो काया ही पळटगी। सडक हुगी बस लागै। दो च्यार दूकाना प्राइमरी स्कूल डाक डिस्प सरी कुओ वळवक्री स।

गांव आया भारतो बाबू न तीन दिन हुग्या पण पार पडती

की लागीनी । बाता तो घणी ही स डोलजळरी कर, पण पार एक ही को घालनी । कच्चो घर हो पूस ग्रर माटी रो । पूम की उडग्या हुसी जुग्रारी गे घन उड ज्यूं कीं गळग्यो हुसी खळ रो ग्रभिमान गळै ज्यूं खोस खोस'र कीं लोगा वाळ लियो हुसी तमाखू रो पान बाळै ज्यूं ग्रर माटी माटी म मिलगी नेल चिल्ली र मनभूवा सी मन री मन म । काळ कोट किला न ही को छोडनी तो कच्च घरा री किसी गिणनी ? सब मिलि एक वरण भयो सुरसरि नाम परि जमीन पडी ही पाघरी, न कोई सीव न सेनाण। बाखळ म दो खेजडी हुती, नाति ग्रर भक्ति सी। बांन कण ही ठण्ट दिना काटली कुण छोड हो बांन ई टम म ?

ग्रब बी जमीन पर पुमपठिया सा दो तली ग्रर एक क्रिस्टान बस हा । एक कूणा म एक ठूमड ग्रोरिया मांड र पडी मे पलार ली । काश्मीर म एक नुंव काश्मीरी री यारी सृष्टि करली— सून देख र पण बीरी खिमता ग्रांसू टकर ?

भारती बाबू गांव रा दस पाच बूडा बडेरा भेळा कर र पूछ्यो । बां बतायो हां भाइ, ग्रठै प्रभुन्याल रो घर हुया करतो बीरी ग्रर म्हारी एक दांत रोटी टूटती । बीरै खुग्यां बीरी लुगाई मापर छोर न ले र शहर खानी गई परी । एक बार तो बा ग्राई ग्रठीनै, पण ग्रबार वा दो जुगा सूं ई न को वापरी नी । ई सूं जादा जीवन्त ग्रर सावत सबूत ग्रोर कोई पेस करता व पण कोई मान जद ?'

पचायत म अरजी पानडो दियो, तेली, ढोली, ख्रिस्टान सै आया, आपस म सरच परा र। वां कह्यो 'म्हानै अठै वसता नै जुग बीतग्या ई जमी में कोई मांग ही कोई ? म्हारी, म्हारै बाप दादा री। न भाई बीरै सूं दवा, न लड़चां माथा रगीजै तो रगीजो भला हीं। भारती बाबू लकडती री कदेई खाई तो भला हीं हुवैला पण चलाई कदे ही सपनै म ही का हो नी। ऊमर भाषण दिया नारै बाजी करी, का थोथा प्रस्ताव पास कर र ताळ्या वजाई। माथा रगीजण री सुण्यो ज" धूजग्या—आंधी म घड़बो धूजतो हुवै ज्यूं। दैत हा लोगा रै मूं मामी तिस्सो पयी पो खानी तकतो हुवै जिया।

पच नै आप आपर ल ढब रा हा। न्याव विया ही हो जिया सयुक्त राष्ट्र-सघ म प्राय पासरिया करै। मूंढो देखता जिसो ही टीको काढ देवना। भारती बाबू सूं बांन काई लणीं हा। वा तीन घरा रा तीस बत्तीस वोट हा मौको आया ऐम० पी० अर ऐम एल ए ही बांरी ठाडी र हाथ लगावता, तो गांव रा पच सरपच लार फिरै ई म इचरज ही कोई ? पांच सात चलता पुर्जा रा मूंढा पला मूं ही बद कियोड़ा हा अर दो च्यार नागा बठ कदे कणा ही गुटकियो ले ही बोकरता। दो च्यार स्याणा आदम्या भारती बाबू नै छेडै न र समझायो, "भाई अबार बख्त जमानो और है, अठ कोई दाद है न पुकार अर न म्हे थारी पेस पडन री आस कठ ही। म्हांनै पूछै ज" ता ई विचाळतै सीरै पर बाडती रा कांटा रोप र, सूं हीं कब्जा कर न थारो, जे धन दीमै जांवनो, तो आधो लीजै बांट। नहीं तो पांचे

बरसे बो ही लड़ाई म पड़ग्यामी । मुकदमा में फां. है धारी ही सिर पर धारी ही जूती । काश्मीर गालर भारत जिम माट दग म हीं यू० ऐन० घो० री कचनी पाग कूबता पुग बोलग्या कोई हुया, बिदाई सा घोजूं मटक पथर म ।

मा बात भारती बापू री स्मृति म इना पाईजी ज्ञिपा माळा रो मिलियों छोर म । बो सोच्यो, नहीं नहीं करता पो सारा पांच सै छयल गज तो हुव ही सो । पाना बता जिको चबाटर तो सो राया सो गज पर ही लाडो है बीं सूं च्यार पांच गुणों घणी । गुण चरसी तो इता ही घणा मापों न ता । अमी दावली, पुन हा दियो सही मध गमगी मगान म ही दी नहीं आ धयायण रा सो तरीगा है हयो ही बो मायरो जो पता लिया पणगरती रो । ऊन्रो जियो दो दाणा सूं मुट्ठी भर र मर कोई सू जियो सान पाणी सूं भरीज र राजी हुव दियो भारती जी ई सीर नै स र हुम्या ।

पांच सात आठां रा टुकड़ा रोता र बीं घोड़ी बोरी मयूरड़ी पर धापरो हक कायम कर बाहर न टुरग्या । पूगग्या मां रान सिल्या । सूनी ही बिया हीं उगरा मर मळगाईग्योड़ी दरसता ही हरी हुगी एकर । बीरी पांख्यां म आणू आगती उत्सुकता भारती न मळीकती हुय ।

'मायग्यो रे ?' मां पूछ्यो ।

'हां मां' उत्तर बीं बटनो जवान सूं मिल्यो । डोकरी रो

माथा ना बीं वळा ही ठणकग्यो पण बा इत्ती ऊँडी को गईसी जिनी मारती मादी ही।

बा मळे बाली धीरें सें "काम पेम पड्यो बेटा ?"

'पड्यो है माँ बीं तो ?'

बीं तो किया र ?'

माँ आपणें घर रो बठ कोई पुत्ता सैनाए को रह्योनी इण बग्मा में। बींनें पचायत री जमीन समझ दो च्यार जणा मारग घर मांड लिया बठ। बगता नै मबै बींनें बरस हुग्या। बिचाळ मापणों एक नारो बक्यो हो माली, बो आपणें पल्लै पड्या है—बटी मुश्किल मूं।

'कीगे ? माँ री भृकुटी म त्रिशूळ सी तणगी मर मॉख्यां म माक्रोस री लाम लीवी।बोली पचायत बीं नै पट्टा दिया है ?'

'पट्टा तो को दियानी।"

तो पचायत री किया हुई ?'

बो सुण बोवरयो भींत सो निरूत्तर।

'किनोक हुवनो रोगे ?

गज महमेव म म्मजे।'

रिश्मि में नोन माना हीं ? यांन म सीरो ही माली ?"

थोड़ी दक र मघर म मळे बोली, "आंवता हूं थोड़ी मिरचां मा

लेग्यो होनी ?'

'मिरचां, माँ ?'

"हाँ रे, आंख्या लाल करण खातर बीं बांगती अर भेळी हुनी जभी तनं एकर घूर'र को देख्योनी जरूर देख्यो है पण बा तनं इयी साफ को दीसीनी जिमी कोई मोटिंग दीसै ।" कह र बण पनकां एकर बन्द करली । बींरा धूकिया एकर बटीज्या अर हाथ थोड़ा ढीव्या जाणूं बीं रै शरीर रूपी बिलोवण म बींरी मगळी चेतना अथवा सूं एक साग मथीजती हुव अर बीं र प्राणा री भेळो हुयोड़ा चूंटियो ई मणचीन्ती ऊष्मा सूं माँय री माँय गळनो शुरू हुग्यो हुव, अर, काळज री पीड़ दूणी हुगी हुव । दो मिण्ट बाद बण डोळा ऊपर उठाया, दिस्टी बीं पर थिर करदी बीन एकर इया देख्यो जिया पोस्टमाटम करण सू पैला कोई सर्जन कीं लाश राती देखतो हुवै ।

बा बोली होळै होळ हू मरी तो को होनी रे कम सू कम पूछणों तो मन हीं हो पूछण जोगी तो हूं हीं हो । त म्हार च्यारूं दिस मे बिखरयोड़ अबोध अर आनान्दित प्राणा र हंसत भविष्य, जीवन्त वतमान अर गौरवमय अतीत न कोभीतर सूं किचरग्या है, अर किचरग्या है म्हार सजोयोड़ सपना न हूं बाँ ऊगत बूंटा न अब किया समझाऊँ रे ? बवतो बवती बा निढाळ हू र मौन हुगी जाणूं ई म अबै कीं को बच्यो हुवैनी ।

भारती बावू मच्छ मे जमीन गमाई भारत सरकार र सै

गिड सा मूँढो टेरया खड़ा सोच हा कै 'काई करूँ', पाछो जे जाऊँ हो तो किसै मूँ'० प्रेस्टीज रो सवाल है मर्वे तो, लोग काइ कवै मन हुग्या जिको ठीक है', फेर बा एकर मा सानी देख्या बा विया हीं पडी ही बचेत धर धं गग्घू सा नाड नीची किया फेर पाछा विया हीं—सागी सासै म ।



आँधै नै आँख्या



गाँव सूँ अगूण पास जठै मवार एक छोटो सो जगळ है पमा बठ एक घोरो हुया करतो—फारम र बाग्स्या मारू री अपूरण लालसा सो। शुरू गुरू में न बीरा वा रूप ही हो अर न उपनिवेशवाली गोरी सरकार रो सो बित्तो बडो बिस्तार ही। बध्यो बिरो सूँ को धाप्योनी बधतो ही गयो सुरसा रै मूढ सा। बीरो पूनो दिन दूणी रात चौगुणी बधी—भ्रष्टाचारी मिनिस्टरा सूँ मिल्य की बेईमान अर नकिय बौपारी री सी। पूँजी अर प्रसार री लालसा म बण पला तो आपरा आव अर कान दोनूँ गमा दिया जिया पद अर प्रभुता म आसक्त काई अन्यायी अफसर गमा बठ, पछ धीर धीर ऊमर सू स्वासा पला ही बो एक दिन प्राणा सूँ ही हाथ धो बठो काळज क सर लाग्य रोगी सो।

ई री निवाण सूँ दो पावडा परिया लोक कल्याण मे लीण एक खीप खडी ही शिव री आराधना में ऊभी अपर्णा उमा सी एकली। आज बा ब्रह्म मुहूत म न्हा धो वाळ बाळ मोती पो टूरी पौसाक

घाग्ग किया, समग रै रग म भीजो चँदण रै चूण स कँवळै रेतिया गिद् पर ऊभी वडी ओपै ही। बीरै ग्रग प्रत्यग पर ग्रणगिण सोनळिया फूल दीप हा ग्रर हाथा म कुण जाणै कित्ती मरक्त वरणी फळयाँ—ग्रागिक ग्रभिन करती की सागर क या री कँवळी ग्रागळया मी। रेगिस्तान री राजकुमारी सी वा चैत री सीतल म द सुग धित पून साग लुळ लुळ लास्य री रिहमल करती हत्ती मस्त ही जित्ती अ त राळ म उठी, स्याम सु दर री रूप छबि पर चत य महा प्रभु री वृति। बीरी मीठी ग्रर मादळ मक दिमदिम त म इया फलै ही जिया की सच्चरित्र सत री सुजस। बीर सगा र सज मोड ग्रर ग्राव भाव खानी, इ द्र री ग्रप्सरावा ग्रधघड़ी रूक ईसक सू देख्या करती, पण बीर माणस मे न नाच री गध न रूप री गुमान ही। न की साग ग्रडो—न कीरो ईसको ही। न वा राग म ग्रांधी ग्रर न विराग म उदास ही—बै सुख बस ग्रर बिया ही मन बसण दै वम ग्रो छोटो सो मूळमन ही बा सोस्योड़ी ही—ग्रापरी मा धरती गतै सू।

एक दिन ग्रषाणचकी जार री बधती बासना सा घोर री गरम रेत जद बीर पगा न परसती ग्राग बघण लागी तो बा एकर चमकी जिया छळी री छाया मू कोई माच्यो। झट घण रोस रा लाल डारा खींचोड्योडी पूछती दिरटी सू बी खानी देख्यो। बो बदनीत ग्रर विस्तारवादा सो की का बोल्यानी खाली एक खळ

मुस्कान बीर होठा पर सच्चाइ रवड सी थप र पाछी ही भेळी हुगी—मा दरसावण क हू वर जिको साच समभ र ही करूँ, तू की लागा करे तो—करलिए भजा ही।

धोर री नीयत बीन दीसगी—कांच म दीस ज्यूँ। बीरी हमी लार ऊमरना मासार बीन इया लाग्या जिया की बिपरम्या र भ्रू विलास लार बीरी घातक कुटळाई री दुरग ध।

'ई सन हो बसणो मर ई सूँ ही बर बिरोध मा सोच र एकर बा दुविधा म पडगी, फर सोच्यो जद प्रस्तिरव ही राखणा है मापान तो सत्त्वपालो नाँख्या रिया पार पडसी, पण पला ज गुट दिया ही काम नीकळ तो जेर देवण रो जतन ही क्यो करा? बा बड मिठास सूँ बोली 'भाई धोरा?

पला ता दो मिण्ट बण श्रांख ही को खोलीनी, जिया कोई भेट पूजा ल र नोकरी देवणिया अफसर की गरीब री पळोषण ोण प्रार्थना पर निजर नाखतो ही दोरो हुवै। फर को गरमास स्यूँ बोल्यो, रोग काँई है क्यो चमरखी सी कच कच करे कामतू?' खींव न चन्त सूरज साग बी रो पारो खासो ऊपर चढतो लाग्यो। बण सोच्यो चालता ही जिको मलाड ऊठ सो तावडा काढ मर बोलता ही जिक र बासत बरम बो समभाया सारो सो क म मानसी ' तो ही बा भळ बोली बा सागी सुरा म तन याम हुगी क ?

काँई याद हुसी तू थारै मुतळब रा आखर सुणावनी पला? बो बात न बिचाळ ही बोन र बोल्यो।

सींव तो भठै ही ऊँची को बाईनी, बोली "भाज सूं पाँच सात बरस पैला भापणी वास्या भाग भठै एक समतळ ताल हुया करतो— परमहंस री चित्तवृत्ति सो भर हुनो सावै हाथ न एक छोटी सी भाड़ी क्यार्‍ं मर वीं रै क्यार पाँच गैरगम्भीर खेजड़ा सज्जन री कृपा सा, का सूं चिप्योड़ी वा सागली सल्लरधां रै पोरै में भायोड़ी गज लिछमी सी। चौमासै म जद भरी हुनो तो कुदरत रै सिणगार दान म वा जचा'र राच्योड़ी भारसी सी लागती का नहीं ?'

लागती न लागती रै छोड तनै एक ही कहूंगी क तूं थारै मुलक री पटोळियो पर फानसू नटूर पटूर मन कम पसद है' पारो भी चिड़तो बोल्यो।

'पटोळिया म्हारा ही करसूं वीरा पण भी सुण तो खरी पला ?'

भच्छा क' काईं कवै त' ?

सींव जाणगी क जद पारो ही तो ठरयो, पूंजी भेळा करोग्यो र भेजी ही हुय जाली लिख्दी भठै ? वै रमायन चाल्यो घर बोतिय रै रोबदिवं मा भूरा ही हुवै। मर, आगान पारा भाणा का गजरा सिलना पान पटाना जिको ता पट्टोल्या। भोति बनावै कै भठ काई बाग पमा बात सूं ही निवेड़ो करगो धी सूं पार न पड़ ता, पारा मुवरी ता भनगरत दीसै ही है।

बस भठ बारगी व न ग रूप भादमा, बी पारसा में लिन स ता गोतपणा जोव जिनावर भर मनटमा येभुद्ध बावरा झुलिया

देख राजी हुना, अर रात न भिर्नमिल ताग सूँ भरयो आभो, वी म आपरो रूप निरख कोड सूँ ऊपर नीचै हुनो चमनो ही को होनी। टोघड़िया ताल म नरना कून्ना घाप ज्यावना जद, इमरत म पाणी मूँ छक गाछा नीच बठ उगाळो माग्ता इया लागता जाणूँ वै मू न्हो हुना हुना र नाडी गे गुणगान गौता हुव अर का तुरियावस्था र अवधूत सा सूता सुख री लरा लवता पलक ही को खोलतानी।

नाडी ताल रै विमान शरीर रो न्हिमैं ही नीरमळ पाणी वी हिन्द रा प्रम रस हो हबोळा वी री भाव समष्टि परगोखण बीरी श्रद्धा अर पा र पाण आयोडा न देखण री उठती अनवरत लरा वी हिइद रा अन्न प्राणन्द, जळ री थिरता ही बीरी शान्ति। भाई घोरा बठ लुन्तो प्रम, बधता वूँटा ऊँचो आवनो ताल, राजी हू हू नाचना बाछ्ना अर गावता ग्वाळ बाळ। तूँ ही बता अबै मायकता इस हिन्द री ही है का नही कोरो पन बधाया तो धरती राजी को हुवनी की सूँ ही ?

दूजारी बडाई सुण्या बी र टोटिया सा चढता। बो बोल्यो, हूँ समझूँ, तूँ मठ बोल, पण थार आँ टोपा रा असर म्हारै पर कीं पडनी ? हूँ मगूँ अर तूँ दळै दळबोकर म्हारो काँई ल ?

खीप साच्यो चीकणो भाँगो है ओ टोपा काँई जे मूमळा धार बरस तो ही नैंत किसी फुल फळ पण अबार ही हिम्मत क्यो हारूँ, कदाम कोई टोपो रठ ही ठर हो ज्याव तो। बण मळे मूळ सू मिना र बात न चालू करी देख बाँ साग आयोडा नान्हा नान्हा

गुवाळिया नचींता हू ताल मे लूणाघाटी इया खेलता जिया निष्काम कमयोगी समार री लूणाघाटी म हँसता मुळकता खेलै । बै गाळा पर हाई हाई मर उवक्ड घुक्कड़ खलता, कदेई लुकमींचणी मर प्रोधल घोटो यक ज्यावता जद माव नाडी रै वारणै मर बा इयी उदार क लेंवनी एक लेंवनो तीन । दैवली खुसी, ताजगी मर इमरत री घूंगा लेंवनी खाली यवेलो ही। फर लायोडा दुपारा खुलता आरा—रोटी कांदा गुड री डळी का मोदक न मात करै इसा चूरमै रा चीडिया । 'म कूंपडयाँ रा जाया मेल मेल म मठै कमर कसणी सीख, मर मैं ही माग आ'र धरती री हरियाळी रावणा खातर मोरचा लेव,' मा सोच'र नाडी री कोड किनारा सूं ऊंचो प्रांवतो। हूं श्रो विलसतो बीरार देस बिना पाणी ही बधनी ' कर आएकर कुम्भक कियोड़ै साधक सी चुप हुगी । फेर बोली तनै ठा है बीरा, बीं बेळा श्रो ही ताल, कुबेर नै मात करतो—कूंपळ सो काचो मुरट, रगम री लच्छी सी कॅबळी धामण, पून साग लटारा लेंवती सेवण, सेत मर गुलाबी हंसी हंसती धान पुन्नी मैवला गोय सरीर नै सजीवणी सा लाटो मर मिनावडी, फुरण्ट मर काणा रोटी, सिणियाँ मर बूई, कुण जाणै किसी किसी जडी बूटयाँ सूं भरयो श्रो ताल नदण वन सूं दो हाथ ऊपर उछळतो दीसतो। बीं वेळा तूं छोटो ही हो उमर मे नगै भावार है । 'मर घोमाम में ईसकाळ माक सो उग्गम मर जवागै सो यकयोडो' आ श्रोर कऊ ही पण को कहीनी मोतिवान ही बा ई खातर ! 'पण भापनी गोमा बीं वळा जितो ही मवार बोली को है

नी।' इत्तो कह सींप एकर प्राणायाम म रेचक सी खाली हू र चुप हुगी। घोरो जाणूँ इत्त न ही भड़ीक हो बोल्यो 'थारी शोभा हुसी वीं वेळा जादा म्हारी तो मवार है भर भाग हुमी ई सूँ ही वेसी।'

भव सींप र भा जचगी क भो रूसो आर सो प्रकुसहीण भर इक्स्लखारियो है समझाया ही ज मान तो जात न बट्टो लागै है नी पण देवो यड किस हव बैठे ? मन जे भा ठा हुती क भो एक दिन म्हार भस्तित्व न गिरण वातर इया मूँ फाड़सी तो ई री दूणो पासो पला ही कीं न की हूँ कर नांखती तो भाज भा नोबत म्हार पर क्यांन बाजती भर कोई बातनी जुँभा रै भार मूँ धाधरियो नीस र निभाव किता घडी हुसी ई री भाँख्या तो छेकड खोलणी ही पडमी।

बग चिन्तित हू भापर च्यारां खानी देख्यो। बीन दीख्या कठै कठ ही, टूटयोडा भर भघ मज्या सा बूँथा रा डांखळा—खून सूकी मँ मजूर भँ या री भागळयाँ सा दीख्या बीन भुळस्योड़ा भर काळा बठ थूर, सेवण रा बूजा—बळनी लू भर लख म सडक किनार सूता मजूर टाबरां रा माथा सा, बग देख्या सार्ट भर सिनावडी रा उ‍ाम गुच्छ—रोगी भर प्रभावग्रस्त टाबरां री खुस्योडी चोटयाँ सा—दीसो बों न मद्दै मद्दै सी श्याम री जडा—पाणीभरै मे गुसत भसहाय रू वटा सो, भर साव भूमी तिरसी गठिय री जडा जमीन र चिप्योडो—ईस र चिप्योडा गळनी मू जर सालासी। गरीब भर भसहाया री भा बिलखो बिलखो ससार—ठीक इया हीं जिया

री बड शहर र बार — मारवाड़ री मऊ माळवै जांवनी अकाळ ग्रस्त नाग भूखा री टोळी।

■ कांई मदद करसो आपारी एकर बा भळ गैरी चिन्ता में डूब र एडी सूं चोटी तांई कांप उठी। कीं ठर ठण्डै माथै सूं भळे कीं, सोच्यो, बो र ममम म आई कै मोटोडा नै जाचणो ही फालतू है द्व तो बा आपणी सुणी अर कद वै आपणो माग कांधै मूं कांधो मिला र जूझ्या ही ? आपणो मुतळव जद कद ही सरसी तो आपू हीं। ई खातर आंनै ही जगाणा है जिया तिया। जे कदे ही थोडी बेळा आपडी तो मैं हो भला की काल घुमाया। माटी मे मिलणा अर वीं सूं उठणों सामो एक आ ही जात जाण—दूसरा नहीं। मगटण रो सबळा तो बस कर लियो पण वैर री उदासी थोजूं वींरो लारा को छोड्यानो। इत्त म वीनै सुणीज्यो 'वन आज कीं बिलखी दीसी ? बण सामो न्हेयो एक यूर रो बूजो हा।

हां रे, की म्हार खातर, की थां खातर, पण सगळा सूं बादा वी खातर जिका धरती र गभ म, गरमी अर ग्रेघवार म अमूज्योडा थारै ग्रांवण समार र पून पाणी ■ तरसै अर तरम धरती पर आपरी सुवास पैसावण। कुण जाण वै कदरा थारी म्हारी ज्यो नोध लुवयान्त ग्रोसर नै पडीक अर ग्रोसर रा पग माप राख्या है अणु दुष्ट घोर।

आ बात सुण र आम पास रै सगळा भार आप रा कान खड़ा कर लिया। सीप बोनी भाई सामां यो आपणा अर

आपणी आँवती सन्तति, सगळा र जीवन स्नान पर वरळ फेरणी चाव ई खातर बचणो है तो ई रो वी न वी आबतो वरो । ऊपर फिरधा पछै, आपा ससार री हवा फेर खाई ही है भर आपणों वस फेर चाल्यो हो है । सै बोल्या 'बैन, म्हारो तो खुद रो ही गळो दू'बीजै, पार पड़नी ओखी है ।'

'ओखी हुवो चावैं सोखी मो आपान न डरपा छोड भर न विलाती करथो हो बगस ।'

तो ?

'तो कयांरी ? कमर कसणी पड़सी और कोई उपाव को है नी ।'

'थारै सागै हा हूं क'री सो कुम्र में कूदण न त्यार, सगळा एक आवाज सूं—बोल्या ।

'मन भा ही आशा ही थाँ लोगा सूं अब थे करो ही मत होठ रो पटकाणो ही को लागण दूं'नी थाँनै ।

पगा सन चिण्यो गरीब गठियो बोल्यो बन आप कठा ताँई मायोड़ा है जे गुटक पाणी सूं कठ आला करल्यूं तो हूं कीं बताऊँ क दो हाथ इया हुव ।

'किया रे ? वा अचरज सूं बोली ।

'घोरी बघ ज्यारागळ तो हूं बघूं आठागळ भर दो दो आगळ पर अगद रा सा पग रोप दूं—प्रणगिण पग है म्हार गात में ।"

1

'मुरको ही नहीं घणाऊ मिलसी तनै एकर जम्यो रह तूं।'

खींप न माथा वेंधणी, चिराग नांखदी आग सूं आग बधण न।

× × ×

बधाल लागग्यो। वासते सी बळती शुरू हुगी। कलाळी, मांची पर बकाळ तो इस कुमाणसां वास्त मोर माथा। खर, म्हारी तरफ सूं तो हूं एकर मळं समझाऊं ज रस्ते आवं ता ठीक है, नहीं इस दो महीना एकर टम तो काढूं क्यिा हो ?

पून साग लुळ लुळ खींप बडी नरमी सूं बोली, हां बीरा, तू बध्या, माछो बधते न हूं क्यों बरजूं पण, हूं थारे पाड़ोस म बगूं इत्तो ध्यान ता सूं म्हारो ही राख, क, कम सूं कम, थार सूं ता हूं दूरीजूं नहीं, ओणों तो हूं हीं बाळे का नहीं ? सूंटा मादमी है, रखा करो जिकी ता दखी।

हिमा रो ममूरजोड़ा घोरो बळती मांची में एकर खळबळी दे र हंस्यो मनाय सो। रीस तो एना सूं हा। रीस रा वाता कण, दूर दूर ताईं खिंचिया, बूर, बूई भाडखां पर सूकती जड़ां पर जा र पड़ग्या। ताल र मसीत बमब न याद कर क नाचग्या बापड़ा। बो बोल्या एर, 'धोर, थाईं बोरो हो, भाई है म बन। माथा आपो आपरी है। पता नहीं, त जिसी जिती बोलती म्हार पगां नीच दब र बाबाममरण सू छूट, मुक्त हुगी। त जिमी जनानी बोमी सुण,

जे हूं आगै पांवडा मेलतो तो आज तांई अठ किया पूगतो ? गादडा री हूनी हू सुण र सिंहा रो विहार रुदे ही रुकै ? थार बचण रा उपाव त सू ताव आवै, तो मोकळो कर भला हीं पण म्हार रस्त म आसी बो आपरो अस्तित्व गमा बठसी। म्हार बधत पिंड न जाण्या चाहीज—हूं कारी हो की सुणूं नी,' बधत हिटलरसो बो बोल्यो।

इसो मटवोलो मत बण गुमान राजा रावण रो ही को रह्योनी। मोटी बोलती थार पगा नीच दब'र आवागमण सूं छूटगी का थारी य त्रशा नीच आ र मोसीजगी माय री माय। थारी आहू अर अभिलाख दोनूं अकास म गूंज पण बधू हवा जिक दिन उल्टी चालगी, बी दिन थारा पूरिया लदता ही दीखसी, विश्वास नही तो धरती रो इतिहास उठा र देखल।'

'तो थार कैण रो मुतळब ओ हुयो क हूं औरा र सुख दुख, हाण लाभ रो ध्यान राख राख आग बधू। अंगूठ जिता जिता ना कुछ घास फूस है वां नै ही पूछूं क्यो सा थान कोई तक्लीफ तो को है नी, आगै बधू भला ही ? इसा सूं बात करता ही म्हारा पुन अर प्रस्टीज दोनूं घट, अर बधण री जे इसी बात हो हूती तो आज धरती पर न बडा बडा सम्राट ही हुता अर न पूंजीपति ही।

खर छोट छोटा सूं बात करता थारा पुन'र प्रेस्टीज कम हुता हैला, म्हार तो बही अधेर री वेई है। जिका आसया देख खाइ वां मोटोडा सूं मन काई ? पण तूं जिकी पूंजी रो गुमान करै, बा तैं खन आई कठ सूं, बा तो समष्टि री है थारो ई मे काई ?

"समष्टि तो है ज्यूं ही है, पड़ी है बा है जठै। बी सूं नीव्ळ नीव्ळ हर इकाई आपरो विकास न्यारो न्यारो चावै। समष्टि रा ही नेम है अर ई सूं हीं राजी है बा।'

पण समष्टि सूं नियोड़ी पूंजी समष्टि खातर ही, खतरो तो नहीं हुणी चाहीजै, जियां नदी रो सम्पत्ति धरती पर मगळै हँसी बिखेर पण, जद नदी आपरै ही विश्वास म ही आंधी हू आग बधै तो आखै जीव जन्तुवां रै हिड्द म हाहाकार अर धरती पर कुम्भी पाक री सृष्टि हुवै।

'हुव सूं हुवा पण ई मूं नदी कद मानी।"

नही मान जद ही तो फेर नदी री काया मै मिनख मिल र बांधै बींरो उफाण मदन कर दासी ज्ञन सूं कोई गोलीपो कराव जियां करत बींन।

'सींव सूं टींगर री आग में आवै जित्तो तो बोमो तो है, अर बिना बधार बध बध बाता इसी धमकै जिकै री हून नहीं पण ॥ जिसी मामलो नै म्हारी ताकत रो मोजूं ठा ही कोई ? अकाळ अर अकळती आंधी में जद धरती रा आखा जीव बिन्न बिलावै बी वेळा म्हारा पू जी अर पत्थर बेसुमार बधै है पणों ओरोजूं जियां कोई पान रो धींगड़ बोपारी अकाळ म एक एक दाणा रा मोल कर दूणाज। भायाहो मोवा धूड बां सो मूरख हुग धरती पर— सोदा करते सईको बदेई में चाव।'

'हां बो दाण दाण रो मोल, जरूर कर [illegible] बी [illegible]

मोल एक दाण सूँ ही माडो हुव अर इ सबँ बीं हाहाकार म सूँ हीं जिक न थो विकास रो बगत समझ अर विनास रो कोई उगम फूटै जिको बीन अर बींरी पूँजी दोनां न ल डूबै। मवाळ नै तो बीनै सोन री वेळा समझ आपर कोठा रा किवाड मोन र सूँ बी घडी र बांघ देणी चाहीज जिक सूँ मच फूट बींरी। बडो बो जिक र पिंड पर रोवता हस अर भूखा धावै।

'तो इया म्हारो जिसो बीनैं हीं सायरो को है नी? मैं पर जिसो कोई खेल को है नी?'

'हां है सायरो थारो जिको वेळा तू ग्नि भर री मी-मोठी दो घडी नीद म बेचेत पडया औरा न चींघणरा सपना सव था दिन माळ जियां रात नैं ही लोमरी आंधी में दम र रोगी सा सांस लवतो हांफळा मार बोवर, बी वेळा घरती रो सुख लूटणिया समाज विरोधी डाकुवां नैं, थारो सायरो मोकळो बै थारी गोदी म घा र घडी आघ घडी आपरो मूँ धुकोव, अर वा सांप वैणा अर परडा थारी काया पर किलोळ कर कर पमर अर, तूँ ई पर राजी हुंतो मनम माव ही को है नी बलिहारी है थारी बुद्धि पर धुधकारो नांखू तनै चाल नही लाग ई खातर। तन आपन तो हँसी खेवण रो हिसाब ही कोई, पण आ जिसोक कै औरा न हँसता देख्यां ही थारै लूए बरस। आ हाला तूँ लम्बी ऊमर लेलो मुश्किल है।

'तो हसी न हूँ चाऊँ, अर न मन सुहाव ही, खाली म ही ठेको ले राख्यो है बींरो? पाव री हांडी अर अघसेर ऊर ग्यो, देखो

म्हारी पूँछ्यो न तन ?'

खैर है तो म्हात्मा री पूँछड़ो नहीं तो नहीं सही, पण थारै दो, दाँतोंवाळो तो वो करूँनो। है जिकै मूँ तो थण थाप भर नहीं है बीं सानर मोय हाय। रही हँसी री तनै हीं जे बा माढ़ो लागती तो थारी मोदी म किसो बा को फूर्तीनो कठै ही। कहूँ जिको ठीक ही कहूँ, चिड़को लाग्या बाईं हुवै? आंधा अजगर, तूँ हीं जे हसी मूँ राजी हुनो तो तूँ ई हँसतै खिलसतै लाल रै ऊदरै न को गिटतोनी। त नाडो रै गर गम्भीर तल नैं दूर घिगाएँ ही बीं पर कब्जो कर लियो जिया काइ गुण्डो एम पी ससद री सीट पर कब्जो कर भट कुर्सी जा चढ़ै। थारो मूढ़ो देख्यै रो पाप है—थांमनो है तूँ। पूँजी नैं याद कर कर रोए पछ। माया तो मारगा लागसी जोर लाग'स लगा लिए।

मूँडै मूँ सँभाळ र बातै नहीं तो तूँ थारी जाणै इत्ती साळ तो लुगाई री जात समझ र, मैं की कायदो राख दियो थारो घोरो पासो रीस मे धा'र बोल्यो।

बा एकर थोड़ी मुळकी कर बोली 'सो मो समझा जिको घालणो र बा ही मळै बोलण न मर। मैंज ही त म्हारा कायदो राग दिया अर संयोग ही मोकळो कर दियो। सन टा हुणा चाळीज कै थवै तं रिश्य मादधारी री ध्या पर जीवण थाळी लुगायां नैं मरघानै पुग बीतग्या। अब री लुगायां ता त जिस्यै रै मरघ बजार

जून मार अर इज्जत रो दावो ऊपर सूं कर। हूं चोखी तर सू समझूं थारी ताकत न—दायनो ही दोरा हू भला हीं। पागळो है तूं पून चलाव जद ही चालै। त म न थारी गरमी, न थारी ठंढ, जीवतो ही मरच समान। दूमरा पर जियै फेर ही वोनण न मर डरणी म म नाव डूबो र सो मर।'

धोर न एक र स्सी चिडाळी आई क मत पूछो, पण बा उपणत दूध सी आपर ही खोरा पर ढुळ र नीच बठगी। लोभी अर नूल हीजड रो सो मन तो घणो ही बच्यो पण सिरक क्रिया ? बीरो मूं एकर काव मू भीज्य सूक जूतियं सो हुग्यो। बीन आपर पुरसाथ रो कीं कांई खासो भलो डाळियो समझ म आवण लागग्यो पण आजूं मूज बळगी तो ही बट को गयोनी। बोल्या 'तो तूं मरणो चावै गाद रा जद ऊधा दिन आव, बा रेगरा रा गावडा खडखडाव।'

जरूर हूं मरणो चाऊं पण इसा मस्तो नहीं जित्तो तूं सोच ? धरती पर आई हू तो की कर र जाऊं जन्न हो मजो।

"कांई ?

त जिस्य थूळ बुद्धि मोथै री सम्पत्ति परमाथ म लगवाऊ अर थारा फूटघोडा डोभा की साकळ कहूं।

'तूं ?

हां हूं।

'■ जिसी प बोल्या म्हार पगा नीच रोज चोथीज र मरै, टका नीच टीटरा सो।

"चौंपरा म तूं थारी बनाई ममनना हुमी पण थारै तूं
व ही चौंपीज मी जिवा विवक मूं थारा सामनो न ी वरसी ।"

'ता तूं सामनो वर लिए, म्हारा प्रमना पग मजै ब पर
ही पडसी दा च्यार दिन में ।'

'ठीक है ।' खींप चुप हुगी । सूरज छिपग्या मांजी यमगी ।
न्नि भर री पकवाडो घोरा, गाडा भार'र मान्न मरचान्न मा बँटग्या ।
म्हा आवण लागग्या न्द माडा हुग्या । पडना ग्यौ नीन छिग्गी ।
थान ऊपा किरणा सूं ठन्डा हुयो । चर्चियां सूं पण ऊंठ आया, थोरै
री पूंजी पर लिटपा फर निवाण म ऊमी ट गरीब पग स्वाभि
मानण खींप री आबाखा मो ऊपर उठी, बैन्टी बैन्टी बून्टी रा
माथा माथा गन्वा मार, स्वाभिमै भगन मा भारीनै थाग पन्या,
जिया उद्घाटण करण आयोना बाद मरनाम मिनिस्टर, मत्र पर
राखी मब अर मीठे री न्टा न ऊमा ऊमा चर र भ्रत्तै नदुनाग्ग
समारोह खानी किन्ना हुनो हुव । ग्रीप बा बोलीनी । ऊँठ उन्नियन
बादपाँ र एजेंट मो मळे मोर बीन नीं डली ग्थ्या थांग प्रांग्या सूं
मोमळ हुग्या ।

नींप मन गी एक ढाटो मा लम सूं भरया, ज्गाग भर
अधमूको मिणियाँ खडो हो, आंधी अर तावड म गडर पर मीतर
नमित उपाडै मजूर सो । बो बान्या दग बँत ई जम (ऊंट)
एन मीत पर किगोव वर साज्या है ?'

शत्रम स प बोना 'ससार रा नम है आग बें टूटचाना

ञ्जन मार अर इज्जत रो दावो ऊपर सूँ कर। हूँ सोखी तर सू समझूँ थारी ताक्त न—दायनो ही दोरो हू भला ही। पौंगळो है तू पून चलाव जन ही चालै। त म न थारो गरमो, न थारी ठड, जीवतो ही मरय समान। दूसरा पर जिय फेर ही बोलण न मर डरणो म म नाश हुवो रतो मर।'

धोर न एक र इसी चिड़ाळी आई कँ मत पूछो, पण वा उफणत दूध सी आवर ही खीरा पर ढुळ र नीच बठगी। लोभी अर नूल हीजड़ रो सो म न तो घणो ही वध्यो पण सिरक किया ? बीरो मूँ एक र काद सू भीन्ड मूक जूतिय सो हुग्यो। बीन आवर पुरसाथ रो बी भाई तासो मलो डाळियो समभ म आवण लागग्या पण भोळूँ मूँज बळगी तो ही बट को गयोनी। बोल्या तो तू मरणो चाव, गोह रा जद ऊधा दिन आवै आ रेगरा रा गोवड़ा खड़खड़ाव।'

जरूर हूँ मरणो चाऊ पण इत्ता सस्तो नहीं जित्ता तूँ सोच ? धरती पर आई हूँ तो कीं कर र जाऊँ जन ही मजो।'

"काई ?

त जिस्य यूळ वद्धि मोथ री सम्पत्ति परमाथ म लगवाऊँ अर थारा फूटयोड़ा डोभा कीं सावळ कर ।'

'तू ?

हा हूँ।

त जिसी प बोल्या म्हार पगा नीच रोज चौथोज र मर, टका नीच टीटणा सी।

"सीप ईं नूं थारी बात्यां समझनो हुसी पण थारै सूं ब गी बीचीज मैं बिना विवेक नूं थारो मानणो नहीं करसी।'

"ना नूं सामनो कर लिए, म्हारा मरण्या पा सबै त पर हा पग्या दो च्यार दिन में।

ठीक है।' सीप चुप हुगी। सूरज छिपग्या माथो धमगी। न्दि सग रा धक्याड़ो घोरो, गोडा म्हाल'र मार्य्न मरघोड़ो सो बैठग्यो। सौरा आवणु लागग्या जद माडा हुग्या। पड़ना हीं नीद फिरगी। चान्दणा किरणा सूं ठण्डा हुयो। परियां सूं एक ऊँठ मायो, घोरै रा पूंजी पर लिटयो पर निवाणु मे ऊभी ई गरीब पण स्वाभिमानण सीप री आकांक्षा सी ऊपर उठी, कँवळी कँवळी बूंदळा रा माथा साथा गन्दा मार, स्वागियैं भगत सो आगीन चाल पड्यो जिया उद्घाटण करण आयोडो कोई मरतोड़ मिनिस्टर, मेज पर राखी मेव अर मीठ गी प्लेटां न ऊभा ऊभो चर र अगल उद्घाटण समारोह खानी विदा हुतो हुव। सीप बो बोलीनी। ऊँठ उपनिवेश बाप्पा र एजेंट सो मळै मोर कीन ही डळी देवण वीरी आंख्यां सू ओभळ हुग्यो।

सीप मन ही एक छोटा सो लख सूं भरयो, उगास मर अधसूका मिणियो खड़ो हो, आंधी अर तावड म सड़क पर कांकर नरिते उघाड मजूर सो। बो बोल्यो 'देख बैन, ई जम (ऊँठ) एन मीक पर किसोक वर साज्यो है ?'

सजग सीप बोली, 'ससार रा नैम है बीरा, कै टूटघोड़ो

लड ही हमेशा टूट । टूटो ई सूँ मन काँई, अनिवासज मय मे चिंता सूँ आणी जाणी हो काँई, पण धरती रो प्यार जद ताँई आपणे अनुकूळ है आपा बध हो बोकरस्याँ रे।'

'न थारी छत्र छाया म पळत अर फळत न मन आज दो साल हुय्या पण त न कदेई मनै होठ रो फटकारो ही दियो अर न कोई माँग री गध ही थारै खाँनी सूँ मन मिली—थारो मदद पर जे म्हारा प्राण पुष्प चढै तो हूँ म्हारो भाग सराऊँ।

'अर म्हारी मदद करत न हूँ जे तन थारै घणा बिस्तार मे धरती रो श्रृंगार देखूँ तो म्हारी प्रफ्फुलता रा काँई पार ? मोको आसी जद हू आप हा बतळा लेस्यूँ तन। अबार म्हारी जडा सूँ मिलै जिसी खुराक ले र कुदरत री अनुकूळता आवै जितो किंया ही काम चला।

इत्त म ही एक लाँकी खीप खन आ र ऊभगी। बोदा बोरिया खा'र आई हो कठ सूँ ही। खीप री जडा मे पला तो एक छाटी सी घूरी खोदी बण फर जावती मळ र मिस गुळल्या खिडायगो बठ। खीप और घणी मुळकी कदास काम बण तो।

बसाख हो ही। बळती चाल बोकरी बियोगण र साँस सी।

घोरो बध बोकरघो मक्कोचूस र मनसूबा सो। खीर रा खायोडा टँवरा बण जद दरया, तो वो बडो राजी हूयो। बसाख ऊतरते ऊतरते बो बिलान बिलान ऊँचो खीप र च्यारा खानी

फिरग्यो ।

जेठ रो आंधी और जोर चढगी । धोरो खूब राजी, खींप मोन पण सजग । बा आपरी फळयाँ फोड फोड अणगिण बीज आंधी सागै उडा दीन्ही । धारो बिलान बिलान और ऊंचो आ र एक दिन माल मे बोल्यो 'क्या चन्द्रमा सोच लियो खींप म्हाराणी ?'

'सोच लियो जाडो सागै जठ घेर लिए भला ही पण जद ताईं तिल भर मूंड बारै रैसी मज न आपरी साधना छोड न बींरी पास्या ही खतम हुवै ।'

रावणी हँसी हुंस र बो बोल्यो 'धोरो लगावै जित्तो लगा लिए म्म बीस दिन रो बाजो और है—जाणूं ना हूं आध असाढ ताईं कठा दारकर, कठो दे नाजस्यूं, अर, फेर पांच दस दिना म 'गळगप', मां रै जलमी ही को ही नी जाणूं ।'

तूं दस बीस दिना री सोचै पण काल री ही कुण जाणै तूं इसो रामजी रो बटो को लाग्योनी मन । क्यों कानतू पूर उधाळै मन र लाडुवा सूं भला हीं किनो ही पट भर म्हारै कठ अवखाई है ?'

धोरो मूं ढीलो कर धीमो पडग्यो पण बींरी घूसण और तज हुगी । भाग सूं बीं दिन हीं मिह्या खोखा खा र आयोड़ी पाँच सात गाया धोरै पर आ र रात वासो विसराम कियो । जांवती टनूग बठै खेरा ञी छेरा करगी । धारै, बीम मूं नाक म मांगळी घातली, पण खींप री बळी बळी खिलगी । धूंधला

लड ही हमेशा टूटै । टूटो ई सू मनै कांई, अनिवासज अथ म चिन्ता सू प्राणी जाणो हो काई, पण धरती रो प्यार जद तांई आपण अनुकूळ है, आपा वध ही बोकरस्या रे।'

बैन थारी छत्र छाया म पळत अर फळतै न मन आज दो साल हुग्या पण त न कदेई मन होठ रो फटकारो ही दियो अर न कोई मांग री गध ही थार खानी सू मन मिली—थारी मदद पर जे म्हारा प्राण पुग्न चढ़ै तो हु म्हारो भाग सराऊ ।'

'अर म्हारी मदन करत न हू जे, तन थारै घण बिस्तार म धरती रो श्र गार देखू तो म्हारो अफळता रा काई पार ? मोको आसी जद हू आपे ही बतळा लेस्यू तन । अबार म्हारी जडा सू मिलै जिसी खुराक ले र कुग्रत री अनुकूळता पावै जिसी किया ही काम चला ।

इस म ही एक लोंकी खीप खन आ र ऊभगी । बोदा बोरिया खा'र आई ही कठ सू ही । खीप री जडा मे पला तो एक छाटी सी भूरी खादी बण फेर जावती मळ र मिस गुठल्या लिडायगी बठ । खीप और घणी मूळकी कदास काम बण तो ।

बसाख हो ही । बळती चाल बोकरी बियोगण र सांस सी ।

धोरो वध बोकरयो मक्कोचूम र मनमूबा सा । खीप रा खायोडा टवरा बण जद देख्या, तो वो बडो राजी हुयो । वसाख ऊतरते ऊतरते वो बिनान बिलान ऊंचो खीप र क्यारा खानी

फिरग्यो ।

जेठ री आंधी और जोर चढगी । धोरो खूब राजी, खींप मोन पण सजग । वा आपरी फळया फोड फोड असागिए बीज आधी साग उडा बोक्री । धोरो बिलान बिलान और ऊँचो आ र एक दिन माख म बोल्या "क्यो च द्रमा सोच लियो खीप म्हाराणी ?"

'सोच लियो जाडो लागै जठ घेर लिए भलाँ ही, पण जद ताई तिल भर सू ड बारै रैसी गज न आपरी साधना छोड न बीरी आस्या ही खतम हुवै ।'

रावणी हँसी हुँम र बो बोल्यो 'थीरो लगावै जित्ती लगा लिए दस बीस दिन रो बाजो और है—जाणू ता हू आथै मसाढ ताई कठा थारक्र, मडो दे नाँखस्यू, अर, पेर पाव दस दिना म 'गळगप', माँ र जल्मी ही को ही नी जाणू ।'

'तू दस बीस दिना री सोचै पण काल री ही कुण जाणे तू इसा रामजी रो बेटो को लाग्योनी मन । क्यों फालतू यूक उछाळै मन रै लाडुवा सू भला हो किमो ही पेट भर म्हारै कठ भवखाई है ?"

धोरो मू डीलो कर धीमो पडग्यो पण बीरी घुलण और तेज हुगी । भाग सू भी दिन हीं सिझ्या खोखा खा र आयोडी पाँच सात गाया धोरै पर आ र रात बासो बिसराम कियो । जाँवली दनुगे बठै घेरा नी घेरा करगी । घोर, बाँस सू नाक म आँगळी घालली, पण खींप री मळी मळी खिलगी । घू घला

छरां री हजारूं गोळ्यां कर कर, धोर र पेट न जाण्या जर्यां धोयो कर म्रापरे घरा न रेत सूं ढक लिया। हजारूं बीज खोखा रा पून सागै ई न थी न मळ सिड्या। दूसरै ि न भाग री बिरखा हुगी। म्रांधी थमगी धोरो हो जठ ही जमग्यो।

म्रापाढ म्रायो नु व विश्वास सो। बिरखा सुरु हुगी। रह रह हू ही वोछरी। तिसाय गठिय बळन सूखा छांट पडना ही सिर सांमलिया। हवा रो रुख पुरग्यो। खीप, सिणिया, खोखा म्रर म्रक डाळियाँ रा बीज, गायटा री गुठ्या बियनमांगी गुरिहना सा ई न बीन लिड र म्रान्तिकारयां सा भूमिगत हुग्या। बिरखा हू वोछरी- सूरज तेज दे बोकरयो। सावण भादवा मौज म्रर मस्ती लिया झूम हा। बीज म्रव पूवजल्म में कियोडा सुभ कम सा ऊचा म्रा र वधण लागग्या। खीप देख्यो बीर च्यारू मेर ही न्ही धोर री धणसरी काया पर माथ सिणियां फोग म्रर बांठ बोभा रा म्रणगिण म्रकुर ऊपर म्रायोडा पून साग ऊभा हुम है। यूर सेवण म्रर धामण रा टँवरा यारा ही लटाग लवता लाग नाच रो म्रम्यास करै है। पून मचाव म्रर बांठ बोभा देख धोर रो माटो पट रगमच है जीवोरो तो हुवै बीरो पण जोर कोई चाल ?

बूर्, कींटी कुचाम, दूधी म्रर गठियो म म्राप म्रापरो जाळ बिछावण म लाग्योडा है कोछा टांग टांग सावळचेत ऊभा है— यूनियन र मजूरां सा। धोर न म्रब म्रापरो पट की दखतो लाग्यो, अर पग की पाछा पडता।

मीप घीरजवान हो प्रमन हूं हू, पसरे हो घरती री घिरियाणी सी, पण घोरै आळे जिसा ओछी अर अहबादरण का हानी। भाड भखाड, वचरो काटो जीनै जाग्या लाघी बठ ही ऊगगी अर बा सागै हो बध वाकरी। बी ग्रापम जे कोई नाहैं सूं ना हो क्षुप ऊगग्यो, तो ऊभो मला हीं राजी हो बा। हम चौडा, गळी साँकडो मुपिरियरटी कम्पलैक्स जिसा होरण बीज बीरी चेतना घरती पर ऊग्या ही को हा नी सगळा नै एक डोर मे बाँध, लक्ष्य पर लाग्योडी ही बा।

बीरी जडा में एक नाहो सो चिडाखेतियो खडा हो, सगळा सूं पतळो अर निमळो। नाडा न्यारी न्यारी चिलकै अर बै ही इसी मुरदी अर महीन कै डाळा पर हाथ धर र दखया ही की ठा लागै। कै कोई भडमल अठ लडो है। माटी म मिलण सूं पाच मिण्ट पैला बा होळ सै बोल्यो, बैन मन हीं की सवा भूळा, हूं थारी काई मन्द करूं?

मीप बीं मानी देख र एकर अचरज म पडगी, साच्यो अँगूठो टिकै जिनो सो तो ग्रो भूप है, कन तो ग्रो जलम्यो अर कद ग्रो जवान हुयो, ठा ही का लागयोनी। काई मदद करमी ग्रो म्हारी फूँक रो मार ही पूरो को भलैनी, दिनरात पून रै सास साग ऊभो धूज बोकर आँगळी र भटकार सूं तदूरै री तात धूज ज्यूं। पण ई रै सोनै स ऊजळ विस्वास अर ई री अटूट आस्था पर तिरस्कार री हळकी सूं हळकी चोट करदी तो ग्रो मायरोमाँय भुमळीज र पूरा हुसी

मागै तो है घणों । बा बोली बीरा, थाँई मन्द करसी तूँ म्हारी चालतै घोरे रा पग थामण री पुरसाथ है थारै बूकियाँ म ?

धूजतो धूजतो आपरा ना हा नान्हा हाथ ऊँचा कर'र बो बोल्यो जरूर बन, पण ई साल तो म्हारी म्याद सबै पूरी हुई समझ अगल साल जे, ठाकुरजी इसी ही अनुकूलता राखी तो सै की कर स्यू , कह परो दखता दखता बो धूड म कठ ही अन्तीठ हुयो–तावड रा ली कपूर री ना ही डळी सी। सीप खडो देखती ही रही अवाक । बा बीर नेह अर निष्ठा पर अचम्भित ही पण बीरी छोटी ऊमर री समाधि पर गरी चिं तत ।

काळचक्र चालतो रह्यो । गर्मी आई आँधी शुरू हुई घोरो चाल्यो पण कीडी चाल । बिरखा हुई । सीप री दिस्टी घोर री ढाळ खानी गई बण देख्यो हजारा री सख्या मे विडी खेतिया इमी पुत्र सा ऊभा हवा साग हस अर धूज । घोर रा वार आप पर लेवण गोरखा सिपाही सा बडा कोडायता अर कृतसकल्प हा बै । एको'ह बहुस्याम सो करडो काम हो बींरो । सीप री खुसी रो अब पाँई पूछणो?

चौथ मान घोर पर अर बीर आस पास आक सिणिया झाड भँखाड अर बोठ बोभा आपरी जडा आछी तरै सूँ जमायली फेर बगो ही बठ, एक इसो बीड लाग्यो क घोरो मरणासन्न सो हू बींरी अणगिण जडा म गठिय र रोगी सो जकडीजग्यो ।

बधाई है बन एक दिन स समवेत स्वर सूँ बोल्या ।

"क्यांरी रे भाई लोगा ?" खींप मुळक'र बोली ।

"थारी जीत हुई है नी ?"

"म्हारी का आपा री रे ? जीत इकाई में नहीं हमेसा दळ में ही प्रतिष्ठित हुव अर बठै ही सोभै ।"

"इकाई मे हुया बेन कीनै ही घमण्ड हुज्यावे अर फेर बो घोर आळै दाँई माघो बण ज्यावै, ई खातर ?', धूजतो चिडी सेतियो बोल्यो ।

खींप री कळी कळी खिलगी । बा बोली 'चिडी सेतिया तू बावन भगवान सो है तो भला हीं विराट ना'हो, पण थारै विवेक रा पग विराट रै पगा सा है बेहद लाम्बा । जे हर इकाई यार सी सावधान अर साधनारत हुवै तो भापण जगळ रै ई राष्ट्र सामा मरव अर सहार जिसा रेगिस्तान सम्राट देखणा तो दूर आँख ही कोनी उठा सकनी ।'

'बैन जे त जिसी अस्तित्व री भजन्ता ही मागण्याव हुवै तो ।' भबक जमीन र चिप्योडो गरीब गठियो बोल्यो ।

पण गूंगा ! मजिल माग चाल जिकां नै ही मिल माग बताव जिकां नै नहीं, भापा सै साधक हा, सिद्धि साधना करै बीं री । भापां सै लाग्या रैया, घण जीत आपा ही जीतग्या भवै मै सुख बसो ।'

स राजी हू अस्त पून सागै नव नव ताळ नाचण लागग्या ।

× × ×

एक दिन जेठ री बळती पून में हरी भरी पसरी खीप बोली, "क्यों धोरामलजी किया ? सम्पत्ति तो बिया हीं भेळी है नी अर वधण रो इरादा बिलो ही ।'

'बन सम्पत्ति तो गई बैन अर इरादो बळग्यो ऊंडो, पण हूं भाधो हो बो बेळा, त म्हारी आंख्या खोलदी , दबी जबान सूं धोरो बोल्यो ।

देख थारी सम्पत्ति रो उपभोग करता कित्ता राजी है अ पर तूं सगळा म बँट र बिराट रो अनुगामी सो कित्तो महान् बणग्यो रे ।'

'बन सम्पत्ति बा ही काम री है जिकी समष्टि रो सुख चावै ।'

"अर समष्टि बा ही आछी जिकी हर फूल न बिवेक सू खिलण म मदद कर आपरी सौरभ बिरवैरै ।

'बन गुणमानूं थारो मगळमुखी है तूं जे तसी बेटयाँ रो बिस्तार धरती पर हुव तो निश्च ही धरा सुख री लैरा लेवती ऊँची उठै म्हारै सा कपूत हा कोरा भार बधाव धरती पर ।'

नही रे इसी काई बात है तूं ही म्हारो ही भाई है एक ही मावडी रा जाया हा आपा । म्हारो फुठरापो थारै सूं हीं है अर आपा दोना सूं ई धरती माता रो । ◆